राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

मार्च- 2026

मूल्य ₹ 50/-

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

www.swarnimumbai.com

मिडिल ईस्ट में त्राहिमाम!

फर्जी दिव्यांग प्रमाणपत्र घोटालाः ३१६ कर्मचारी निलंबित

परीक्षा का दबावः नंबर ज़रूरी या ज़िंदगी?

१२वीं एशियन इंडोर एथलेटिक्स चैंपियनशिप कीट डीम्ड विश्वविद्यालय ने जीते ३ पदक

SOFAS

Comfortable seating
you can share!

FROM ₹9,500

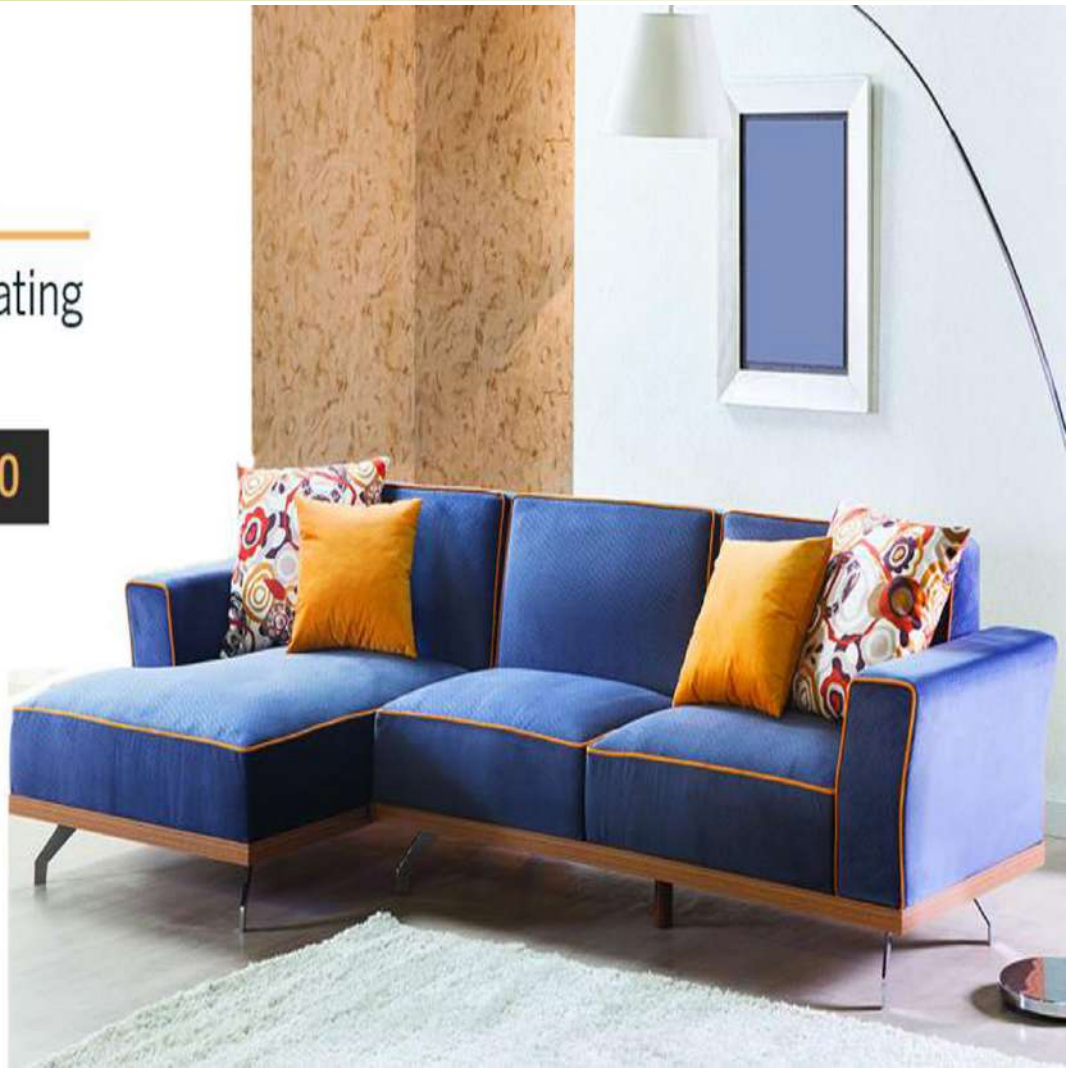

Wholesale Furniture Market
Ulhasnagar,Mumbai

सस्ते फर्नीचर के 5 थोक बाजार
फर्नीचर खरीदिए आधे दामों पर
एक से बढ़कर एक एंटीक आइटम

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

RNI NO.: MAHHIN-2014/55532

•वर्ष : 10 •अंक: 12 •मुंबई •मार्च-2026

मुद्रक-प्रकाशक,संपादक
नटराजन बालसुब्रमणियम

कार्यकारी संपादक
मंगला नटराजन अय्यर

उप संपादक
भाग्यश्री कानडे,
संतोषी मिश्रा, एन.निधी

ब्यूरो चीफ
ओडिशाः अशोक पाण्डेय
उत्तर प्रदेशः विजय दूबे
पटनाः राय यशेन्द्र प्रसाद

टंकन व पृष्ठ सज्जा
ज्योति पुजारी, सोमेश

मार्केटिंग मैनेजमेंट
राजेश अय्यर, शैफाली

संपादकीय कार्यालय

Add: Tirupati Ashish CHS., A-102, A-1 Wing , Near Shahad Station , Kalyan (W), Dist: Thane, PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in
Website: www.swarnimumbai.com

मालिक, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक : बी. नटराजन द्वारा तिरुपति को.ऑप, हॉसिंग सोसायटी, ए-१ विंग १०२, नियर शहाड स्टेशन, कल्याण (वेस्ट)-४२११०३, जिलाः ठाणे, महाराष्ट्र से प्रकाशित व *महेश प्रिन्टर्स, बिरला कॉलेज, कल्याण से मुद्रित।*
RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

सभी विवादों का निपटारा मुंबई न्यायालय होगा।

इस अंक में...

फर्जी दिव्यांग प्रमाणपत्र घोटालाः	05
इज़राइल-ईरान-अमेरिका संघर्ष	06
बिहार की राजनीति में एक बड़े युग का समापन	16
पकवान	18
परीक्षा का दबावः नंबर ज़रूरी या ज़िंदगी?	20
राशिफल	24
वायनाडः जहाँ जंगल बोलते हैं और शांति सुनाई देती है	26
सिनेमा	29
अमेजन के ग्लोबल लीगल हेड का कीट-कीस दौरा...	32
कीट डीम्ड विश्वविद्यालय ने २२वें स्थापना दिवस	33
२०२६ में कीट डीम्ड विश्वविद्यालय के छात्रों ने जीते ३ पदक	34
अपनी लीलाभूमि शंखक्षेत्र में लीलाधर भगवान जगन्नाथजी	35
'खामोशी के नोटिफिकेशन'	38
आवाज़	42
'फागुन आयो रे...	52
लौकी की खेती	56

सुविचार :

तरक्कियों की दौड़ में उसी का जोर चल गया,
बना के रास्ता जो भीड़ से निकल गया।

युद्ध की छाया में दुनिया

दुनिया के राजनीतिक मानचित्र में पश्चिम एशिया हमेशा से संवेदनशील क्षेत्र रहा है। यहाँ की घटनाएँ केवल क्षेत्रीय राजनीति तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि उनका प्रभाव पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था, सुरक्षा और कूटनीतिक समीकरणों पर पड़ता है। आज जिस तरह से Iran, Israel और United States के बीच तनाव लगातार बढ़ रहा है, उसने एक बार फिर यह प्रश्न खड़ा कर दिया है कि क्या दुनिया एक और बड़े युद्ध की ओर बढ़ रही है। यह संघर्ष केवल तीन देशों का विवाद नहीं है; इसके पीछे धार्मिक, राजनीतिक, सामरिक और आर्थिक हितों का जटिल जाल है, जिसने पूरे क्षेत्र को अस्थिरता की आग में झोंक दिया है। यदि इस संघर्ष की जड़ों को समझना हो तो हमें लगभग आधी सदी पीछे जाना होगा। १९७९ में ईरान में हुई इस्लामी क्रांति ने पश्चिम एशिया की राजनीति को पूरी तरह बदल दिया। शाह के शासन को हटाकर जब इस्लामी गणराज्य की स्थापना हुई, तब से ईरान की विदेश नीति में एक बड़ा बदलाव आया। इस नई व्यवस्था ने पश्चिमी देशों के प्रभाव का विरोध किया और इज़राइल को अपना प्रमुख शत्रु घोषित कर दिया।

दूसरी ओर इज़राइल, जो पहले ही अरब देशों के साथ कई युद्ध झेल चुका था, ईरान की इस नीति को अपने अस्तित्व के लिए खतरा मानने लगा। समय के साथ यह विरोध केवल राजनीतिक बयानबाज़ी तक सीमित नहीं रहा, बल्कि गुप्त सैन्य गतिविधियों और परोक्ष युद्धों तक पहुँच गया। इसी दौरान अमेरिका ने भी क्षेत्रीय राजनीति में अपनी भूमिका मजबूत की और इज़राइल का सबसे बड़ा समर्थक बनकर सामने आया। आज ईरान-इज़राइल तनाव का सबसे बड़ा कारण ईरान का परमाणु कार्यक्रम है। ईरान का दावा है कि उसका परमाणु कार्यक्रम ऊर्जा उत्पादन और वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए है, लेकिन इज़राइल और अमेरिका का मानना है कि इसके पीछे परमाणु हथियार बनाने की मंशा छिपी हुई है। इज़राइल की रणनीतिक सोच स्पष्ट है–यदि ईरान परमाणु हथियार प्राप्त कर लेता है, तो यह पूरे मध्य-पूर्व में शक्ति संतुलन को बदल देगा। यही कारण है कि इज़राइल समय-समय पर ईरान के परमाणु प्रतिष्ठानों को निशाना बनाने की रणनीति अपनाता रहा है। कई बार साइबर हमलों, गुप्त अभियानों और वैज्ञानिकों की रहस्यमय हत्याओं की घटनाएँ भी सामने आई हैं, जिन्हें अंतरराष्ट्रीय मीडिया ने इज़राइल की गुप्त कार्रवाई से जोड़ा है।

अमेरिका भी लंबे समय से ईरान के परमाणु कार्यक्रम को लेकर चिंतित रहा है। इस संदर्भ में २०१५ में एक महत्वपूर्ण समझौता हुआ था, जिसे Joint Comprehensive Plan of Action कहा जाता है। इस समझौते के तहत ईरान ने अपने परमाणु कार्यक्रम को सीमित करने का वादा किया था और बदले में उस पर लगे आर्थिक प्रतिबंधों में राहत दी गई थी। लेकिन बाद में अमेरिका के इस समझौते से अलग हो जाने के बाद स्थिति फिर से जटिल हो गई। ईरान और इज़राइल के बीच सीधा युद्ध अभी तक नहीं हुआ है, लेकिन दोनों देशों के बीच एक तरह का 'छाया युद्ध' लंबे समय से चलता रहा है। ईरान ने अपने प्रभाव को बढ़ाने के लिए कई संगठनों और समूहों को समर्थन दिया है। इनमें सबसे प्रमुख हैं Hezbollah और Hamas। ये संगठन इज़राइल के खिलाफ सक्रिय रहते हैं और कई बार सीमावर्ती क्षेत्रों में संघर्ष की स्थिति पैदा कर देते हैं। इसके जवाब में इज़राइल भी इन संगठनों के ठिकानों पर सैन्य कार्रवाई करता है। परिणामस्वरूप लेबनान, गाज़ा और सीरिया जैसे क्षेत्र इस संघर्ष के मुख्य युद्धक्षेत्र बन गए हैं।

यह प्रॉक्सी युद्ध केवल सैन्य कार्रवाई तक सीमित नहीं है। इसमें साइबर हमले, खुफिया गतिविधियाँ, आर्थिक प्रतिबंध और राजनीतिक दबाव जैसी रणनीतियाँ भी शामिल हैं। यही कारण है कि यह संघर्ष कभी पूरी तरह खत्म नहीं होता, बल्कि समय-समय पर नए रूप में सामने आता रहता है। इस पूरे समीकरण में अमेरिका की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। अमेरिका लंबे समय से इज़राइल का प्रमुख सहयोगी रहा है। सैन्य सहायता, आधुनिक हथियारों की आपूर्ति और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर राजनीतिक समर्थन–ये सभी इज़राइल को अमेरिका से प्राप्त होते हैं। अमेरिका की रणनीति केवल इज़राइल की सुरक्षा तक सीमित नहीं है। वह मध्य-पूर्व में अपनी सामरिक उपस्थिति बनाए रखना चाहता है, क्योंकि यह क्षेत्र ऊर्जा संसाधनों के कारण विश्व अर्थव्यवस्था के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसी कारण अमेरिकी नौसेना और वायुसेना की गतिविधियाँ इस क्षेत्र में लगातार बनी रहती हैं।

ईरान के खिलाफ अमेरिका ने कई आर्थिक प्रतिबंध भी लगाए हैं, जिनका उद्देश्य उसकी अर्थव्यवस्था को कमजोर करना और उसे परमाणु कार्यक्रम से पीछे हटने के लिए मजबूर करना है। लेकिन इन प्रतिबंधों का एक दूसरा प्रभाव भी हुआ है–ईरान ने अपने क्षेत्रीय सहयोगियों के साथ संबंध और मजबूत कर लिए हैं। पिछले कुछ वर्षों में पश्चिम एशिया की राजनीति में कई महत्वपूर्ण बदलाव हुए हैं। कई अरब देशों ने इज़राइल के साथ संबंध सामान्य करने की दिशा में कदम बढ़ाए हैं। इससे क्षेत्रीय समीकरण बदल गए हैं और ईरान खुद को एक तरह से घिरा हुआ महसूस करता है। दूसरी ओर ईरान ने भी अपनी रणनीति में बदलाव किया है। उसने इराक, सीरिया और लेबनान जैसे देशों में अपना प्रभाव बढ़ाने की कोशिश की है। इन क्षेत्रों में ईरान समर्थित समूहों की मौजूदगी ने इज़राइल की सुरक्षा चिंताओं को और बढ़ा दिया है। ईरान-इज़राइल-अमेरिका के बीच बढ़ता तनाव केवल राजनीतिक समस्या नहीं है, बल्कि इसका सीधा असर वैश्विक अर्थव्यवस्था पर भी पड़ता है। मध्य-पूर्व दुनिया के सबसे बड़े तेल उत्पादक क्षेत्रों में से एक है। यदि इस क्षेत्र में युद्ध की स्थिति पैदा होती है, तो तेल की आपूर्ति प्रभावित हो सकती है और अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमतें तेजी से बढ़ सकती हैं। तेल की कीमतों में बढ़ोतरी का असर लगभग हर देश की अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। परिवहन, उद्योग और बिजली उत्पादन जैसी गतिविधियाँ सीधे प्रभावित होती हैं। यही कारण है कि दुनिया के कई देश इस क्षेत्र में स्थिरता बनाए रखने के पक्ष में हैं।

भारत के दोनों देशों–ईरान और इज़राइल–के साथ घनिष्ठ संबंध हैं। इज़राइल भारत का महत्वपूर्ण रक्षा साझेदार है, जबकि ईरान ऊर्जा आपूर्ति और क्षेत्रीय कनेक्टिविटी के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत की एक बड़ी चिंता यह भी है कि पश्चिम एशिया में लाखों भारतीय काम करते हैं। यदि इस क्षेत्र में युद्ध छिड़ता है, तो उनकी सुरक्षा और वापसी एक बड़ी चुनौती बन सकती है। इसके अलावा भारत की ऊर्जा सुरक्षा भी इस संकट से प्रभावित हो सकती है। भारत की विदेश नीति की सबसे बड़ी चुनौती यही है कि वह दोनों देशों के साथ अपने संबंधों को संतुलित बनाए रखे। कूटनीतिक संतुलन बनाए रखना भारत के लिए आसान नहीं है, लेकिन अब तक उसने काफी हद तक इस संतुलन को कायम रखा है। हालाँकि स्थिति गंभीर है, लेकिन यह भी सच है कि अभी तक कोई भी पक्ष पूर्ण युद्ध नहीं चाहता। एक व्यापक युद्ध पूरे मध्य-पूर्व को अस्थिर कर सकता है और वैश्विक अर्थव्यवस्था को गहरा झटका दे सकता है। फिर भी खतरा पूरी तरह टला नहीं है। यदि किसी बड़ी सैन्य कार्रवाई या गलत अनुमान की वजह से तनाव अचानक बढ़ जाता है, तो यह संघर्ष नियंत्रण से बाहर जा सकता है। इतिहास बताता है कि कई बार युद्ध अचानक शुरू होते हैं और बाद में उन्हें रोकना बेहद कठिन हो जाता है। ■

-मंगला नटराजन

फर्जी दिव्यांग प्रमाणपत्र घोटाला: महाराष्ट्र में ३१६ सरकारी कर्मचारी निलंबित

महाराष्ट्र में फर्जी दिव्यांग प्रमाणपत्र के आधार पर सरकारी नौकरी पाने का बड़ा मामला सामने आया है। राज्य सरकार की जांच में अनियमितताएं मिलने के बाद ३१६ सरकारी अधिकारी और कर्मचारियों को निलंबित कर दिया गया है। यह कार्रवाई दिव्यांग श्रेणी में की गई नियुक्तियों की जांच के दौरान सामने आई गड़बड़ियों के बाद की गई है।मामला सामने आने के बाद राज्य सरकार ने सभी जिलों में दिव्यांग प्रमाणपत्रों की व्यापक जांच शुरू कर दी है। प्रारंभिक जांच में ही बड़ी संख्या में संदिग्ध प्रमाणपत्र मिलने से प्रशासनिक हलकों में हड़कंप मच गया है।

सरकारी जानकारी के अनुसार महाराष्ट्र के २८ जिलों में दिव्यांग कोटे में नियुक्त कर्मचारियों के प्रमाणपत्रों की जांच की जा रही है। उपलब्ध आंकड़ों के मुताबिक राज्य की विभिन्न जिला परिषदों और विभागों में दिव्यांग श्रेणी के तहत कुल १०,९२२ अधिकारी और कर्मचारी कार्यरत पाए गए हैं। इनमें से अब तक ६,२१८ मामलों की जांच पूरी हो चुकी है। जांच के दौरान यह पाया गया कि कई कर्मचारियों के पास मौजूद दिव्यांग प्रमाणपत्र या तो संदिग्ध हैं या फिर नियमों के अनुरूप नहीं हैं। जांच रिपोर्ट के आधार पर ३१६ कर्मचारियों को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया गया है, जबकि बाकी मामलों की जांच अभी जारी है। प्रारंभिक जांच में जिन अनियमितताओं का पता चला है, उनमें मुख्य रूप से तीन तरह की गड़बड़ियां सामने आई हैं–

1. **फर्जी या गलत तरीके से बनाए गए दिव्यांग प्रमाणपत्र**
2. **नियमों के अनुसार न्यूनतम ४० प्रतिशत दिव्यांगता न होने के बावजूद प्रमाणपत्र का उपयोग**
3. **नौकरी या पदोन्नति के लिए दिव्यांग कोटे का गलत लाभ लेना**

इन आरोपों के आधार पर संबंधित कर्मचारियों के खिलाफ विभागीय कार्रवाई शुरू कर दी गई है। यह मामला तब सुर्खियों में आया जब भाजपा विधायक Shrikant Bharatiya ने महाराष्ट्र विधानसभा में दिव्यांग श्रेणी में की गई नियुक्तियों को लेकर सवाल उठाया। इसके जवाब में राज्य के सामाजिक न्याय मंत्री Atul Save ने सदन में जानकारी दी कि राज्य सरकार ने इस मामले की जांच शुरू की है और जांच में गड़बड़ी पाए जाने पर ३१६ कर्मचारियों को निलंबित किया गया है। सरकारी अधिकारियों के अनुसार अभी लगभग ५ हजार से अधिक कर्मचारियों के प्रमाणपत्रों की जांच बाकी है। ऐसे में आशंका जताई जा रही है कि आने वाले दिनों में और भी संदिग्ध मामले सामने आ सकते हैं।

सरकार ने सभी जिलों को निर्देश दिया है कि दिव्यांग प्रमाणपत्रों की पूरी तरह से जांच की जाए और यदि कोई कर्मचारी फर्जी दस्तावेजों के आधार पर नौकरी करता पाया जाता है तो उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए। विशेषज्ञों का कहना है कि फर्जी दिव्यांग प्रमाणपत्र का इस्तेमाल केवल नियमों का उल्लंघन ही नहीं है, बल्कि इससे उन लोगों के अधिकार भी प्रभावित होते हैं जिन्हें वास्तव में सरकारी सुविधाओं और नौकरियों की जरूरत होती है। दिव्यांग श्रेणी का उद्देश्य समाज के कमजोर वर्ग को अवसर देना है, लेकिन यदि इस तरह के फर्जी प्रमाणपत्रों का उपयोग किया जाता है तो इससे व्यवस्था की विश्वसनीयता पर भी सवाल उठते हैं। दिव्यांग अधिकारों से जुड़े कानून Rights of Persons with Disabilities Act, 2016 के तहत फर्जी दिव्यांग प्रमाणपत्र बनवाने या उसका इस्तेमाल करने पर कड़ी सजा का प्रावधान है। दोषी पाए जाने पर जुर्माना और जेल दोनों की सजा हो सकती है।

सरकार का कहना है कि जांच पूरी होने के बाद दोषी पाए जाने वाले कर्मचारियों के खिलाफ विभागीय कार्रवाई के साथ-साथ कानूनी कार्रवाई भी की जा सकती है।

युद्ध, रणनीति और विश्व व्यवस्था

इज़राइल-ईरान-अमेरिका संघर्ष का असली चेहरा

जब मिसाइलें आसमान चीरती हैं, तो दुनिया इसे 'धार्मिक संघर्ष' कहकर समझना चाहती है। लेकिन यह सुविधा की भाषा है, सच्चाई नहीं। इज़राइल-ईरान-अमेरिका टकराव कोई अचानक पैदा हुई हिंसा नहीं, बल्कि दशकों से तैयार होती रणनीतिक विफलताओं, शक्ति संतुलन की राजनीति और संसाधनों पर नियंत्रण की लड़ाई का परिणाम है। यह युद्ध केवल सीमाओं पर नहीं लड़ा जा रहा, बल्कि तेल बाज़ार, कूटनीति, मीडिया और वैश्विक राजनीति के हर मंच पर जारी है। सवाल यह नहीं कि कौन सही है, सवाल यह है कि कौन ताकतवर बनेगा और कौन कीमत चुकाएगा।

अमेरिका-इजराइल और ईरान जंग के चौथे दिन अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा है कि ईरान बातचीत करना चाहता है, लेकिन अब इसके लिए बहुत देर हो चुकी है। ट्रम्प ने सोशल मीडिया पर पोस्ट करते हुए दावा किया कि ईरान का डिफेंस सिस्टम और लीडरशिप लगभग खत्म हो चुका है। ट्रम्प ने कहा कि ईरान की एयर डिफेंस, एयर फोर्स और नेवी तबाह हो चुकी है। हालांकि, इससे पहले रविवार को ट्रम्प ने कहा था कि वह ईरानी नेताओं से बातचीत के लिए तैयार हैं। इस बीच रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ईरान से बातचीत करेंगे। इसका मकसद मिडिल-ईस्ट देशों पर हो रहे हमलों को रोकना और बढ़ते तनाव को कम करना है। पुतिन सऊदी अरब के क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान और कतर के अमीर शेख तमीम बिन हमद अल थानी से फोन पर बातचीत कर चुके हैं। दोनों नेताओं ने संघर्ष के गंभीर परिणामों को लेकर चिंता जताई। जंग में ईरान का नुकसान...

४ दिन में ७८७ लोगों की मौत हो चुकी है।

१५३ शहरों को निशाना बनाया गया।

कुल ५०४ जगहों पर १,०३९ हमले हुए।

यह जानकारी ईरानियन रेड क्रिसेंट सोसाइटी ने दी है।

संघर्ष की जड़ः डर, वर्चस्व और परमाणु छाया

इस पूरे टकराव की धुरी है – ईरान का परमाणु कार्यक्रम। इज़राइल को डर है कि अगर ईरान परमाणु शक्ति बन गया, तो वह पूरे मध्य पूर्व में सैन्य और राजनीतिक संतुलन बदल देगा। यह डर केवल सुरक्षा का नहीं, बल्कि क्षेत्रीय वर्चस्व खोने का डर है। इज़राइल की नीति हमेशा से रही हैः 'दुश्मन को इतना मजबूत मत होने दो कि वह बराबरी पर आ जाए।' इसी नीति के तहत उसने पहले इराक और सीरिया के परमाणु ठिकानों पर हमले किए और अब वही पैटर्न ईरान पर लागू हो रहा है।

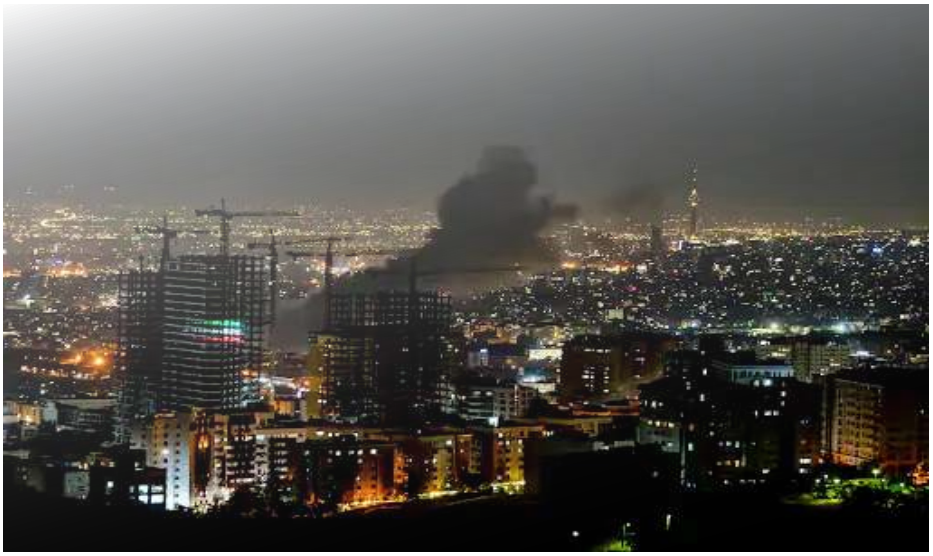

१. ईरान में २०० की मौत, ७४० घायल
२. सऊदी की रिफायनरी कंपनी में ड्रोन हमले से आग लगी
३. ईरान में चीनी नागरिक की हत्या
४. ईरान ने सऊदी अरब में अरामको की रिफाइनरी पर हमला किया
५. ब्रिटेन मिडिल ईस्ट से अपने ३ लाख लोगों को निकालेगा
६. इजराइल और अमेरिका ने इराक में मिसाइल हमला किया
७. मिडिल ईस्ट में ओमान के पास तेल टैंकर पर हमला
८. ईरान-इजराइल जंग के कारण ३ हजार उड़ानें रद्द
९. कुवैत में लोगों को अमेरिकी दूतावास जाने की मनाही
१०. ईरान ने मिडिल ईस्ट में हमले तेज किए
११. हमलों में ईरान की टॉप लीडरशिप खत्म
१२. ईरान बोला- अमेरिका से कोई बातचीत नहीं करेंगे
१३. ट्रम्प बोले- ईरान के साथ जंग ५ हफ्ते तक चल सकती है

दूसरी ओर ईरान खुद को अमेरिकी दबाव और प्रतिबंधों का शिकार मानता है। उसके लिए परमाणु कार्यक्रम सिर्फ हथियार नहीं, बल्कि राजनीतिक सम्मान और प्रतिरोध का प्रतीक है। यह टकराव किसी एक मिसाइल से शुरू नहीं हुआ, बल्कि वर्षों की अविश्वास की खेती से पैदा हुआ है।

तीन देशों की तीन रणनीतियाँ

इज़राइल

इज़राइल की रणनीति आक्रामक और स्पष्ट है।

ईरान को सैन्य रूप से कमजोर करना।

उसके प्रॉक्सी नेटवर्क (हिज़्बुल्लाह, हमास) को काटना।

अमेरिका को खुलकर युद्ध में खींचना

इज़राइल जानता है कि वह अकेले लंबे युद्ध में टिक नहीं सकता। उसकी ताकत तकनीक में है, संख्या में नहीं। इसलिए उसका मॉडल है –

तेज़ हमला, सीमित समय, अधिकतम नुकसान। यह 'आत्मरक्षा' से ज़्यादा पूर्व-आक्रमण (Pre-emptive War) की रणनीति है।

ईरान

ईरान सीधा युद्ध नहीं चाहता, क्योंकि उसकी अर्थव्यवस्था पहले ही प्रतिबंधों से जर्जर है।

उसकी रणनीति हैः

अपने सहयोगी गुटों से युद्ध लड़वाना।

इज़राइल और अमेरिका को कई मोर्चों पर उलझाना।

खुद को 'इस्लामी दुनिया का प्रतिरोधी नेता' साबित करना। ईरान की सबसे बड़ी कमजोरी अंदरूनी है – युद्ध जितना लंबा चलेगा, उतना ही घरेलू असंतोष बढ़ेगा।

अमेरिका

अमेरिका का लक्ष्य भावनात्मक नहीं, रणनीतिक हैः

तेल मार्ग सुरक्षित रखना।

इज़राइल को गिरने न देना।

रूस और चीन को मध्य पूर्व में पैर जमाने से रोकना।

अमेरिका युद्ध नहीं चाहता, लेकिन पीछे हट भी नहीं सकता।

कमज़ोरी दिखी तो उसकी वैश्विक नेतृत्व छवि टूटेगी।

यह युद्ध अमेरिका के लिए एक दुविधा है – लड़ो तो आलोचना, न लड़ो तो प्रभुत्व खत्म।

क्षेत्रीय विस्फोटः पूरा मध्य पूर्व मैदान बनता हुआ

अब यह संघर्ष सिर्फ तीन देशों तक सीमित नहीं रहा।

हिज़्बुल्लाह

लेबनान से इज़राइल पर हमले दूसरे मोर्चे खोल रहे हैं।

इसका मतलब हैः

नागरिक इलाकों में लड़ाई

मानवीय संकट

शरणार्थियों की नई लहर

सऊदी अरब

सऊदी अरब खुले तौर पर इज़राइल का समर्थन नहीं करेगा, लेकिन ईरान को कमजोर देखना उसके रणनीतिक हित में है।

तेल उत्पादन और कीमतें उसका सबसे बड़ा हथियार हैं।

होरमुज़ जलडमरूमध्य

यह समुद्री रास्ता दुनिया के लगभग ३०% तेल व्यापार को संभालता है।

अगर ईरान इसे बाधित करता है, तो यह सिर्फ युद्ध नहीं बल्कि वैश्विक आर्थिक झटका होगा।

यहां से गुजरता हर टैंकर अब राजनीतिक संदेश बन चुका है।

भारत पर सीधा असर

भारत इस युद्ध का दर्शक नहीं है। वह इसका आर्थिक और कूटनीतिक भागीदार बन चुका है।

ऊर्जा संकट

भारत अपनी ज़रूरत का लगभग ८५% तेल आयात करता है। युद्ध लंबा चला तो

पेट्रोल-डीज़ल महंगे

महंगाई बढ़ेगी

औद्योगिक लागत बढ़ेगी

आम आदमी पर बोझ

प्रवासी भारतीय

मध्य पूर्व में लगभग ९० लाख भारतीय काम करते हैं। युद्ध बढ़ा तो

निकासी अभियान

अरबों रुपये का खर्च

रोजगार संकट

कूटनीति का संकट

भारत के रिश्ते एक साथ कई पक्षों से हैंः

इज़राइल से रक्षा सहयोग

ईरान से चाबहार बंदरगाह

अमेरिका से रणनीतिक गठबंधन

अरब देशों से ऊर्जा निर्भरता

इसका मतलब है –

भारत किसी एक का पक्ष नहीं ले सकता।

गलत बयान मतलब बहुस्तरीय नुकसान।

आगे का रास्ताः तीन संभावनाएँ

विकल्प १ः सीमित युद्ध (सबसे संभावित)

कुछ हफ्तों की बमबारी, फिर बैकडोर समझौता। तनाव रहेगा, लेकिन विस्फोट रुकेगा।

विकल्प २ः क्षेत्रीय युद्ध

लेबनान, सीरिया, यमन शामिल होंगे।

तेल $१५० प्रति बैरल पार करेगा।

दुनिया आर्थिक मंदी में जाएगी।

विकल्प ३ः वैश्विक ध्रुवीकरण

अमेरिका बनाम ईरान, रूस-चीन का परोक्ष समर्थन। दुनिया फिर से दो खेमों में बंटेगी।

यह युद्ध धर्म का नहीं, शक्ति का है। कोई भी पक्ष नैतिक नहीं है – सभी अपने हित के लिए लड़ रहे हैं। आम नागरिक मरेंगे, नेता बयान देंगे। वैश्विक अर्थव्यवस्था इसकी सबसे बड़ी शिकार बनेगी। भारत को भावनात्मक नहीं, व्यावहारिक नीति अपनानी होगी। यह संघर्ष हमें याद दिलाता है कि आधुनिक युद्ध अब केवल हथियारों से नहीं, बल्कि तेल, तकनीक, कूटनीति और प्रचार से लड़ा जाता है। इज़राइल-ईरान-अमेरिका टकराव एक युद्ध नहीं, बल्कि एक चेतावनी है कि दुनिया फिर से ऐसे दौर में प्रवेश कर रही है जहाँ शांति नहीं, संतुलन बचाने की लड़ाई होगी और इस लड़ाई में सबसे पहले मरते हैं – सच्चाई, आम लोग और स्थिरता।

सऊदी अरामको दुनिया की सबसे बड़ी तेल और गैस कंपनियों में से एक है। यह सऊदी अरब सरकार के स्वामित्व में है। इसकी स्थापना १९३३ में अमेरिकी कंपनियों के साथ समझौते के तहत हुई थी। १९८० में यह पूरी तरह सऊदी सरकार के नियंत्रण में आ गई। कंपनी का मुख्यालय धहरान में स्थित है। अरामको के पास दुनिया के सबसे बड़े तेल भंडारों में से एक है और यह प्रतिदिन लाखों बैरल कच्चे तेल का उत्पादन करती है, जिससे यह वैश्विक ऊर्जा बाजार की प्रमुख आपूर्तिकर्ता बन गई है। सऊदी अरब की अर्थव्यवस्था काफी हद तक इसी कंपनी की आय पर निर्भर करती है। अरामको केवल कच्चे तेल का उत्पादन ही नहीं करती, बल्कि रिफाइनिंग, पेट्रोकेमिकल्स और प्राकृतिक गैस के क्षेत्र में भी सक्रिय है।इसके नियंत्रण में दुनिया का सबसे बड़ा पारंपरिक तेल क्षेत्र, गवार, भी आता है। २०१९ में कंपनी ने शेयर बाजार में अपना आईपीओ लॉन्च किया, जिसे इतिहास का सबसे बड़ा आईपीओ माना गया। हाल के वर्षों में अरामको रिन्यूबल एनर्जी, हाइड्रोजन और कार्बन कैप्चर जैसी तकनीकों में निवेश बढ़ा रही है।

ईरान का इजराइल समेत 9 देशों पर हमला

साभारः दै. भास्कर

क्र.	देश	शहर / स्थान
1	संयुक्त अरब अमीरात (UAE)	अबू धाबी, दुबई
2	सऊदी अरब	रियाद
3	कतर	दोहा
4	कुवैत	कुवैत सिटी
5	जॉर्डन	मुवाफ्फाक सल्ती एयर बेस
6	बहरीन	मनामा
7	इजराइल	तेल अवीव
8	इराक	बगदाद
9	सीरिया	स्वेदा

प्रदर्शन करने वालो पर कार्रवाई करेगी ईरानी सेना

न्यूयॉर्क टाइम्स के मुताबिक ईरान में लोगों को रविवार सुबह रिवोल्यूशनरी गाड्र्स नंबर से टेक्स्ट मैसेज भेजे गए। इसमें उन्हें सड़कों पर उतरकर प्रदर्शन करने से मना किया गया। मैसेज में लिखा था, 'कोई भी ऐसा कदम जो सुरक्षा व्यवस्था में परेशानी पैदा करेगा, उसे दुश्मन की मदद करना माना जाएगा। ऐसे लोगों के खिलाफ रिवोल्यूशनरी गाड्र्स की खुफिया विंग सख्त कार्रवाई करेगी।' इजराइली सेना ने लोगों को जबरन अपना इलाका छोड़ने का आदेश दिया है। इसके बाद सैकड़ों हजार लोग आज सुबह अपने घर छोड़कर निकल रहे हैं। यह सिर्फ दक्षिणी लेबनान में ही नहीं, बल्कि राजधानी बेरूत में भी हो रहा है।

बेरूत के दहियाह में लाखों लोग रहते हैं। लोग जितना सामान साथ ले जा सकते हैं, उतना पैक कर रहे हैं और उन्हें जो जगह सुरक्षित लग रही है, वहां जाने की कोशिश कर रहे हैं। दहियाह को हिज्बुल्लाह का गढ़ माना जाता है। २०२४ के आखिरी युद्ध के दौरान इस इलाके पर कई बार हमला हुआ था और उसके बाद भी कई बार हमले हुए। उस साल नवंबर में युद्धविराम (सीजफायर) हुआ था। इजराइल पर आरोप है कि उसने समझौते का पालन नहीं किया और हमले जारी रखे। इजराइल का कहना है कि हिज्बुल्लाह फिर से हथियार जुटा रहा है और लेबनानी सरकार उसे रोकने के लिए पर्याप्त कदम नहीं उठा रही। इस समय वहां हालात बेहद अफरा-तफरी वाले हैं। ऊपर से रमजान का महीना चल रहा है, जब लोग दिन में रोजी रखते हैं। आज लोगों को रोजा शुरू करने से पहले सहरी करनी थी, लेकिन वे अपने घर छोड़कर सुरक्षित जगह तलाशने में लगे हुए हैं।

जराइल-अमेरिका और ईरान जंग का आज तीसरा दिन है। इस बीच ईरान ने सऊदी अरब की बड़ी तेल रिफाइनरी रास तनूरा पर हमला किया है। यह रिफाइनरी सऊदी की सरकारी तेल कंपनी सऊदी अरामको की है। रॉयटर्स के मुताबिक रिफाइनरी हमले के बाद बंद कर दी गई। इसकी क्षमता लगभग ५.५ से ६ लाख बैरल प्रतिदिन के आसपास मानी जाती है। ऑयल एक्सपोर्ट टर्मिनल रास तनूरा दुनिया के सबसे बड़े ऑफशोर ऑयल लोडिंग टर्मिनलों में से एक है। यहां से बड़े तेल टैंकरों में कच्चा तेल भरकर अमेरिका, एशिया और यूरोप समेत कई देशों को भेजा जाता है।

वहीं, ईरान के टॉप नेशनल सिक्योरिटी अधिकारी अली लारीजानी ने सोमवार को कहा कि ईरान अमेरिका से कोई बातचीत नहीं करेगा। यह बयान उन खबरों के जवाब में आया है, जिनमें कहा गया था कि ईरान ने अमेरिका से फिर से बातचीत शुरू करने की कोशिश की है।

ईरान ने आज इजराइल के अलावा कतर, बहरीन और संयुक्त अरब अमीरात में हमले फिर शुरू कर दिए हैं। दूसरी ओर इस जंग में अब लेबनान का उग्रवादी संगठन हिजबुल्लाह भी शामिल हो गया है। उसने इजराइल में कई जगहों पर बमबारी की है। हिजबुल्लाह को ईरान से समर्थन मिलता है, अब उसका कहना है कि वह खामेनेई की मौत का बदला ले रहा है।

ईरान ने सऊदी अरब की बड़ी तेल रिफाइनरी रास तनूरा पर हमला किया है। यहां हमले के बाद धुंआ उठता नजर आया।

अल-जजीरा की रिपोर्ट के मुताबिक, अमेरिका और इजराइल ने मिलकर अब तक ईरान के १००० से ज्यादा ठिकानों पर हमले किए हैं। इस दौरान शुरुआती ३० घंटे में २००० से ज्यादा बम गिराए गए। इनमें अब तक २०० से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि ७४० से ज्यादा लोग घायल हुए हैं। एक स्कूल पर मिसाइल गिरने से १८० छात्राओं की मौत हो गई और ४५ घायल हैं। २८ फरवरी को शुरू हुई इस लड़ाई के पहले दिन हुई बमबारी में ईरानी सुप्रीम लीडर अयातुल्ला अली खामेनेई मारे गए थे। इसके अलावा रविवार को ३ अमेरिकी सैनिक मारे गए थे।

१. ईरान के सनंदज शहर पर हमला हुआ है। इसमें दो लोग मारे गए हैं।
२. कुवैत में अमेरिका का फाइटर जेट क्रैश हो गया।
३. इजराइल ने रविवार को रातभर ईरान की राजधानी तेहरान में हवाई हमले किए।
४. इजराइल के यरुशलम में ईरानी

मिसाइल के हमले से भारी तबाही हुई। तस्वीर में मलबे में दबी कार नजर आ रही है।

५. तेल अवीव में हुए ईरानी मिसाइल हमले के स्थल का दौरा किया राष्ट्रपति इसहाक हर्जोग ने।

६. इजराइली सेना IDF ने तेहरान में हमले का फुटेज जारी किया है। इसमें ईरान के रक्षा मुख्यालय समेत कई सरकारी इमारतों को निशाना बनाया गया था।

कुवैत के रक्षा मंत्रालय के प्रवक्ता ने बताया कि आज सुबह कई अमेरिकी सैन्य विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गए। हालांकि, सभी क्रू मेंबर सुरक्षित हैं। उन्हें तुरंत रेस्क्यू करके हॉस्पिटल भेजा गया है। डॉक्टरों की टीम उनकी जांच कर रही है। अधिकारियों ने कहा कि इस मामले में अमेरिकी सेना से बात की गई है और मिलकर जरूरी कदम उठाए गए हैं। हादसे की वजह पता करने के लिए जांच चल रही है।

ईरान के दक्षिणी इलाके फार्स प्रांत में अमेरिका और इजराइल के हमलों में ३५ लोगों की मौत। हमलों में कई लोग घायल भी हुए हैं और कुछ इमारतों को नुकसान पहुंचा है।

ईरानी रेड क्रिसेंट सोसाइटी ने बताया है कि ईरान में अमेरिका और इजराइल के हमलों में ५५५ लोगों की मौत हो गई है।

रिपोर्ट के मुताबिक यह सऊदी की कंपनी अरामको की रिफायनरी में आग ईरान ड्रोन हमले से लगी है। कंपनी ने कहा है कि एहतियाती कदम उठाए गए हैं और हालात पूरी तरह कंट्रोल में हैं। फिलहाल आग पर काबू पा लिया गया है।

चीन के विदेश मंत्रालय ने बताया कि ईरान के तेहरान में एक चीनी नागरिक की हत्या कर दी गई है। सऊदी अरब की सबसे बड़ी तेल कंपनी 'अरामको' की रिफाइनरी पर ईरान ने अटैक किया है। रॉयटर्स की रिपोर्ट के मुताबिक, सऊदी अरब की सरकारी तेल कंपनी अरामको ने ड्रोन हमलों के बाद सोमवार को अपनी रास तनुरा तेल रिफाइनरी बंद कर दी। रिपोर्ट के मुताबिक, बंद होने की खबरों से ब्रेंट क्रूड ऑयल की कीमतें ९.३२% बढ़ गई हैं।

ब्रिटेन अपने नागरिकों को मिडिल ईस्ट से निकालने की तैयारी कर रहा है। ब्रिटेन की विदेश मंत्री यवेट कूपर ने कहा कि करीब ३ लाख लोगों ने बताया है कि वे इस इलाके में मौजूद हैं। सरकार अलग-अलग तरीकों पर काम कर रही है। अगर जरूरत पड़ी तो सरकार खुद लोगों को सुरक्षित बाहर निकालेगी। ब्रिटेन ट्रैवल कंपनियों के साथ मिलकर काम कर रहा है और चाहता है कि हवाई रास्ता जल्द से जल्द खुले, ताकि लोग सुरक्षित घर लौट सकें।

इजराइल और अमेरिका ने इराक की राजधानी बगदाद में मिसाइल हमला किया है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक यहां जुर्फ अल-सखर इलाके में ईरान समर्थक उग्रवादी संगठन हिज्बुल्लाह के ठिकानों को निशाना बनाया है। हमले में कई इमारतों, वाहनों और गोदामों को भारी नुकसान पहुंचा है और आग लग गई। हालांकि अभी तक किसी के मारे जाने या घायल होने की खबर नहीं है।

मिडिल ईस्ट में तनाव बढ़ने के कारण हॉर्मुज स्ट्रैट में जहाजों के लिए खतरा बढ़ गया है। ओमान के पास 'स्काई लाइट' नाम के एक तेल टैंकर पर हमला हुआ है। यह रास्ता दुनिया में तेल सप्लाई के लिए बहुत जरूरी है। यहां बढ़ते खतरे की वजह से जर्मनी की शिपिंग कंपनी हैपैग-लॉयड ने इस रास्ते से अपने जहाजों का ट्रांसपोर्ट रोक दिया है।

कुवैत में मौजूद अमेरिकी दूतावास ने लोगों से कहा है कि वे दूतावास न आएं। दूतावास ने कहा है कि लोग अपने घर में ही रहें और खिड़कियों से दूर रहें। बाहर बिल्कुल न निकलें। कुवैत में रह रहे अमेरिकी नागरिकों से भी सतर्क रहने को कहा गया है। दूतावास का स्टाफ भी इस समय सुरक्षित जगह पर ही है। इससे पहले दूतावास के पास धुआं उठता हुआ देखा गया था।

ईरान ने जवाब में इजराइल समेत मिडिल-ईस्ट के ४ देशों पर ड्रोन और मिसाइल हमले शुरू किए हैं। इससे पहले उसने कतर, कुवैत, जॉर्डन, बहरीन, सऊदी अरब व UAE में मौजूद अमेरिकी ठिकानों को भी निशाना बनाया था। UAE के सबसे ज्यादा आबादी वाले शहर दुबई के पाम होटल एंड रिसोर्ट और बुर्ज खलीफा के पास ड्रोन हमला किया था।

ईरान ने मिडिल ईस्ट में हमले तेज कर दिए हैं। मिसाइल हमले की चेतावनी के बाद यरुशलम के ऊपर विस्फोटों की आवाजें सुनी गई हैं ।

समाचार एजेंसी की रिपोर्टों के अनुसार,

JOB VACANCY

ADVERTISING & SALES EXECUTIVE

PRINT & DIGITAL MAGAZINE

Location: Mumbal (Field + Office)

Employment Type: Full-time / Part-time

ROLE & RESPONSIBILITIES

- Identify and approach potential advertisers across sectors (corpotates, SMEs, Government, Institutions)
- Present advertising options and packages for the magazine (print & digital)
- Maintain strongrelationships with existing and new clients to ensure repeat business

SALARY & BENEFITS

- Base salary- high commission structure
- Potential earnings ₹40,000–50.000/mont for achieving targets
- Performance-based incentives and bonuses

HOW TO APPLY:

Send a **swarnim mmbai@yahoo.in**

To: **9082391833**

SWARNIM MUMBAI

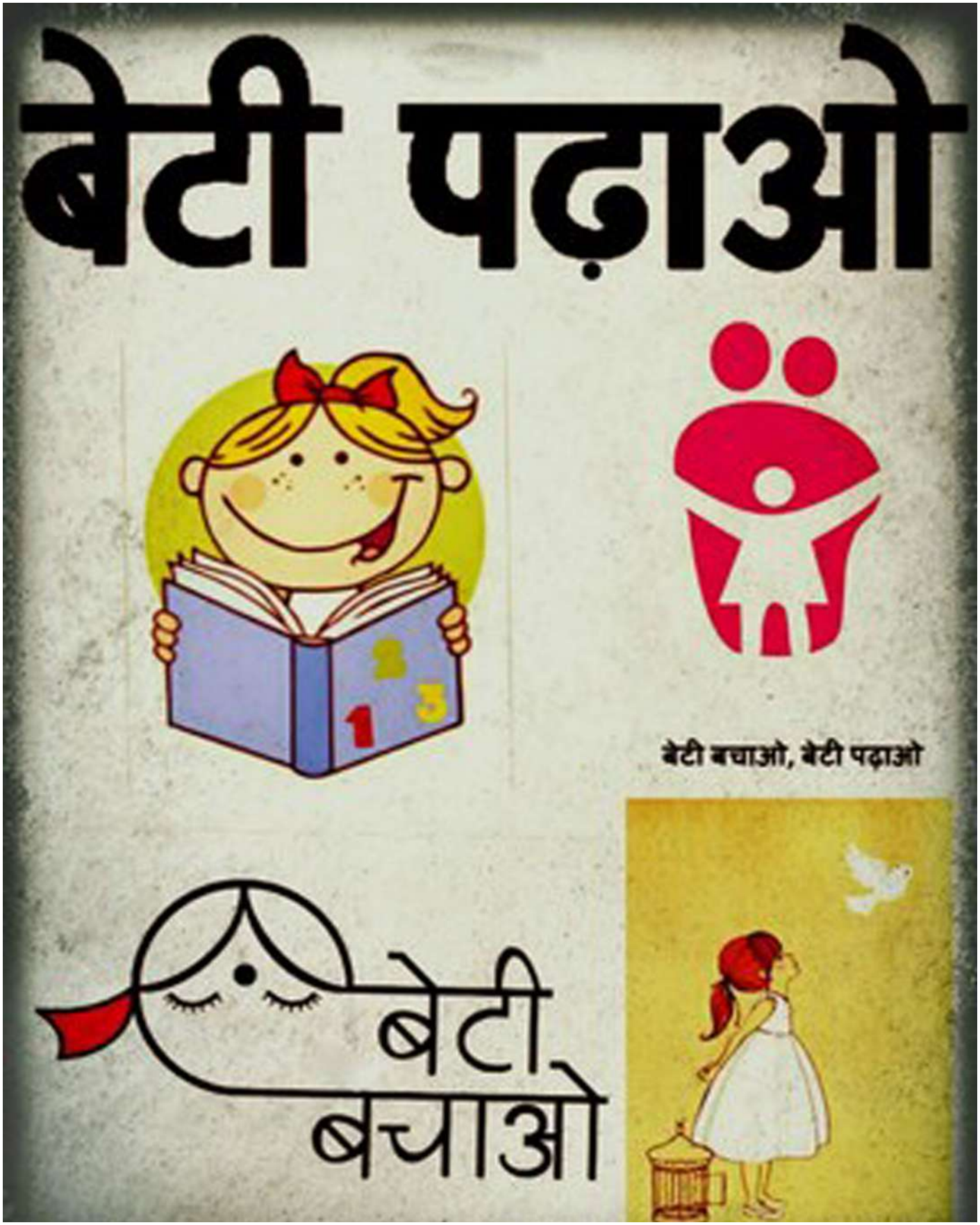
बेटी पढ़ाओ
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ
बेटी
बचाओ

संयुक्त अरब अमीरात के दुबई , कतर के दोहा और बहरीन के मनामा में भी धमाकों की आवाजें सुनी गईं। ईरान की समाचार एजेंसी फार्स के अनुसार, सनंदज शहर पर हुए हमले में कम से कम दो लोग मारे गए हैं। इसमें कहा गया है कि शहर को दुश्मन की मिसाइलों से निशाना बनाया गया और शहर के पुलिस स्टेशन के बगल में स्थित कई आवासीय इमारतें नष्ट हो गईं।

खामेनेई के बेटे बन सकते हैं ईरान के नए सुप्रीम लीडर

ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अराघची ने कहा है कि देश में एक-दो दिन के भीतर नए सुप्रीम लीडर का चयन हो सकता है। ईरान की सरकारी मीडिया 'फार्स' समेत कई मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक उनके बेटे मुजतबा खामेनेई इस पद पर चुने जा सकते हैं। उन्हें पिछले २ साल से सुप्रीम लीडर बनाने की तैयारी चल रही थी। खामेनेई ने अपने दूसरे बेटे मुजतबा खामेनेई को साल २०२४ में उत्तराधिकारी बनाया था। हालांकि इसकी आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई थी। रिपोर्ट्स के मुताबिक ईरान की एक्सपर्ट असेंबली ने २६ सितंबर २०२४ को ही नए सुप्रीम लीडर का चुनाव कर लिया था। खामेनेई ने असेंबली के ६० सदस्यों को बुलाकर गोपनीय तरीके से उत्तराधिकारी पर फैसला लेने कहा था। खामेनेई की मौत के बाद अब मुजतबा सार्वजनिक रूप से सुप्रीम लीडर के दावेदार के तौर पर सामने आ सकते हैं।

समाचार एजेंसी रॉयटर्स के अनुसार, अमेरिकी सांसदों ने संसद को बताया कि इस बात के कोई संकेत नहीं थे कि ईरान ने अमेरिका पर हमला करने की योजना बनाई थी। रॉयटर्स के अनुसार, पेंटागन के अधिकारियों ने बंद दरवाजों के पीछे हुई ब्रीफिंग में संसद के कर्मचारियों को बताया कि ईरान की बैलिस्टिक मिसाइलें और प्रॉक्सी सेनाएं अमेरिकी हितों के लिए एक खतरा पैदा करती हैं। उन्होंने स्वीकार किया कि ऐसी कोई खुफिया जानकारी नहीं थी जो यह संकेत देती हो कि तेहरान ने पहले अमेरिकी सेना पर हमला करने की योजना बनाई थी। इस रिपोर्ट में ट्रम्प प्रशासन के अधिकारियों के उन दावों पर संदेह जताया गया है, जिसमें तेहरान के अमेरिकी सेना पर हमला करने की जानकारी थी। ईरान के टॉप

अमेरिका और इजराइल के ईरान पर किए गए हमलों की वजह से दुनिया भर की हवाई यात्रा बुरी तरह प्रभावित हो गई है। सोमवार को भी सैकड़ों उड़ानें रद्द कर दी गईं। इससे लाखों यात्री अलग-अलग देशों में फंसे हुए हैं। रिपोर्ट के अनुसार, एयरलाइनों के शेयरों में भी गिरावट आई है। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प ने संकेत दिया है कि अमेरिका की सैन्य कार्रवाई चार से पांच हफ्ते तक चल सकती है। इससे हवाई यात्रा में अनिश्चितता और बढ़ गई है।

मिडिल ईस्ट के कई बड़े हवाई अड्डे बंद हैं। खासकर दुबई इंटरनेशनल एयरलाइन, जो दुनिया का सबसे व्यस्त अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा माना जाता है, लगातार तीसरे दिन भी बंद रहा। यह स्थिति कोविड-१९ महामारी के बाद सबसे बड़ा हवाई संकट मानी जा रही है। मिडिल ईस्ट के ऊपर से उड़ानें रद्द होने के कारण हजारों सेवाएं प्रभावित हुई हैं। कई अंतरराष्ट्रीय एयरलाइनों ने अपनी उड़ानें अस्थायी रूप से रोक दी हैं। सोमवार सुबह तक १,२३९ उड़ानें पहले ही रद्द हो चुकी थीं। दुबई की एमिरेट्स अबू धाबी की एतिहाद एयरवेज और दोहा की कतर एयरवेज ने मिलकर सैकड़ों उड़ानें रद्द की हैं। फ्लाइट ट्रैकिंग प्लेटफॉर्म फ्लाइट के अनुसार, शनिवार को लगभग २,८०० उड़ानें और रविवार को ३,१५६ उड़ानें रद्द की गईं।

नेशनल सिक्योरिटी अधिकारी अली लारीजानी ने कहा है कि ईरान अमेरिका से कोई बातचीत नहीं करेगा। उन्होंने यह बयान सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म X पर दिया। यह बयान उन खबरों के जवाब में आया है, जिनमें कहा गया था कि ईरान ने अमेरिका से फिर से बातचीत शुरू करने की कोशिश की है।

लारिजानी ने ट्रम्प पर तंज करते हुए कहा कि उन्होंने अपने 'झूठे वादों' से पूरे क्षेत्र को अस्थिर कर दिया है और अब अमेरिकी सैनिकों की मौत को लेकर परेशान हैं। उन्होंने यह भी कहा कि ट्रम्प ने अपने नारे 'अमेरिका फर्स्ट' को 'इजराइल फर्स्ट' में बदल दिया है और इजराइल की ताकत बढ़ाने के लिए अमेरिकी सैनिकों की कुर्बानी दी है। कुवैत की सेना ने सोमवार सुबह राजधानी की तरफ आ रहे कई दुश्मन ड्रोन को गिरा दिया।

सेना के अधिकारी मोहम्मद अल-मंसूरी ने बताया कि ये ड्रोन कुवैत सिटी के पास सलवा और हवाली इलाकों की ओर बढ़ रहे थे। एयर डिफेंस सिस्टम ने समय रहते उन्हें रोक दिया। उन्होंने कहा कि इस घटना में कोई घायल नहीं हुआ और देश में हालात पूरी तरह सामान्य हैं। अधिकारियों ने यह नहीं बताया कि ड्रोन किस

देश से भेजे गए थे। हालांकि हाल में ईरान ने खाड़ी के कुछ देशों पर ड्रोन और मिसाइल हमले किए हैं। ट्रम्प ने कहा है कि ईरान के साथ चल रही लड़ाई ५ हफ्ते तक चल सकती है। पहले उन्होंने कहा था कि जंग करीब चार हफ्ते चलेगी। अब उनका कहना है कि यह चार या पांच हफ्ते चल सकती है।

ट्रम्प ने बताया कि अमेरिका ने ईरान में मौजूदा लीडरशिप की जगह लेने वाले कुछ लोगों को टागरेट किया था। ऑपरेशन एपिक फ्यूरी के पहले दो दिनों में ही वे सभी मारे गए। लेबनान के राष्ट्रपति जोसेफ औन ने इजराइल और हिज्बुल्लाह दोनों पर नाराजगी जताई है। उन्होंने कहा कि लेबनान की जमीन से हिज्बुल्लाह का इजराइल पर हमले करना ठीक नहीं है। इससे लेबनान को बड़े युद्ध में घसीटा जा सकता है। राष्ट्रपति ने इजराइल के लेबनान पर हमलों की भी आलोचना की और कहा कि यह गलत है। उन्होंने साफ कहा कि लेबनान को ऐसे किसी भी युद्ध का हिस्सा नहीं बनना चाहिए, जिसका उससे सीधा मलतब नहीं है। अगर ऐसा हुआ, तो देश को बड़ा नुकसान हो सकता है।

भारत से लौट रहे ईरानी युद्धपोत पर अमेरिका का हमलाः श्रीलंका के पास डूबा; ३२ सैनिकों का रेस्क्यू , करीब १५० लापता

अमेरिका-इजराइल और ईरान जंग का आज पांचवां दिन है। रॉयटर्स की रिपोर्ट के मुताबिक अमेरिका ने श्रीलंका के तट के पास एक ईरानी युद्धपोत IRIS देना पर पनडुब्बी से हमला किया। इसमें कई लोगों के मारे जाने की खबर है। श्रीलंका नेवी के मुताबिक जहाज से कई शव बरामद हुए हैं। हमले में ३२ सैनिक घायल हैं, जिन्हें रेस्क्यू किया गया है। जहाज पर लगभग १८० नौसैनिक सवार थे। लापता लोगों की तलाश के लिए सर्च और रेस्क्यू ऑपरेशन जारी है। यह ईरानी युद्धपोत पिछले महीने भारत के विशाखापट्टनम में आयोजित २०२६ इंटरनेशनल फ्लीट रिव्यू में हिस्सा लेकर लौट रहा था। श्रीलंकाई अधिकारियों ने अल जजीरा को बताया कि बुधवार सुबह करीब ६ से ७ बजे के बीच (भारतीय समय के मुताबिक) मदद के लिए मैसेज भेजा। यह जहाज दक्षिणी श्रीलंका के गाले शहर से करीब ४० समुद्री मील (करीब ७५ किलोमीटर) दूर था। अधिकारी यह पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि बाकी करीब १५० क्रू मेंबर्स के साथ क्या हुआ।

१. अमेरिकी रक्षा मंत्री बोले- हिंद महासागर में ईरानी युद्धपोत डुबोया
२. अमेरिका बोला- आज रात ईरान पर सबसे बड़ा हमला होगाःमिसाइल लॉन्चर-फैक्ट्रियां तबाह करेंगे,
३. तेहरान के मेहराबाद एयरपोर्ट पर इजराइली अटैक
४. अमेरिका-इजराइल और ईरान की जंग जारीः
५. ५००० से ज्यादा बम गिरे, १२०० से अधिक मौतें;

अमेरिका के रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ ने कहा है कि हिंद महासागर में ईरानी युद्धपोत को डुबोने के पीछे अमेरिका का हाथ था। हेगसेथ ने कहा है कि आज अमेरिकी पनडुब्बी ने एक ईरानी जहाज को टॉरपीडो से निशाना बनाकर डुबो दिया। उन्होंने दावा किया कि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यह पहली बार है जब किसी पनडुब्बी ने किसी जहाज को इस तरह डुबोया है। हेगसेथ ने कहा, 'उस ईरानी युद्धपोत को लगा कि वह अंतरराष्ट्रीय जलक्षेत्र में सुरक्षित है, लेकिन उसे टॉरपीडो से डुबो दिया गया।'

हेगसेथ ने बताया कि अमेरिकी सेना ने ईरान के एक बड़े और खास जहाज को डुबो दिया है। उस जहाज का नाम 'सुलेमानी' था। यह नाम ईरान के जनरल कासिम सोलेमानी के नाम पर रखा गया था। कासिम सोलेमानी को ट्रम्प के पहले कार्यकाल में २०२० में अमेरिका ने मार दिया था। हेगसेथ ने मजाक में कहा, 'लगता है राष्ट्रपति ट्रम्प ने सुलेमानी को दो बार मार दिया है।'

अमेरिका-इजराइल और ईरान जंग का आज आठवां दिन है। इस बीच अमेरिका के वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट ने शनिवार को फॉक्स न्यूज से बातचीत में कहा है कि आज रात ईरान पर अब तक का सबसे बड़ा हमला किया जाएगा। उन्होंने कहा कि इस हमले का मकसद ईरान के मिसाइल लॉन्चर और मिसाइल बनाने वाली फैक्ट्रियों को भारी नुकसान पहुंचाना है। उनके अनुसार इस कार्रवाई से ईरान की मिसाइल क्षमता को काफी हद तक कमजोर किया जाएगा। वहीं, शुक्रवार देर रात इजराइल ने तेहरान के मेहराबाद एयरपोर्ट पर हवाई हमला किया, जिसके बाद आग और धुएं का गुबार उठता दिखाई दिया। दूसरी ओर खबर है कि रूस जंग के दौरान ईरान को खुफिया मदद दे रहा है। मॉस्को ने ईरान को मिडिल-ईस्ट में मौजूद अमेरिकी युद्धपोतों और सैन्य विमानों की लोकेशन से जुड़ी जानकारी मुहैया कराई।

वॉशिंगटन पोस्ट ने तीन अमेरिकी अधिकारियों के हवाले से बताया है कि रूस ईरान को ऐसी टारगेटिंग इंटेलिजेंस दे रहा है, जिससे वह अमेरिकी सैन्य ठिकानों को निशाना बना सके।ईरान के खिलाफ अमेरिका-इजराइल हमले का आज आठवां दिन है। इजराइली और अमेरिकी सेनाओं ने शुक्रवार को भी ईरान के अहम ठिकानों पर मिसाइलें दागीं। इजराइल और खाड़ी देशों में अमेरिकी सैन्य ठिकानों के साथ अन्य जगहों पर भी ईरानी हमले जारी हैं। ■

बिहार की राजनीति में एक बड़े युग का समापन

१.पहली बार भाजपा का सीएम,
२.जदयू के भविष्य पर बड़ा सवाल,
३.बिहार की सियासत में और क्या बदलेगा?

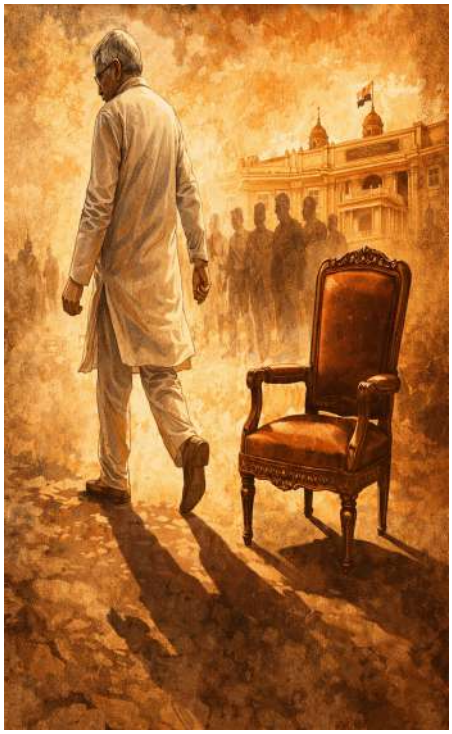

बिहार की राजनीति में एक बड़े युग का समापन होने जा रहा है। महज १०५ दिन पहले १०वीं बार मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने वाले नीतीश कुमार का बिहार की सत्ता छोड़ना राज्य में पीढ़ीगत बदलाव का अंतिम चरण है। उनके इस फैसले ने न केवल जदयू के भविष्य पर सवाल खड़े कर दिए हैं, बल्कि एनडीए की सबसे बड़ी पार्टी- भाजपा के लिए बिहार की राजनीति के समीकरणों को पूरी तरह बदल दिया है।

नीतीश कुमार राज्यसभा जा रहे हैं। बिहार के मुख्यमंत्री ने सोशल मीडिया पर पोस्ट करके खुद यह जानकारी दी है। नीतीश के राज्यसभा जाने का मतलब है राज्य की सत्ता में बहुत कुछ बदलने जा रहा है। राज्य में नई सरकार बनेगी। महज १०५ दिन पहले दसवीं बार मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने वाले नीतीश नौवीं बार अपना कार्यकाल पूरा नहीं कर पाएंगे। नीतीश के कुर्सी छोड़ने से बिहार के लिए और क्या-क्या बदल जाएगा?

पहली बार बिहार की सत्ता की बागडोर संभाल सकती है भाजपा

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के राज्यसभा के नामांकन की बात कहने के साथ ही यह तय हो गया है कि राज्य में सत्ता परिवर्तन होने जा रहा है। बीते नवंबर राज्य में हुए विधानसभा चुनाव में एनडीए को प्रचंड बहुमत के साथ जीत मिली थी। ८९ सीटें जीतकर भाजपा विधानसभा में सबसे बड़ी पार्टी बनी थी। इसके बाद भी चुनाव पूर्व किए वादे के मुताबिक, राज्य की बागडोर ८५ सीटें जीतने वाले जदयू के नीतीश कुमार के हाथ में आई। नीतीश के सत्ता संभालने के महज १०५ दिन बाद यह तय हो गया है कि बिहार में नीतीश राज का अंत होने जा रहा है। इसके साथ ही इस बात की भी संभावना जताई जा रही है कि राज्य में पहली बार भाजपा अपना मुख्यमंत्री बना सकती है।

हिंदी हार्टलैंड का आखिरी किला फतह करेगी भाजपा

१९८० में अपने जन्म के साथ ही भाजपा को हिंदी भाषी राज्यों की पार्टी के रूप में पहचना मिली। बीते साढ़े चार दशक में पार्टी दो लोकसभा सीट से ३०० से अधिक सीटें जीतने वाली पार्टी बन चुकी है। एक समय देश

बिहार की राजनीति में एक बड़े युग का समापन होने जा रहा है। महज १०५ दिन पहले १०वीं बार मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने वाले नीतीश कुमार का बिहार की सत्ता छोड़ना राज्य में पीढ़ीगत बदलाव का अंतिम चरण है। उनके इस फैसले ने न केवल जदयू के भविष्य पर सवाल खड़े कर दिए हैं, बल्कि एनडीए की सबसे बड़ी पार्टी- भाजपा के लिए बिहार की राजनीति के समीकरणों को पूरी तरह बदल दिया है।

के २१ राज्यों में भाजपा और उसके सहयोगियों की सरकार रही। अभी भी पार्टी २० राज्यों की सत्ता में हिस्सेदार है। इन सबके बावजूद हिंदी हार्टलैंड की पार्टी कही जाने वाली भाजपा देश के दूसरे सबसे बड़े हिंदी भाषी राज्य में अब तक अपना मुख्यमंत्री नहीं बना सकी है। इसके अलावा अन्य हिंदी भाषी राज्यों की बात करें तो यूपी, हरियाणा, उत्तराखंड, मध्य प्रदेश की सत्ता में भाजपा दो या दो से ज्यादा बार से सत्ता में है। छत्तीसगढ़ और राजस्थान में पार्टी ने पांच साल बाद फिर से सत्ता में वापसी की है। राजधानी दिल्ली में भी २७ साल बाद पार्टी ने सत्ता में वापसी की है। वहीं, हिमाचल प्रदेश, झारखंड में भी पार्टी अपना मुख्यमंत्री बना चुकी है। बिहार इकलौता हिंदी भाषी राज्य है जहां भाजपा अब तक अपना मुख्यमंत्री बनने का इंतजार कर रही है।

नौवीं बार कार्यकाल पूरा नहीं कर पाएंगे नीतीश

नीतीश कुमार बीते दो दशक के बिहार की सत्ता का पर्याय बने हुए हैं। इस दौरान उनकी पार्टी राज्य की पहले नंबर की पार्टी रही हो या तीसरे नंबर की मुख्यमंत्री नीतीश ही बनते रहे। २००० में पहली बार मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठने वाले नीतीश का पहला कार्यकाल महज सात दिन का रहा था। इसके बाद २००५ में राज्य के मुख्यमंत्री बने नीतीश ने अपना दूसरा कार्यकाल पूरा किया। २०१० में उन्होंने प्रचंड जीत के साथ तीसरी बार शपथ ली, लेकिन कार्यकाल पूरा नहीं कर पाए। दरअसल, भाजपा ने जब नरेंद्र मोदी को प्रधानमंत्री पद का चेहरा घोषित किया तो नीतीश ने अपनी राह बदल ली। लोकसभा चुनाव में उनकी पार्टी अकेले उतरी और बुरी तरह हारी। पार्टी को राज्य की ४० में से महज दो सीटों पर जीत मिली। इस हार के बाद नीतीश ने कुर्सी छोड़ दी और जीतन राम मांझी को मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठाया। महज नौ महीने बाद नीतीश ने फिर से सत्ता की बागडोर अपने हाथ में ले ली।

इसके बाद २०१५ का विधानसभा चुनाव नीतीश ने अपने धुर विरोधी लालू यादव के साथ मिलकर लड़ा और एक बार फिर मुख्यमंत्री बने। २०१७ में उन्होंने फिर से भाजपा का दामन थाम लिया और एक बार फिर राज्य की बागडोर संभाली। २०२० में विधानसभा चुनाव जीतने के बाद फिर से नीतीश मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठे, जबकि उनकी पार्टी सीटों के लिहाज से राज्य में तीसरे स्थान पर खिसक गई थी। २०२२ में नीतीश ने फिर से लालू का साथ पकड़ा और फिर से मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। २०२४ के लोकसभा चुनाव से ऐन पहले नीतीश फिर से भाजपा के साथ आ गए और फिर मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। २०२५ में विधानसभा चुनाव के बाद नीतीश ने १०वीं बार राज्य के मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। शपथ लेने महज १०५ दिन बाद यह तय हो गया कि नीतीश नौवीं बार अपना कार्यकाल पूरा नहीं कर पाएंगे। शायद ये आखिरी बार भी होगा।

बिहार की सियासत में पीढ़ीगत बदलाव

आपातकाल के दौर में बिहार की सियासत में कई युवा चेहरे उभरे। ये चेहरे दशकों तक बिहार की सियासत का पर्याय रहे। लालू प्रसाद यादव, सुशील मोदी, रामविलास पासवान, शरद यादव, नीतीश कुमार इनमें सबसे बड़े चेहरे बनकर उभरे। इन चेहरों में से रामविलास पासवान, सुशील मोदी और शरद यादव का निधन हो चुका है। लालू यादव चुनाव लड़ने से अयोग्य ठहराए जाने के बाद से सक्रिय सियासत से दूर हैं। अब इस पीढ़ी के आखिरी बड़े चेहरे नीतीश के दिल्ली जाने के साथ ही बिहार की सियासत में एक पीढ़ी का लगभग अंत हो जाएगा।

बीस साल से बिहार की सत्ता में काबिज जदयू पहली बार बैक सीट पर होगी

पिछले बीस साल और चार चुनाव से बिहार की सत्ता की बागडोर जदयू के हाथ में है। अब अगर राज्य में भाजपा का मुख्यमंत्री बनता है तो जदयू के गठन के बाद यह पहली बार होगा जब जदयू सहयोगी के रूप में बिहार की सत्ता में होगी। दूसरी बार जदयू का शीर्ष नेता बिहार की सत्ता का हिस्सेदार नहीं होगा

ये दूसरा मौका होगा जदयू सत्ता की हिस्सेदार तो रहेगी पर उनके शीर्ष नेता सत्ता का हिस्सा नहीं होंगे। इससे पहले २०१४ के लोकसभा चुनाव के बाद नीतीश ने मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया था और उनकी जगह जीतन राम मांझी राज्य के मुख्यमंत्री बने थे। २० मई २०१४ को राज्य के मुख्यमंत्री बने जीतन राम मांझी २२ फरवरी २०१५ तक इस पद पर रहे। इसके बाद नीतीश ने राज्य की बागडोर फिर से अपने हाथ में ले ली। तब से नीतीश ही पार्टी का सबसे बड़ा चेहरा और मुख्यमंत्री रहे हैं।■

चुकंदर ठंडाई सलाद

सामग्रीः
उबला चुकंदर - १ कप (कद्दूकस किया हुआ)
दही - ½ कप
भुना जीरा पाउडर - ½ छोटा चम्मच
काली मिर्च - ¼ छोटा चम्मच
नमक - स्वादानुसार
नींबू रस - १ छोटा चम्मच
अनार दाने - २ बड़े चम्मच
पुदीना पत्ते - सजाने के लिए

विधिः
एक बर्तन में चुकंदर और दही मिलाएँ। इसमें नमक, जीरा पाउडर, काली मिर्च और नींबू रस डालकर अच्छी तरह मिलाएँ। ऊपर से अनार दाने और पुदीना पत्तों से सजाएँ। ठंडा करके परोसें।
पोषण लाभः चुकंदर रक्तवर्धक होता है और दही पाचन शक्ति बढ़ाता है।

सामग्रीः
सूखा नारियल - २ कप
कंडेंस्ड मिल्क - १ कप
इलायची पाउडर - ½ छोटा चम्मच
किशमिश - २ बड़े चम्मच
विधिः
सभी सामग्री को अच्छी तरह मिलाकर लड्डू बना लें। ३० मिनट फ्रिज में रखकर ठंडा करें। खासियतः जल्दी बनने वाली और बच्चों की पसंदीदा मिठाई।

नारियल लड्डू

आम पन्ना शरबत

सामग्रीः
कच्चा आम - २
पुदीना पत्ते - ½ कप
काला नमक - १ छोटा चम्मच
भुना जीरा पाउडर - १ छोटा चम्मच
शक्कर - स्वादानुसार
ठंडा पानी - ४ कप
विधिः
कच्चे आम उबालकर छील लें। गूदा मिक्सी में पुदीना, शक्कर और मसालों के साथ पीस लें। ठंडा पानी मिलाकर छान लें। बर्फ डालकर परोसें। विशेष टिपः लू से बचाव और शरीर में पानी की कमी दूर करता है।

खीरा-पुदीना रायता

सामग्रीः
दही - १ कप
खीरा - १ (कद्दूकस किया हुआ)
पुदीना पेस्ट - १ छोटा चम्मच
नमक - स्वादानुसार
भुना जीरा पाउडर - ½ छोटा चम्मच

विधिः
दही को फेंटें। उसमें खीरा, पुदीना पेस्ट, नमक और जीरा पाउडर मिलाएँ। ठंडा करके परोसें। लाभः पाचन में सहायक और शरीर को ठंडक प्रदान करता है।

पालक-पनीर पराठा

सामग्रीः
गेहूँ का आटा - २ कप
उबली पालक - १ कप (पिसी हुई)
पनीर - ½ कप (कद्दूकस किया हुआ)
हरी मिर्च - १ (बारीक कटी)
अजवाइन - ½ छोटा चम्मच
नमक - स्वादानुसार
विधिः

पालक पनीर पराठा बनाने के लिए सबसे पहले आटे सामग्री को एक बाउल में डाले. थोड़ा थोड़ा पानी डाले और अच्छी तरह गुंद ले. १५ मिनट के लिए अलग से रख दे. अब दी गई सामग्री को भरने की लिए एक बाउल में डाले और मिला ले. गुंदे हुए आटे को छोटे छोटे भाग में बाट ले. छोटी छोटी रोटी बना ले और अलग से रख दे. हर रोटी के बीच में अपने अनुसार मसाला रखे और चारो तरफ से बन कर ले. अब उसे थोड़ा अपने हाथो से फ्लैट कर ले और फिर से थोड़ा सूखा आटा लगा के रोटी की तरह बेल ले. एक तवा गरम करें और उस पर पराठा डाले। चारो तरफ तेल या घी डाले और सेक ले. दही या हरी चटनी के साथ परोसें।

परीक्षा का दबावः नंबर ज़रूरी या ज़िंदगी?

हर साल मार्च आते ही देश के लाखों घरों में एक ही माहौल बन जाता है – डर, तनाव और अपेक्षाओं का बोझ। बोर्ड परीक्षा अब केवल परीक्षा नहीं रही, वह बच्चों की क़िस्मत तय करने वाली अदालत बना दी गई है। माता-पिता, स्कूल और समाज मिलकर बच्चों पर ऐसा दबाव डालते हैं कि वे नंबरों से पहले इंसान और बाद में विद्यार्थी बन जाते हैं। आज का बच्चा किताबों से नहीं, अपेक्षाओं से डरता है। उसे बताया जाता है कि अच्छे अंक आए तो भविष्य है, नहीं तो जीवन अंधकारमय। यह सोच इतनी गहरी बैठा दी गई है कि असफलता अब एक अनुभव नहीं, बल्कि अपराध बन गई है। यही कारण है कि परीक्षा के समय आत्महत्या, अवसाद और मानसिक टूटन की खबरें बढ़ जाती हैं। सबसे बड़ा दोष हमारी शिक्षा व्यवस्था का है, जो बच्चों की समझ, रुचि और रचनात्मकता से अधिक अंकों को महत्व देती है। स्कूल प्रतियोगिता को शिक्षा बना चुके हैं और कोचिंग संस्थान डर को व्यापार। बच्चा सीखने नहीं, डरने जाता है। उसे यह नहीं सिखाया जाता कि गलती से सीखा जाता है, बल्कि यह सिखाया जाता है कि गलती जीवन की हार है।

सुबह के पाँच बजे हैं।

अलार्म की तेज़ आवाज़ से १७ साल की अनन्या की नींद टूटती है। आँखें भारी हैं, सिर दर्द कर रहा है, लेकिन उसे उठना ही होगा।

टेबल पर किताबें खुली हैं, दीवार पर टाइम-टेबल चिपका है और मोबाइल पर नोटिफिकेशन चमक रहा है –

'आज मॉक टेस्ट है।'

अनन्या की माँ रसोई से आवाज़ लगाती हैं,

'आज पढ़ाई ठीक से करना, बोर्ड पास आ रहे हैं।' अनन्या मुस्कुराने की कोशिश करती है, पर उसके मन में एक ही सवाल घूम रहा है – अगर नंबर कम आए तो क्या मैं गलत साबित हो जाऊँगी? यह कहानी सिर्फ अनन्या की नहीं है। यह कहानी आज के लाखों छात्रों की है, जिनके कंधों पर किताबों से ज़्यादा उम्मीदों का बोझ है। कभी स्कूल जाना बच्चों के लिए खेल जैसा होता था। आज स्कूल एक दौड़ बन गया है। स्कूल, कोचिंग, होमवर्क , टेस्ट और तुलना। दिन का हर घंटा अंक से जुड़ा है। हर तरफ एक ही सवाल 'कितने नंबर आए?' 'क्लास में कौन सा रैंक है?'

'तुम थके हो?'

'तुम्हें किस चीज़ में मज़ा आता है?'

'तुम क्या बनना चाहते हो?'

बचपन, जो कभी खेल और कल्पना का नाम था, अब सिलेबस और सैंपल पेपर में कैद हो गया है। परीक्षा का दबाव सिर्फ कॉपी-पेंसिल तक सीमित नहीं रहता। वह धीरे-धीरे दिमाग में

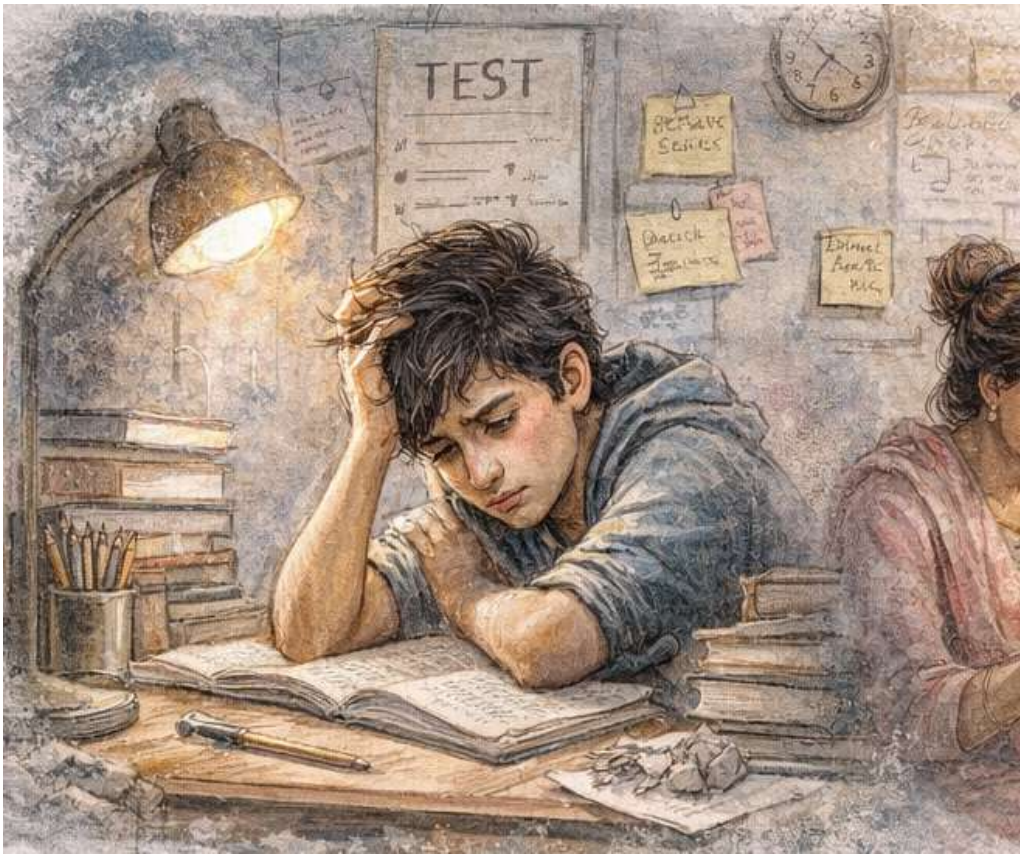

'नंबर हमें पहचान देते हैं, लेकिन इंसान हमें ज़िंदगी देता है।'

'टॉपर कौन है?'

कोई यह नहीं पूछता

घर बना लेता है।

आज कई बच्चों में दिखाई देता हैः

नींद न आना
हर बात पर चिड़चिड़ापन
अकेले रहना
मोबाइल या गेम में खो जाना
खुद को 'कमज़ोर' समझना
बच्चे पढ़ते कम हैं, डर ज़्यादा खाते हैं।

कुछ बच्चे खुलकर बोल देते हैं, कुछ चुप रहते हैं और अंदर ही अंदर टूटते रहते हैं। सबसे खतरनाक बात यह है कि वे सोचने लगते हैं – मेरी कीमत मेरी मार्कशीट है। अधिकतर माता-पिता की नीयत गलत नहीं होती।

वे कहते हैं, 'हम तो तुम्हारे भविष्य के लिए कह रहे हैं।' लेकिन बच्चा सुनता है,
'तुम तभी सही हो जब नंबर अच्छे हों।'

१.जब पढ़ाई सपना नहीं, दबाव बन जाए
२.डर जो किताबों से बड़ा हो गया
३.माता-पिता की चिंता या अनजाना बोझ?
४.क्या नंबर सच में ज़िंदगी तय करते हैं?
५.परीक्षा और ज़िंदगी की तैयारी में फर्क
६.बच्चों की अनसुनी आवाज़
७.संतुलन की ज़रूरत

तुलना यहाँ सबसे बड़ा हथियार बन जाती है:
'शर्मा जी का बेटा ९५% लाया है।'
'पड़ोस की लड़की डॉक्टर बन रही है।'
'तुम क्यों पीछे रह गए?'

हर तुलना बच्चे के दिल में एक छोटा सा घाव छोड़ जाती है। माँ-बाप चाहते हैं बच्चा आगे बढ़े, लेकिन बच्चा यह समझने लगता है कि वह कभी काफी नहीं है। अगर नंबर ही ज़िंदगी होते, तो हर टॉपर सबसे खुश इंसान होता। और हर कम नंबर लाने वाला असफल होता। लेकिन असल दुनिया कुछ और कहती है।

दुनिया में
कलाकार हैं
खिलाड़ी हैं
लेखक हैं
उद्यमी हैं
कारीगर हैं
तकनीशियन हैं

जिनकी पहचान उनकी मार्कशीट नहीं, उनकी प्रतिभा बनी। नंबर रास्ता दिखा सकते हैं, लेकिन मंज़िल नहीं बन सकते।

एक बच्चा गणित में कमजोर हो सकता है,
लेकिन संगीत में चमक सकता है।
कोई विज्ञान में साधारण हो सकता है,
लेकिन नेतृत्व में असाधारण।

समस्या तब होती है जब हम हर बच्चे को एक ही पैमाने से नापते हैं।

परीक्षा सिखाती है:
सवाल हल करना
समय पर उत्तर देना
याद करना
ज़िंदगी सिखाती है:
गिरकर उठना
असफलता सहना
दूसरों को समझना
अपने फैसले लेना
खुद पर भरोसा करना
ये बातें किताबों में नहीं होतीं।

अगर बच्चा सिर्फ परीक्षा की तैयारी करेगा,
तो वह ज़िंदगी की तैयारी कैसे करेगा?

आज का बच्चा बहुत कुछ कहना चाहता है, लेकिन उसे सुनने वाला कम है। वह कहना चाहता है:
'मुझे डर लग रहा है।'
'मुझसे उम्मीदें बहुत ज़्यादा हैं।'
'मैं हर दिन खुद को साबित करते-करते थक गया हूँ।' लेकिन अक्सर जवाब मिलता है:
'बहाने मत बनाओ।'
'हमने भी पढ़ाई की थी।'
'तुम कमजोर हो।'
जब बच्चा बोलना बंद कर देता है,
तब असली खतरा शुरू होता है।

इसका मतलब यह नहीं कि पढ़ाई ज़रूरी नहीं है। पढ़ाई ज़रूरी है। परीक्षा भी ज़रूरी है। लेकिन ज़रूरी यह भी है कि बच्चे को सांस लेने का मौका मिले, उसकी रुचि पहचानी जाए, उसकी असफलता को अपराध न बनाया जाए।

दबाव नहीं, दिशा चाहिए।
तुलना नहीं, भरोसा चाहिए।
डर नहीं, हौसला चाहिए।
जब बच्चा खुश होगा,
तभी वह सीख पाएगा।

रोहित को ड्राइंग पसंद थी। स्कूल में वह हर कॉपी के पीछे चित्र बनाता था। लेकिन घर में रोज़ कहा जाता, 'ड्राइंग से पेट नहीं भरता, साइंस पढ़ो।' रोहित ने साइंस पढ़ी, नंबर भी आए। पर उसका मन कहीं और था। आज वह एक डिज़ाइनर है। कहता है, 'अगर मुझे पहले समझा जाता, तो मैं डर के बजाय खुशी से

हमें यह स्वीकार करना होगा कि परीक्षा जीवन का एक पड़ाव है, पूरा जीवन नहीं। अंक भविष्य तय नहीं करते, बल्कि व्यक्ति की सोच, संघर्ष और समझ तय करती है। अगर शिक्षा बच्चों को मजबूत बनाने के बजाय तोड़ रही है, तो वह शिक्षा नहीं, शोषण है। समाज को तय करना होगा कि उसे सफल विद्यार्थी चाहिए या स्वस्थ इंसान। स्कूलों को अंक आधारित मूल्यांकन से आगे बढ़कर मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता देनी होगी। माता-पिता को यह समझना होगा कि उनका बच्चा प्रतियोगी नहीं, इंसान है।

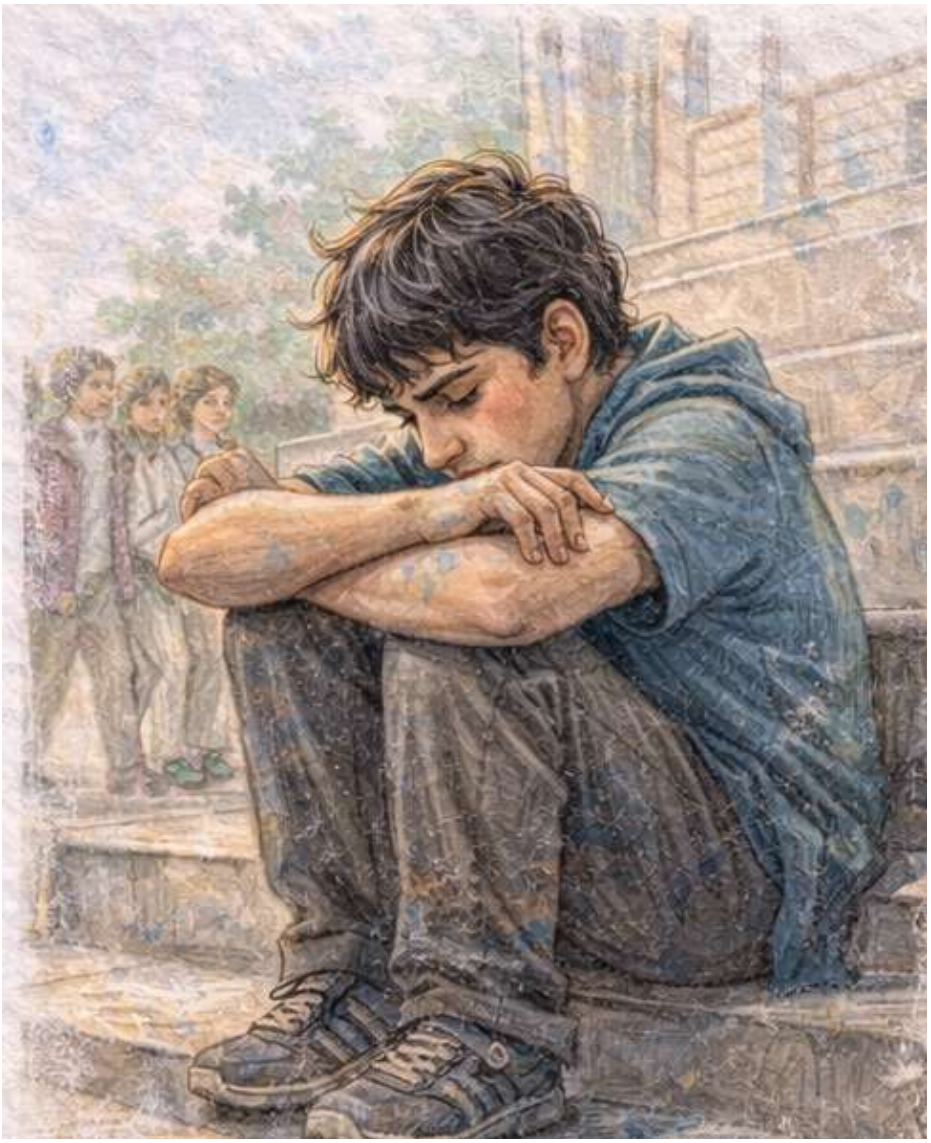

पढ़ता।' हर बच्चे के भीतर कोई रोहित बैठा है – जिसे सिर्फ पहचान की जरूरत है।

आज सवाल यह नहीं है कि नंबर ज़रूरी हैं या ज़िंदगी? असली सवाल है 'क्या हम बच्चों को इंसान बना रहे हैं या मशीन?' मशीन नंबर देती है। इंसान सपने देखता है। अगर हम बच्चों से केवल परिणाम माँगेंगे, तो वे भावनाएँ खो देंगे।

ज़िंदगी बड़ी है, नंबर छोटे है।

नंबर बदल जाते हैं। रैंक मिट जाती है।

मार्कशीट फाइल में बंद हो जाती है।

लेकिन आत्मविश्वास जीवन भर साथ रहता है। डर जीवन भर पीछा करता है। खुशी जीवन की दिशा तय करती है। इसलिए ज़रूरी है कि परीक्षा को जीवन न बनाएं, जीवन को परीक्षा न बना दें। बच्चे से यह कहें 'तुम सिर्फ नंबर नहीं हो, तुम एक पूरी दुनिया हो।'

अगर वह गिरता है, तो उसका हाथ पकड़ें।

अगर वह डरता है, तो उसका साथ दें।

क्योंकि परीक्षा एक पड़ाव है, लेकिन ज़िंदगी एक सफर। और सफर में खुश रहना सबसे ज़रूरी है।

U-Tropicana-Beach-Resort-in-Alibaug

One of the most beautiful resorts near Mumbai for family is the U Tropicana at Alibaug

मेष (Aries)

मार्च का महीना तुम्हारे लिए काम और जिम्मेदारी दोनों बढ़ाने वाला रहेगा। अधूरे प्रोजेक्ट पूरे करने का दबाव बनेगा। जल्दबाज़ी में फैसले लेने से नुकसान हो सकता है। वरिष्ठ अधिकारियों से मतभेद की स्थिति बन सकती है, इसलिए शब्दों पर नियंत्रण जरूरी है। आर्थिक स्थिति सुधरेगी, लेकिन अचानक खर्च भी सामने आएंगे। निवेश में जोखिम लेने से बचना चाहिए। रिश्तों में अहंकार टकराव का कारण बन सकता है। परिवार का सहयोग मिलेगा, पर समय कम दे पाओगे। सेहत में सिरदर्द, थकान और नींद की कमी परेशान कर सकती है। नियमित व्यायाम और अनुशासन जरूरी है। यह महीना तुम्हें नेतृत्व और संयम दोनों का पाठ पढ़ाएगा। धैर्य रखोगे तो सफलता मिलेगी।

वृषभ (Taurus)

मार्च स्थिरता और मेहनत का महीना रहेगा। काम में धीरे-धीरे प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति संतुलित रहेगी, पर खर्च नियंत्रण में रखना जरूरी होगा। पुराने निवेश से लाभ मिल सकता है। ऑफिस में किसी की ईर्ष्या या राजनीति परेशान कर सकती है। शांत रहकर काम निकालोगे तो फायदा होगा। परिवार में किसी बुजुर्ग की सेहत चिंता का कारण बन सकती है। रिश्तों में भरोसा मजबूत होगा। सेहत में वजन बढ़ने और सुस्ती की संभावना है। खानपान और दिनचर्या पर ध्यान देना जरूरी है। यह महीना धैर्य और स्थिरता की परीक्षा लेगा। धैर्य ही आपकी सबसे बड़ी पूँजी है।।

मिथुन (Gemini)

मिथुन राशि के लिए मार्च २०२६ मानसिक द्वंद्व का महीना है। मार्च में बातचीत और संपर्क तुम्हारी ताकत बनेंगे। नए लोगों से मिलने के अवसर मिलेंगे। लेकिन एक साथ कई काम उठाने से फोकस बिगड़ सकता है। नौकरी या व्यवसाय में बदलाव का संकेत है। आर्थिक स्थिति मध्यम रहेगी। उधार या जोखिम भरे निवेश से बचो। रिश्तों में गलतफहमी हो सकती है, इसलिए साफ़ और सीधी बात जरूरी है। मानसिक तनाव बढ़ सकता है। नींद पूरी नहीं होने से चिड़चिड़ापन रहेगा। छोटी यात्रा के योग हैं। यह महीना तुम्हें सिखाएगा कि कम काम लेकर उसे सही से पूरा करो।

कर्क (Cancer)

भावनात्मक रूप से यह महीना भारी रहेगा। परिवार और काम दोनों की जिम्मेदारी बढ़ेगी। किसी करीबी की परेशानी तुम्हें परेशान कर सकती है। पैसे आएँगे, लेकिन खर्च भी बढ़ेगा। भावनाओं में उधार देने से बचो। ऑफिस में राजनीति से दूर रहना बेहतर रहेगा। भरोसा सीमित रखो। सेहत में पेट, नींद और तनाव से जुड़ी समस्या हो सकती है। योग और ध्यान लाभ देगा। रिश्तों में खुलकर बात करना जरूरी होगा। यह महीना सीमाएँ बनाना सिखाएगा। कर्क राशि वालों को समाज और कार्यक्षेत्र में मान-सम्मान मिलेगा। लेकिन पारिवारिक जिम्मेदारियाँ मानसिक बोझ बनेंगी। आर्थिक लाभ धीरे-धीरे होगा। प्रेम जीवन में संवेदनशीलता बढ़ेगी, छोटी बात बड़ी बन सकती है। स्वास्थ्य में छाती, पेट और तनाव से जुड़ी समस्याएँ संभव।

सिंह (Leo)

मार्च में पहचान और प्रतिष्ठा बढ़ेगी। करियर में आगे बढ़ने का अवसर मिलेगा। लेकिन एक गलती इमेज खराब कर सकती है। वरिष्ठों से टकराव से बचो। अहंकार छोड़कर रणनीति अपनाओ। आर्थिक स्थिति मजबूत रहेगी, पर दिखावे में खर्च बढ़ सकता है। सेहत में पीठ और दिल से जुड़ी सावधानी जरूरी है। रिश्तों में नियंत्रण की प्रवृत्ति विवाद बढ़ा सकती है। परिवार का सहयोग

मिलेगा। यह महीना तुम्हारी परिपक्वता की परीक्षा है। सिंह राशि के लिए यह महीना नेतृत्व का है, लेकिन अहंकार की परीक्षा भी। आप चाहेंगे कि हर निर्णय आपके अनुसार हो। यही प्रवृत्ति कार्यस्थल और घर दोनों जगह टकराव ला सकती है। धन में लाभ संभव है, पर दिखावे पर खर्च भी बढ़ेगा। प्रेम जीवन में दूरी या टकराव संभव। स्वास्थ्य में पीठ दर्द और उच्च रक्तचाप।

कन्या (Virgo)

कन्या राशि वालों के लिए मार्च आत्मविश्लेषण और सुधार का समय है। मार्च मेहनत का पूरा हिसाब लेगा। काम में सफलता मिलेगी, लेकिन मानसिक दबाव भी रहेगा। हर बात में परफेक्शन की ज़िद खुद को थका सकती है। आर्थिक स्थिति सुधरेगी। रुके हुए पैसे मिलने के योग हैं। सहकर्मियों की गलतियों का बोझ खुद पर मत लो। सेहत में पाचन और थकान की समस्या संभव है। रिश्तों में व्यवहारिक सोच रखो। शिकायतें कम और समाधान ज्यादा रखो। यह महीना संतुलन सिखाएगा। करियर में धीरे-धीरे प्रगति होगी। कोई बड़ा परिवर्तन नहीं, पर स्थिरता आएगी। धन संतुलित रहेगा। प्रेम जीवन में व्यावहारिकता रिश्तों को मजबूती देगी। स्वास्थ्य में पाचन तंत्र कमजोर रह सकता है। छोटे सुधार ही बड़े परिवर्तन की नींव हैं।

तुला (Libra)

मार्च में सबसे बड़ी चुनौती होगी फैसले लेना। निर्णय टालोगे तो नुकसान होगा। पार्टनरशिप में शर्तें साफ़ करनी होंगी। पैसा आएगा, लेकिन खर्च तेज़ रहेगा। दिखावे से दूरी रखो। काम में असमंजस रहेगा, पर एक बार दिशा तय की तो गति आएगी। मानसिक तनाव बढ़ेगा। रिश्तों में संतुलन बनाए रखना कठिन होगा। खुद को प्राथमिकता देना सीखो। यह महीना आत्मनिर्भरता सिखाएगा। तुला राशि वालों के लिए यह महीना संबंधों पर केंद्रित है। जीवनसाथी या साझेदार से मतभेद उभर सकते हैं। करियर में साझेदारी से लाभ संभव है। धन में संतुलन रहेगा। स्वास्थ्य में मानसिक तनाव। समझौता कमजोरी नहीं, समझदारी है।

वृश्चिक (Scorpio)

मार्च अंदरूनी संघर्ष और बाहरी राजनीति दोनों दिखाएगा। ऑफिस में पावर गेम्स से दूर रहना समझदारी होगी। कोई छुपी बात सामने आ सकती है। सच से भागना नुकसान देगा। आर्थिक मामलों में जोखिम से बचो। रिश्तों में शक और कंट्रोल की प्रवृत्ति तनाव बढ़ाएगी। सेहत में गुस्सा और ब्लड प्रेशर बढ़ सकता है। शांत रहकर रणनीति बनाओ। प्रतिक्रिया से पहले सोचो। यह महीना आत्म-नियंत्रण सिखाएगा।

धनु (Sagittarius)

मार्च में नए विचार और मौके मिलेंगे। यात्रा और पढ़ाई के योग हैं। लेकिन अनुशासन की कमी भारी पड़ सकती है। पैसे आएँगे, पर खर्च भी तेज़ रहेगा। काम में अवसर मिलेंगे, पर योजना नहीं होगी तो सब बिखर सकता है। सेहत में थकान और कमजोरी हो सकती है। रिश्तों में ईमानदारी जरूरी होगी। बड़े सपने ठीक हैं, लेकिन जमीन पर उतारो। यह महीना हकीकत से रूबरू कराएगा।

मकर (Capricorn)

मार्च काम और जिम्मेदारी का महीना रहेगा। करियर में दबाव बढ़ेगा, लेकिन पहचान भी मिलेगी। मेहनत का फल धीरे-धीरे दिखेगा। ओवरवर्क से सेहत पर असर पड़ेगा। पीठ और घुटनों का ध्यान रखो। आर्थिक स्थिति स्थिर रहेगी। परिवार को समय नहीं दिया तो दूरी बढ़ेगी। संतुलन बनाना सीखना होगा। यह महीना सहनशक्ति की परीक्षा है।

कुंभ (Aquarius)

मार्च में नए विचार और नई सोच उभरेगी। लेकिन बिना योजना सब अधूरा रह सकता है। दोस्तों और नेटवर्किंग से फायदा होगा। काम में बदलाव संभव है। आर्थिक स्थिति सुधरेगी, अगर खर्च पर नियंत्रण रखा। सेहत में नींद और मानसिक थकान की समस्या दिखती है। खुद को साबित करने की जल्दबाज़ी मत करो। लगातार प्रयास ही सफलता दिलाएगा।

मीन (Pisces)

मार्च भ्रम और वास्तविकता में फर्क करना सिखाएगा। भावनाओं में बहकर फैसले लिए तो नुकसान होगा। क्रिएटिव काम में फायदा होगा, लेकिन अनुशासन जरूरी है। पैसे को लेकर उधार और भावुक मदद से बचो। रिश्तों में साफ़ बात जरूरी है। सेहत में मानसिक थकान और नींद की कमी हो सकती है। खुद को जमीन पर रखोगे तो टिकोगे। यह महीना आत्म-जागरूकता बढ़ाएगा। ■

वायनाडः
जहाँ जंगल बोलते हैं और शांति सुनाई देती है

वायनाड केवल घूमने की जगह नहीं, बल्कि एक अनुभव है। यह जगह सिखाती है कि शांति खरीदी नहीं जाती, बल्कि खोजी जाती है। यहाँ की हर सुबह और हर शाम यह एहसास दिलाती है कि प्रकृति के साथ रहने का सुख किसी भी शहर की चकाचौंध से बड़ा है। जो यात्री वायनाड आता है, वह केवल तस्वीरें नहीं ले जाता – वह अपने भीतर एक शांत पहाड़ भी लेकर लौटता है।

केरल के उत्तर-पूर्वी पहाड़ी क्षेत्र में बसा Wayanad कोई साधारण पर्यटन स्थल नहीं है। यह जगह उन लोगों के लिए है जो भीड़ से दूर, प्रकृति के करीब और शोर से अलग कुछ पल जीना चाहते हैं। वायनाड सिर्फ पहाड़ों और झरनों का इलाका नहीं, बल्कि आदिवासी संस्कृति, प्राचीन इतिहास और घने जंगलों की जीवित कहानी है। यहाँ की सुबह पक्षियों की आवाज़ से शुरू होती है और रात झींगुरों की संगीत में ढल जाती है। अगर केरल को समझना है तो वायनाड को महसूस करना ज़रूरी है।

वायनाड चारों ओर से पहाड़ों और जंगलों से घिरा हुआ है। चाय, कॉफी और काली मिर्च के बागानों के बीच से गुजरती सड़कें यात्रियों को किसी चित्रकार की कूची से बनी हुई लगती हैं। यहाँ का हर मोड़ एक नई तस्वीर पेश करता है – कभी धुंध से ढके पहाड़, कभी बहते झरने, तो कभी खुले मैदानों में चरते हिरण।

वायनाड का सबसे बड़ा आकर्षण उसका जंगल है। यह इलाका पश्चिमी घाट का हिस्सा है, जो जैव विविधता के लिए पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। हाथी, हिरण, बंदर और सैकड़ों प्रजातियों के पक्षी यहाँ खुले वातावरण में देखे जा सकते हैं।

वायनाड की पहचान केवल उसकी हरियाली से नहीं, बल्कि उसके इतिहास से भी है। एडक्कल गुफाएं इस क्षेत्र का सबसे अनोखा स्थल हैं, जहाँ पत्थरों पर हजारों साल पुराने चित्र और आकृतियाँ खुदी हुई हैं। ये शिलालेख बताते हैं कि यह इलाका मानव सभ्यता के शुरुआती चरणों का साक्षी रहा है।

यहाँ खड़े होकर महसूस होता है कि आधुनिक दुनिया से बहुत पहले भी इंसान इन पहाड़ों के बीच जीवन तलाश रहा था।

वायनाड को 'झरनों का जिला' भी कहा जा सकता है। मानसून के बाद यहाँ के झरने पूरे यौवन पर होते हैं। सूचिपारा और मीनमुट्टी जैसे झरने केवल देखने के लिए नहीं, बल्कि प्रकृति की शक्ति को महसूस करने के लिए हैं। पानी

१. प्रकृति का खुला संग्रहालय
२. इतिहास की गुफाओं में झांकता अतीत
३. झरनों की धरती
४. वन्यजीवनः जंगल का असली चेहरा
५. आदिवासी संस्कृति और लोकजीवन
६. खानपानः मसालों की खुशबू
७. शांति की तलाश में आने वालों की जगह
८. पर्यटन और पर्यावरण का संतुलन

की तेज़ धार जब चट्टानों से टकराती है तो एक अलग ही ऊर्जा पैदा होती है।

इन झरनों के आसपास फैली हरियाली वायनाड को एक प्राकृतिक स्पा जैसा बना देती है।

वायनाड वन्यजीव अभयारण्य इस क्षेत्र का दिल है। यहाँ जंगल सफारी के दौरान हाथियों के झुंड, हिरण और कई बार दुर्लभ पक्षी दिखाई देते हैं। यह जगह उन लोगों के लिए स्वर्ग है जो कैमरे के ज़रिए प्रकृति को कैद करना चाहते हैं।

लेकिन वायनाड यह भी याद दिलाता है कि जंगल मनोरंजन की वस्तु नहीं, बल्कि एक जीवित संसार है। यहाँ पर्यटकों को अनुशासन और संवेदनशीलता के साथ घूमना पड़ता है।

वायनाड के जंगलों में रहने वाले आदिवासी समुदाय इस क्षेत्र की आत्मा हैं। उनकी जीवनशैली प्रकृति के साथ तालमेल बिठाकर चलती है। लकड़ी और पत्तों से बने घर, पारंपरिक भोजन और लोकगीत आज भी इस इलाके की पहचान हैं। पर्यटक जब इन गांवों के पास से गुजरते हैं तो उन्हें एहसास होता है कि आधुनिक जीवन के बाहर भी एक संतुलित दुनिया मौजूद है।

source: pinimg

मार्च का महीना वायनाड घूमने के लिए आदर्श माना जाता है। इस समयः

मौसम शुष्क रहता है

सुबह और शाम ठंडी हवा चलती है

जंगल और पहाड़ साफ दिखाई देते हैं

ट्रेकिंग और सफारी सुरक्षित रहती है

हालांकि दोपहर में हल्की गर्मी होती है, लेकिन पहाड़ी इलाका होने के कारण यह असहनीय नहीं होती।

वायनाड का भोजन केरल के मालाबार क्षेत्र की पहचान लिए होता है। नारियल, काली मिर्च और मसालों से बनी सब्ज़ियाँ यहाँ के स्वाद को अलग बनाती हैं। चावल आधारित भोजन और केले के पत्ते पर परोसा जाने वाला पारंपरिक खाना पर्यटकों के लिए नया अनुभव होता है। यहाँ का खाना सिर्फ पेट नहीं भरता, बल्कि संस्कृति से परिचय कराता है।

वायनाड उन लोगों के लिए नहीं है जो शॉपिंग मॉल और नाइटलाइफ़ ढूंढते हैं। यह जगह लेखकों, फोटोग्राफरों, विद्यार्थियों और प्रकृति प्रेमियों की पसंद बनती जा रही है। यहाँ मोबाइल नेटवर्क कमजोर है और यही इसकी सबसे बड़ी खूबी है – इंसान खुद से जुड़ने लगता है।

पिछले कुछ वर्षों में वायनाड में पर्यटन बढ़ा है, जिससे रोजगार के अवसर भी पैदा हुए हैं। लेकिन साथ ही जंगलों पर दबाव भी बढ़ा है। प्लास्टिक कचरा और अनियंत्रित निर्माण इस स्वर्ग जैसी जगह के लिए खतरा बन रहे हैं। अब ज़रूरत है कि पर्यटन विकास के साथ पर्यावरण संरक्षण को भी उतनी ही प्राथमिकता दी जाए।

मुख्य दर्शनीय स्थल
Edakkal Caves
६००० साल पुराने शिलालेख
हल्की ट्रेकिंग
इतिहास और रोमांच

Banasura Sagar Dam
भारत का सबसे बड़ा मिट्टी का बांध
पहाड़ों से घिरी झील
बोटिंग और फोटोस्पॉट

Soochipara Waterfalls
तीन-स्तरीय झरना
नहाने की अनुमति
रोमांचक रास्ता

Chembra Peak
वायनाड की सबसे ऊँची चोटी
हार्ट-शेप झील
ट्रेकिंग के शौकीनों के लिए

Wayanad Wildlife Sanctuary
हाथी, हिरण, पक्षी
जंगल सफारी
नेचर लवर्स के लिए स्लो नेचर

वाइल्डलाइफ और नेचर
हाथी
बंदर
हिरण
जंगली सूअर
कई तरह के पक्षी
खुले जंगल में अकेले घूमना खतरे से खाली नहीं है।

लोकल खानपान
केरल स्टाइल चावल
नारियल आधारित करी
Malabar बिरयानी
Banana chips
काली मिर्च वाली डिशेज़

ठहरने के विकल्प
होमस्टे
जंगल रिसॉर्ट
ट्री हाउस
बजट होटल
मार्च में दाम moderate रहते हैं।

कैसे पहुँचें?
Nearest Railway:
Kozhikode (90 km)
Nearest Airport:
Kozhikode या

Kannur
फिर टैक्सी/बस से वायनाड।

वायनाड किसके लिए जीमू?
Nature lovers
Students
Photographers
Writers
Couples (शांति पसंद करने वाले)
Eco tourism चाहने वाले
अगर तुम ३-४ दिन शांति, हरियाली और पहाड़ों के बीच बिताना चाहते हो – Wayanad best है। अगर तुम Goa-style मज़ा चाहते हो – time waste होगा।

अर्जुन तेंदुलकर ने बिजनेसमैन रवि घई की पोती सानिया चंडोक के साथ शादी की है। सचिन तेंदुलकर के बेटे अर्जुन तेंदुलकर की आज सानिया चंडोक के साथ मुंबई में शादी हुई। समारोह में अमिताभ बच्चन, मुकेश अंबानी और जह शाह पहुंचे। भारतीय टीम के पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी भी पत्नी साक्षी के साथ आए। वहीं, पूर्व कप्तान राहुल द्रविड़, अनिल कुंबले के साथ क्रिकेटर अजिंक्य रहाणे, सुरेश रैना, हरभजन सिंह भी मौजूद रहे। शादी के फंक्शन ३ मार्च से ही चल रहे हैं। अर्जुन तेंदुलकर और सानिया चंडोक के प्री-वेडिंग फंक्शन २७ फरवरी को गुजरात के जामनगर में अंबानी परिवार के घर में हुए थे। दोनों ने अगस्त २०२५ में सगाई की थी। सानिया चंडोक ग्रैविस ग्रुप के चेयरमैन रवि घई की पोती हैं। अर्जुन की बहन सारा की करीबी दोस्त भी हैं।

जेलर २' में शाहरुख खान का कैमियो?

तमिल सुपरस्टार Rajinikanth की आगामी फिल्म Jailer 2 को लेकर नई चर्चा सामने आई है। खबर है कि इस फिल्म में बॉलीवुड के बादशाह शाहरुख खान कैमियो करते नजर आ सकते हैं। हालांकि फिल्म के निर्माताओं ने अभी तक इस बारे में कोई आधिकारिक घोषणा नहीं की है, लेकिन सोशल मीडिया पर सामने आई एक पोस्ट के बाद फैंस के बीच उत्साह काफी बढ़ गया है। दरअसल, मलयालम अभिनेता Mohanlal के स्टाइलिस्ट जिहाद शमसुद्दीन ने इंस्टाग्राम स्टोरी पर एक एआई से बनी तस्वीर साझा की। इस तस्वीर में कार चलाते हुए शाहरुख खान दिखाई दे रहे हैं, उनके साथ आगे की सीट पर मोहनलाल बैठे हैं, जबकि पीछे की सीट पर रजनीकांत और कन्नड़ अभिनेता Shiva Rajkumar नजर आ रहे हैं। तस्वीर के कैप्शन में लिखा गया कि फैंस 'जेलर २' में ऐसा फ्रेम देखने का इंतजार कर रहे हैं। इस पोस्ट को री-शेयर करते हुए जिहाद ने तमिल में लिखा–'कंदिप्पा इरुक्कुम', जिसका मतलब है 'पक्का होगा'। इसके बाद से यह कयास लगाए जा रहे हैं कि फिल्म में इन सभी सितारों का एक साथ सीन देखने को मिल सकता है।

गौरतलब है कि निर्देशक Nelson Dilipkumar की फिल्म 'जेलर' २०२३ की बड़ी हिट फिल्मों में शामिल रही थी। इस फिल्म में रजनीकांत के साथ मोहनलाल ने भी कैमियो भूमिका निभाई थी। अब सीक्वल 'जेलर २' में उनके फिर से नजर आने की खबरें हैं।

Faces Canada Magneteyes Kajal Duo Pack

Faces Canada Magneteyes Kajal Duo Pack

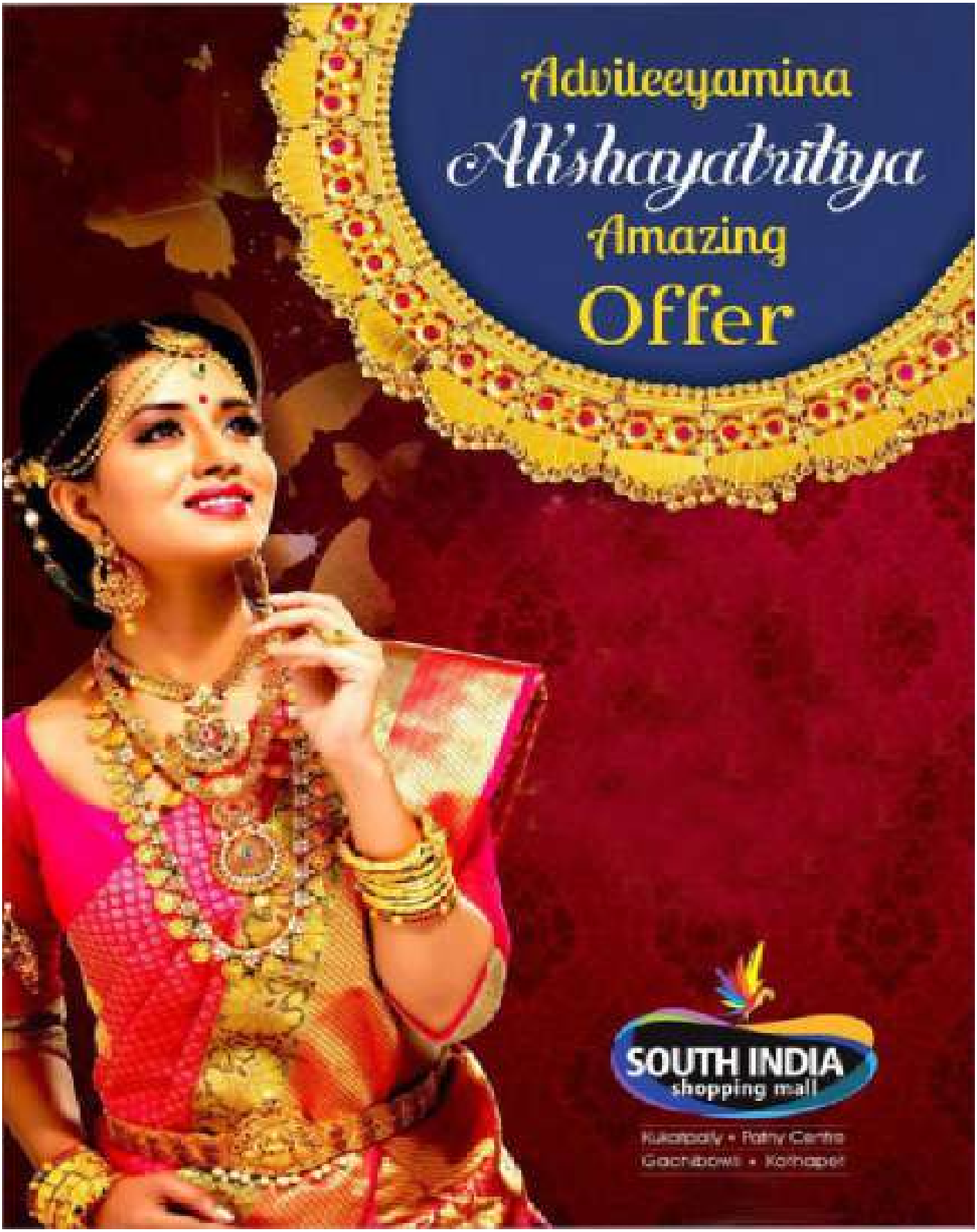

Adviteeyamina
Akshayatritiya
Amazing
Offer
SOUTH INDIA
shopping mall

अमेजन के ग्लोबल लीगल हेड का कीट-कीस दौरा

डेविड ए. ज़ापोल्स्की को लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड से सम्मानित

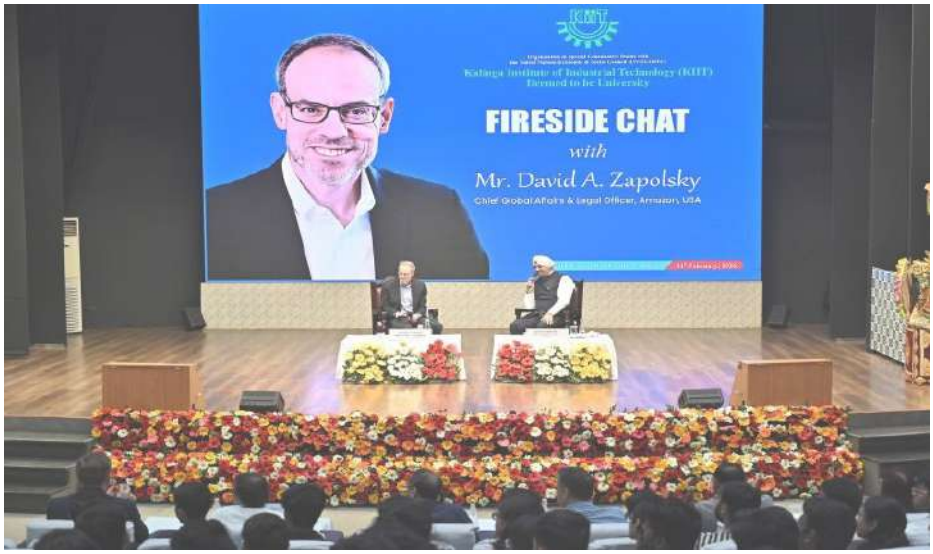

भुवनेश्वर, २१ फरवरीः कीट डीम्ड विश्विद्यालय ने अमेज़न (यूएस) के चीफ ग्लोबल अफेयर्स एवं लीगल ऑफिसर डेविड ए. जापोस्की को एक विशेष समारोह में कीट प्रतिष्ठित लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड से नवाजा। इस अवसर पर कीट-कीस-कीम्स के संस्थापक महान् शिक्षाविद् प्रोफेसर अच्युत सामंत तथा अमेज़न इंडिया के अनेक वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

कीट के कुलपति प्रो. सरनजीत सिंह के साथ विस्तृत संवाद में श्री ज़ापोल्स्की ने भारत में अमेज़न की बढ़ती भागीदारी और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) की परिवर्तनकारी क्षमता पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि अमेज़न ने भारत में अब तक लगभग ४० बिलियन अमेरिकी डॉलर का निवेश किया है, जिसमें डेटा इंफ्रास्ट्रक्चर और क्लाउड कंप्यूटिंग में बड़े निवेश शामिल हैं। कंपनी के डेटा सेंटर मुंबई और हैदराबाद में संचालित हो रहे हैं। पिछले वर्ष ही भारत में अपनी उपस्थिति को और सुदृढ़ करने के लिए अतिरिक्त ३५ बिलियन अमेरिकी डॉलर निवेश की प्रतिबद्धता जताई गई।

उन्होंने कहा, 'AI के वैश्विक विमर्श को दिशा देने में भारत अग्रणी भूमिका निभा रहा है। भारत ने स्पष्ट रूप से बताया है कि वह AI के माध्यम से क्या हासिल करना चाहता है। हमारी भूमिका उस महत्वाकांक्षा को समर्थन देने के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचा उपलब्ध कराना है।'

श्री ज़ापोल्स्की ने भारत सरकार के साथ अमेज़न की साझेदारी की घोषणा की, जिसके तहत देशभर के ४ करोड़ सरकारी स्कूलों के छात्रों तक AI और STEM शिक्षा पहुंचाई जाएगी। इस पहल का उद्देश्य अगली पीढ़ी को AI-सक्षम कार्यबल के रूप में तैयार करना है।

उन्होंने कहा कि कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR) पहल को कंपनी की मूल दक्षताओं से जोड़ना चाहिए। अमेज़न अपनी तकनीकी और लॉजिस्टिक क्षमताओं का उपयोग आपदा राहत, पर्यावरण संरक्षण और सामुदायिक विकास में करने के लिए प्रतिबद्ध है।

AI गवर्नेंस पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि यद्यपि AI का पूर्ण प्रभाव अभी समझा जाना बाकी है, फिर भी संतुलित और विचारशील नियमन आवश्यक है। मजबूत अनुपालन ढांचे के माध्यम से तकनीक का नैतिक और जिम्मेदार उपयोग सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

अपने व्यक्तिगत जीवन की चर्चा करते हुए – जहाँ वे एक वैज्ञानिक और संगीतकार बनने की आकांक्षा से लेकर ब्रुकलिन में अभियोजक और बाद में अमेज़न के शीर्ष कार्यकारी बने – उन्होंने छात्रों को केवल प्रतिष्ठा या वेतन के पीछे न भागने की सलाह दी। उन्होंने कहा- 'अपने मन की आवाज़ सुनिए। वही कीजिए जो आपको खुशी दे। जब आप अपने जुनून का अनुसरण करते हैं, तो अवसर स्वयं आपके पास आते हैं।'

१. भारत में अमेज़न का बढ़ता निवेश
२. ४ करोड़ छात्रों तक AI एवं STEM शिक्षा
3. AI नियमन और नैतिकता
४. छात्रों के लिए प्रेरक संदेश
५. विश्व के सबसे बड़े आदिवासी आवासीय विद्यालय की परिसर का भ्रमण

उन्होंने छात्रों को निरंतर सीखते रहने और जिज्ञासु बने रहने का संदेश दिया। अपने ऐतिहासिक दौरे के दौरान श्री ज़ापोल्स्की ने कीस परिसर का भी भ्रमण किया और छात्रों से आत्मीय संवाद किया। उन्होंने संस्थान की उल्लेखनीय प्रगति और आदिवासी सशक्तिकरण के क्षेत्र में उसके योगदान की सराहना की। यह दौरा कीट-कीस के वैश्विक नेतृत्व के साथ बढ़ते संबंधों का एक महत्वपूर्ण उदाहरण सिद्ध हुआ।

कीट डीम्ड विश्वविद्यालय ने २२वें स्थापना दिवस पर चार विशिष्ट अंतर्राष्ट्रीय विभूतियों को किया लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड से सम्मानित

भुवनेश्वर, १६ फरवरी २०२६ः कीट डीम्ड विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर (ओड़िशा), भारत के २२वें स्थापना दिवस के अवसर पर विशेष व्याख्यानमाला का आयोजन किया जबकि अवसर पर चार विशिष्ट अंतर्राष्ट्रीय विभूतियों को कीट लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड से सम्मानित भी किया गया।

सम्मानित अतिथि थे–

१. जॉन ओपेनहैमर, संस्थापक एवं अध्यक्ष, कोलंबिया हॉस्पिटलिटी (अमेरिका)
२. किरिण्डे ओसाजी नायक थिरो, मुख्य अधिष्ठाता, हनुपिटिया गंगाराम मंदिर, कोलंबो
३. के.एन. शांता कुमार, निदेशक, दी प्रिंटर्स (मैसूर) प्राइवेट लिमिटेड तथा बोर्ड सदस्य, प्रेस ट्रस्ट आफ इण्डिया
४. गिट्ठुल जिग्मे रिनपोचे, तिब्बती बौद्ध धर्म के आचार्य एवं आध्यात्मिक निदेशक, रीपा इंटरनेश्नल सेंटर, स्विट्ज़रलैंड

सम्मानित विभूतियों का प्रेरणादायी संबोधनः

अपने वक्तव्य में जॉन ओपेनहाइमर ने संस्थान की उन्मुक्त कण्ठ से सराहना की। उन्होंने कहा कि कीट प्रांगण उनकी कल्पना से परे है और यह समाज पर स्थायी प्रभाव डाल रहा है। उन्होंने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा, 'आप समाज, अपने परिवार, अपने देश और पूरी दुनिया के लिए महत्वपूर्ण योगदान देने की क्षमता रखते हैं। अपने हृदय की आवाज़ का अनुसरण करें–तब निर्णय लेना आसान हो जाता है।'

मीडिया जगत के वरिष्ठ व्यक्तित्व के. एन. शांता कुमार ने कहा, 'कीट केवल एक संस्थान की कहानी नहीं, बल्कि एक दूरदृष्टि की कहानी है।' उन्होंने कहा कि भले ही मीडिया का स्वरूप तेजी से बदल रहा है, परंतु सत्य, विश्वसनीयता, सत्यापन और नैतिक पत्रकारिता आज भी इसकी आधारशिला हैं। उन्होंने विद्यार्थियों से जिज्ञासु बने रहने, विश्वसनीयता को महत्व देने और जिम्मेदार नागरिक पत्रकारिता को अपनाने का आह्वान किया।

डॉ. किरिंदे अस्साजी नायक थेरो ने इस दिन को 'इतिहास का आध्यात्मिक पुनर्मिलन' बताया। उन्होंने कहा कि उन्होंने अनेक देशों और संस्थानों का दौरा किया है, किंतु करुणा, अनुशासन, मानवता और दूरदृष्टि का ऐसा समन्वय विरले ही देखने को मिलता है।

ग्येत्रुल जिग्मे रिनपोछे ने विनम्रता और करुणा पर बल देते हुए कहा, 'सफलता पाने वाले बहुत होते हैं, परंतु विनम्र बने रहना ही सच्ची सफलता है।' उन्होंने 'व्यावहारिक करुणा' की बात करते हुए कहा कि इसके लिए जटिल दार्शनिक ज्ञान की आवश्यकता नहीं, बल्कि दूसरों के प्रति संवेदनशील हृदय ही पर्याप्त है। उन्होंने अपनी दादी के शब्दों को स्मरण करते हुए कहा, 'देने से कोई गरीब नहीं होता। जो नहीं देते, वही सदा गरीब रहते हैं। गरीबी मन में होती है।'

कीट-कीस-कीम्स के संस्थापक का संदेश

स्वागत भाषण में महान् शिक्षाविद् संस्थापक, प्रेफेसर अच्युत सामंत ने अपने आभार संबोधन में बताया कि कीट की कामयाबी का सफर एक साहसिक स्वप्न और दृढ़ संकल्प के साथ प्रारंभ हुई थी। उन्होंने कहा, 'अब तक की हमारी सारी उपलब्धियाँ कीट-कीस-कीम्स के विद्यार्थियों और कर्मचारियों की हैं। यह उनकी सफलता है।' इसप्रकार कीट डीम्ड विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर (ओड़िशा) भारत का २२वां स्थापना दिवस केवल उपलब्धियों का उत्सव नहीं, बल्कि करुणा, सत्यनिष्ठा, विनम्रता और दूरदर्शी नेतृत्व के मूल्यों का भी उत्सव सिद्ध हुआ।

चीन में आयोजित १२वीं एशियन इंडोर एथलेटिक्स चैंपियनशिप २०२६ में कीट डीम्ड विश्वविद्यालय के छात्रों ने जीते ३ पदक

भुवनेश्वरः कीट डीम्ड विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर के एथलीटों ने ६ से ८ फरवरी २०२६ तक चीन के तिआनजिन में आयोजित १२वीं एशियन इंडोर एथलेटिक्स चैंपियनशिप में शानदार प्रदर्शन करते हुए संस्थान की खेल विरासत में एक और स्वर्णिम अध्याय जोड़ा।

कीट डीम्ड विश्वविद्यालय के छात्रों ने इस प्रतिष्ठित महाद्वीपीय प्रतियोगिता में कुल तीन पदक–एक स्वर्ण, एक रजत और एक कांस्य–अपने नाम किए, जो भारत के कुल पदक तालिका का ६० प्रतिशत है।

एथलेटिक्स फेडरेशन ऑफ इंडिया द्वारा घोषित १७ सदस्यीय भारतीय दल में से नौ खिलाड़ी कीट विश्वविद्यालय से थे, जो

खेल उत्कृष्टता और एथलीट विकास के प्रति संस्थान की सशक्त प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों में तेजस्विन शंकर ने पुरुषों की हेप्टाथलॉन स्पर्धा में ५९९३ अंक अर्जित कर स्वर्ण पदक जीतते हुए नया राष्ट्रीय इंडोर रिकॉर्ड स्थापित कर इतिहास रच दिया। उनका सर्वांगीण प्रदर्शन एशियाई स्तर पर भारत के सर्वश्रेष्ठ संयुक्त स्पर्धा एथलीटों में उनकी स्थिति को दर्शाता है।

पदक जीतने की इस कड़ी को आगे बढ़ाते

भारत ने इस चैंपियनशिप में १ स्वर्ण, २ रजत और २ कांस्य सहित कुल पांच पदक जीतकर पदक तालिका में छठा स्थान प्राप्त किया। उल्लेखनीय है कि इन पांच में से तीन पदक सिर्फ कीट डीम्ड विश्वविद्यालय के खिलाड़ियों द्वारा जीते गए जो भारत की सफलता में संस्थान की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करता है। पदक विजेताओं और पूरे दल को बधाई देते हुए, कीट -कीस -कीम्स के संस्थापक प्रो. (डॉ.) अच्युत सामंत ने खिलाड़ियों की कड़ी मेहनत, अनुशासन और उत्कृष्ट प्रदर्शन की सराहना की।

हुए, तजिंदरपाल सिंह तूर ने पुरुषों की शॉट पुट स्पर्धा में २०.०५ मीटर के सर्वश्रेष्ठ थ्रो के साथ रजत पदक हासिल किया, जिससे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उनकी निरंतरता और प्रभुत्व सिद्ध हुआ।

महिला वर्ग में, एंसी सोजन एडप्पिल्ली ने महिला लंबी कूद में ६.२१ मीटर की प्रभावशाली छलांग लगाकर कांस्य पदक जीता और देश व विश्वविद्यालय का नाम रोशन किया।

कुल मिलाकर, भारत ने इस चैंपियनशिप में १ स्वर्ण, २ रजत और २ कांस्य सहित कुल पांच पदक जीतकर पदक तालिका में छठा स्थान प्राप्त किया। उल्लेखनीय है कि इन पांच में से तीन पदक सिर्फ कीट डीम्ड विश्वविद्यालय

के खिलाड़ियों द्वारा जीते गए जो भारत की सफलता में संस्थान की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करता है।

पदक विजेताओं और पूरे दल को बधाई देते हुए, कीट -कीस -कीम्स के संस्थापक प्रो. (डॉ.) अच्युत सामंत ने खिलाड़ियों की कड़ी मेहनत, अनुशासन और उत्कृष्ट प्रदर्शन की सराहना की। उन्होंने कहा कि इस तरह की उपलब्धियां विश्व-स्तरीय खेल अवसंरचना, विशेषज्ञ प्रशिक्षण और समग्र सहयोग प्रणाली के माध्यम से खेल उत्कृष्टता को बढ़ावा देने के कीट के अटूट संकल्प को प्रतिबिंबित करती हैं।

अपनी लीलाभूमि शंखक्षेत्र में लीलाधर भगवान जगन्नाथजी

भारत एक संस्कृतिसंपन्न समृद्ध देश है जहां के कण-कण में लीलाधर भगवान श्री जगन्नाथ का वास है। अपनी लीलाभूमि शंखक्षेत्र में लीलाधर भगवान जगन्नाथजी अपने चतुर्धा देवविग्रह रुप,बडे भाई बलभद्र,लाडली बहन सुभद्रा, सुदर्शन के रुप में तथा स्वयं नारायण

जगन्नाथ पुरी मर्त्यबैकुण्ठ है। वे अपने बडे-बडे गोल-गोल अपलक नेत्रों से चौबीसों घण्टे पूरे विश्व को निहारते हैं। पुरी धाम का शंखक्षेत्र एक धर्मकानन है जो एकसाथ तीर्थ भी है, अन्यतम धाम भी है तथा लीलाधर भगवान जगन्नाथ क्षेत्र भी है। कहते हैं कि सत्युग का धाम बदरीनाथ धाम है, त्रेता युग का धाम रामेश्वरम् धाम है, द्वापर युग का धाम द्वारका धाम है तथा कलियुग का धाम श्री जगन्नाथधाम है। श्रीमंदिर के रत्नवेदी पर विराजमान लीलाधर भगवान जगन्नाथजी साक्षात ऋग्वेद , बलभद्रजी सामवेद, सुभद्रा माता यजुर्वेद तथा सुदर्शन भगवान अथर्वेद हैं।

रुप में विराजमान हैं। वे अपने भक्तों की आस्था, विश्वास और मैत्री के विश्व के सबसे बडे ठाकुर हैं। पुरी में प्रतिवर्ष आषाढ शुक्ल द्वितीया को लीलाधर भगवान जगन्नाथ जी की विश्व प्रसिद्ध रथयात्रा अनुष्ठित होती है जो विश्व का सबसे बड़ा आध्यात्मिक आयोजन होता है। वह एक सांस्कृतिक महोत्सव होता है।भगवान जगन्नाथ भारत के चारों धामों में एकसाथ विराजते हैं।इसीलिए चारों धामों में वे नाथ के रुप में जाने जाते हैं- बदरीनाथ, द्वारकानाथ, रामेश्वर नाथ तथा जगन्नाथ। बदरीनाथ में वे पवित्र स्नान करते हैं, द्वारका में वे पूर्ण श्रृंगार करते हैं , जगन्नाथ धाम पुरी में वे ५६ प्रकार के अन्न के भोगग्रहण करते हैं तथा रामेश्वरम् में वे शयन करते हैं। लीलाधर भगवान जगन्नाथजी कलियुग के एकमात्र पूर्ण दारुब्रह्म हैं जो दशावतार क्षेत्र पुरी धाम में अपने रत्नसिंहासन पर विराजमान हैं। जगन्नाथ पुरी मर्त्यबैकुण्ठ है। वे अपने बडे-बडे गोल-गोल अपलक नेत्रों से चौबीसों घण्टे पूरे विश्व को निहारते हैं। पुरी धाम का शंखक्षेत्र एक धर्मकानन है जो एकसाथ तीर्थ भी है, अन्यतम धाम भी है तथा लीलाधर भगवान जगन्नाथ क्षेत्र भी है।

कहते हैं कि सत्युग का धाम बदरीनाथ धाम है, त्रेता युग का धाम रामेश्वरम् धाम है, द्वापर युग का धाम द्वारका धाम है तथा कलियुग का धाम श्री जगन्नाथधाम है। श्रीमंदिर के रत्नवेदी

पर विराजमान लीलाधर भगवान जगन्नाथजी साक्षात ऋग्वेद , बलभद्रजी सामवेद, सुभद्रा माता यजुर्वेद तथा सुदर्शन भगवान अथर्वेद हैं।

श्रीमंदिर का निर्माण गंगवंश के प्रतापी राजा चोलगंगदेव ने १२वीं शताब्दी में करवाया। मंदिर की ऊंचाई २१४ फीट ०८ इंच है। यह मंदिर लगभग ११ एकड भू-भाग पर अवस्थित है। यह मंदिर ओडिशा का सबसे बडा जगन्नाथ मंदिर है। यह ओडिशी स्थापत्य तथा मूर्तिकला का बेजोड प्रत्यक्ष उदाहरण है। यह मंदिर पंचरथ आकार का है। इसके शीर्ष पर पतितपावन ध्वज फहराता है। इसके चारों दिशाओं के प्रवेशद्वार महाद्वार कहलाते हैं। पूर्व दिशा का महाद्वार सिंहद्वार कहलाता है जो धर्म का प्रतीक है। पश्चिम दिशा का महाद्वार व्याग्रद्वार है जो वैराग्य का प्रतीक है। दक्षिण दिशा का महाद्वार अश्व द्वार है जो ज्ञान का प्रतीक है तथा उत्तर दिशा का महाद्वार हस्ती द्वार है जो ऐश्वर्य का प्रतीक है। श्रीमंदिर के पूर्वद्वार सिंहद्वार के ठीक सामने अरुण स्तम्भ है जिसकी ऊचाई लगभग १० मीटर है जहां से भगवान श्री जगन्नाथजी का अपना वाहन अरुण रत्नवेदी पर विराजमान भगवान जगन्नाथ के नित्य दर्शन करता है।

यह अरुणस्तम्भ १३वीं सदी में कोणार्क मंदिर में था जिसे १८वीं सदी में लाकर श्रीमंदिर के सिंहद्वार के सामने अवस्थित किया गया। श्रीमंदिर की पाकशाला संसार की सबसे बडी पाकशाला है जहां पर मात्र ४५मिनट में कुल लगभग १०हजार भक्तों के लिए स्वयं माता अन्नपूर्णा देवी की देखरेख में महाप्रसाद तैयार होता है। इस पाकशाला के कुल लगभग २०० चूल्हे चौबीसों घण्टे जलते रहते हैं। महाप्रसाद पकते रहता है जिसमें लगभग ६०० रसोइये जिन्हें सुपकार कहा जाता है वे महाप्रसाद पकाते रहते हैं। महाप्रसाद को भगवान जगन्नाथ को निवेदित करने के उपरांत उसे देवी विमलाजी को निवेदित किया जाता है और तब वह महाप्रसाद बनता है। इसे सामखुदी भोग भी कहते हैं। श्रीमंदिर के आनान्दबाजार (महाप्रसाद विक्री बाजार) में महाप्रसाद सेवन के समय किसी प्रकार का भेद-भाव नहीं होता है। सभी एकसाथ बैठकर महाप्रसाद सेवन करते हैं। यह महाप्रसाद आयुर्वेदसम्मत तथा पूरी तरह से उत्तम स्वास्थ्यप्रद होता है।

श्रीमंदिर में भगवान जगन्नाथ के दर्शन के लिए पधारनेवाले भक्त को सिंहद्वार के २२ सीढियों को पार कर भगवान जगन्नाथ के दर्शन होते हैं। इन २२ सीढियों में से पहली ५ सीढियां भक्त के ज्ञानेन्द्रियों -आंख, कान, नाक, मुंह, जीभ और त्वचा की शुद्धता की प्रतीक हैं। दूसरी ५ सीढियां-प्राण, अर्पण, व्यान, उदान तथा सम्मान की शुद्धता की प्रतीक हैं। तीसरी ५ सीढियां रुप, रस, स्वाद, गंध, श्रवण तथा स्पर्श की शुद्धता की प्रतीक हैं। उसके ऊपर की ५ सीढियां- पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और शारीरिक चेतना की शुद्धता की प्रतीक हैं। अंतिम २ सीढियां भक्त की बुद्धि और उसके अहंकार की शुद्धता की प्रतीक हैं। श्रीमंदिर की सुदीर्घ ऐसी मान्यता है कि जबतक जगन्नाथ भक्त भगवान जगन्नाथ के दर्शन से पूर्व अपने २२ दोषों का त्याग नहीं करता है तबतक भगवान जगन्नाथ उसको उसके ज्ञान-नेत्रों से दर्शन ही नहीं देते हैं।

भगवान जगन्नाथ, लीलाधर के लीलाभूमि के आकर्षण का एक और मुख्य आकर्षण श्रीमंदिर के दक्षिण-पूर्व दिशा बंगोपसागर (महोदधि) है। यहां का प्रातःकालीन सूर्योदय का दृश्य अनुपम तथा मनमोहक है। इसे सैलानियों का स्वर्ग कहा जाता है। यह महोदधि चौबीसों घण्टे भगवान जगन्नाथ के श्री चरणों के पावन स्पर्श के लिए चिघ्घाडता है लेकिन उसकी आवाज कभी भी श्रीमंदिर के मेघनाद प्राचीर के अन्दर नहीं जा पाती है। इसी महोदधि के तट पर आकर महाप्रभु आदिशंकराचार्य और अनन्य जगन्नाथभक्त विद्यापति जैसे अनेक भक्त आकर भगवान जगन्नाथ की आराधना किये हैं। इस महोदधि तट को स्वर्ण समुद्रतट कहा जाता है। यहीं पर अवस्थित है - स्वर्गद्वार घाट (श्मशान घाट) जहां पर सनातनी लोगों का अंतिम दाह-संस्कार होता है। कहते हैं कि स्वर्गद्वार में अंतिम संस्कार के उपरांत जीव की आत्मा भव-बंधन से मुक्त हो जाती है।

श्री जगन्नाथ पुरी के श्रीमंदिर में भगवान जगन्नाथ ५६ प्रकार के अन्न-भोग करते हैं। प्रतिदिन नये-नये श्रृंगार करते हैं। साल के २१ महीनों में १३ पर्व मनाते हैं। भक्तों की प्रत्येक मनोकामना की पूर्ति करते हैं। अपने लीलाधर विग्रह रुप में विश्व के एकमात्र आस्था के देवों के देव के रुप में पूजित होते हैं। अपने इस दशावतार क्षेत्र में अपने भक्तों को दर्सो रुप में दर्शन देते हैं। १५नवंबर,२०२१ को वे अपने लक्ष्मी-नारायण रुप में द्रशन दिये। जलक्रीडा को सबसे अधिक पसंद करनेवाले भगवान जगन्नाथ चंदनयात्रा करते हैं। अपने जन्मदिन, देवस्नानपूर्णिमा के दिन महास्नान करते हैं। लीलाधर गीत-संगीत के बहुत प्रेमी हैं जो प्रतिदिन रात को सोने से पूर्व ओडिशीगीत अवश्य सुनते हैं। उनको गोटपुअ नृत्य भी बहुत पसंद है जिसे वे अपने विश्वप्रसिद्ध रथयात्रा के दिन पहण्डी विजय के समय अवश्य देखते हैं।

भगवान जगन्नाथ, लीलाधर स्वामी अहंकारी भक्त को कभी पसंद नहीं करते हैं और जबतक वे अपने भक्त को अपने दर्शन के लिए श्रीमंदिर नहीं बुलाते हैं तबतक कोई भी भक्त श्रीमंदिर में उनके दर्शन के लिए जा ही नहीं सकता है। उनको सच्चे भक्त, सज्जन, साधु, महात्मा, संन्यासी, विदेह गृहस्थ अपने सभी प्रकार के सेवायतगण बहुत पसंद हैं। २०२४ से श्रीजगन्नाथ परिक्रमा गलियारा बन जाने से लीलाभूमि शंखक्षेत्र का धार्मिक और आध्यात्मिक महत्त्व और बढ़ गया है।

अशोक पाण्डेय
8895267920

मारवाड़ी सोसायटी भुवनेश्वर के होली बंधुमिलन की मुख्य आकर्षण रही मरु कोकिला सीमा मिश्रा

२ मार्च और ४ मार्च को मरावाड़ी सोसायटी भुवनेश्वर ने क्रमशः होलिका दहन तथा होली बंधुमिलन समारोह का सफलतापूर्वक और विराट आयोजन स्थानीय जनता मैदान,जयदेवविहार में किया।सुबह में रंग-गुलाल का कार्यक्रम था जबकि सायंकाल प्रीतिभोज संग रंगारंग कार्यक्रम का। सच कहा जाय तो आयोजन का मुख्य उद्देश्य मारवाड़ी सोसायटी के सभी घटक संगठनों के लोगों के बीच और अधिक मेल-मिलाप को बढ़ावा एकसाथ नाश्ता-पानी और खान-पान के द्वारा किया जाय तथा सभी का भरपूर मनोरंजन हो। होली बंधुमिलन की मुख्य आकर्षण रही मरु कोकिला सीमा मिश्रा। राजस्थानी गीत-संगीत गायिका सीमा मिश्रा ने अपने एकल गायन तथा अपने साथी गायक कलाकार के साथ मिलकर अनेक राजस्थानी होली के गीत गाकर सभी का भरपूर मनोरंजन कर दिया।

वहीं सीमा मिश्रा टोली की नृत्यांगनाओं ने अपने पांवों की थिरकन तथा अपनी भाव-भंगिमाओं से लोगों को देर रात तक बांधे रखा। सोसायटी के अध्यक्ष संजय लाठ के अनुसार उन्हें इस विराट आयोजन को सफल बनाने में समाज के सभी पदाधिकारियों, सदस्यों तथा सोसायटी के घटक संगठनों का पूर्ण सहयोग मिला। वहीं होली आयोजन कमेटी के चेयरमैन चेतन टेकरीवाल के अनुसार इस आयोजन से समाज के सभी लोगों में आपसी सौहार्द देखने को मिला। सबसे बड़ी बात तो यह रही कि इतने विराट आयोजन में कोई औपचारिकता नहीं रखी गई थी। कार्यक्रम के अंत में सोसायटी के सभी पदाधिकारियों की उपस्थिति में मरु गायिका सीमा मिश्रा को स्मृतिचिह्न भेंटकर उन्हें सम्मानित किया गया। सबसे बड़ी बात यह देखने को मिली की सभी मेहमानों का विधिवत स्वागत सोसायटी के संरक्षक सुरेश कुमार अग्रवाल ने राजस्थानी पगड़ी, अंगवस्त्र और बैज पहनाकर किया। अवसर पर सुभाष अग्रवाल, महेन्द्र कुमार गुप्ता, सुरेन्द्र डालमिया, अजय अग्रवाल, मनसुख लाल सेठिया,शिवकुमार अग्रवाल,जितेन्द्र मोहन गुप्ता आदि गणमान्य उपस्थित थे। सभी ने आयोजित स्वरुचि प्रीतिभोज में हिस्सा लिया।

स्थानीय झारपाड़ा श्रीश्याम मंदिर में चल रहे तीन दिवसीय श्रीश्याम फाल्गुनी महोत्सव की दूसरी शाम आमंत्रित भजन गायिका पूनम सुरेखा और गायक अमित सेठ के नाम रही। दोनों की सुमधुर गायिकी ने आगत लगभग पांच सौ खाटू नरेश भक्तों को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम का शुभारंभ श्रीश्याम सेवा ट्रस्ट, झारपाड़ा के महासचिव सुरेश कुमार अग्रवाल द्वारा बाबा के तीन बार के जयकारे से हुआ। महासचिव ने आमंत्रित भजन गायिका पूनम सुरेखा तथा गायक अमित सेठ का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनका स्वागत अंगवस्त्र भेंटकर किया। अवसर पर सेवा ट्रस्ट के अध्यक्ष पवन कुमार गुप्ता,ट्रस्टी शिवकुमार अग्रवाल, कोषाध्यक्ष कैलाश अग्रवाल, ट्रस्टी राजेश मोड़ा समेत मारवाड़ी सोसायटी, भुवनेश्वर तथा उसके समस्त घटक संगठनों के अनेक बाबा भक्त सपरिवार उपस्थित थे। आंवला एकादशी होने के चलते बाबा के दर्शन के लिए मंदिर में भक्तों की अपार भीड़ थी।

'खामोशी के नोटिफिकेशन'

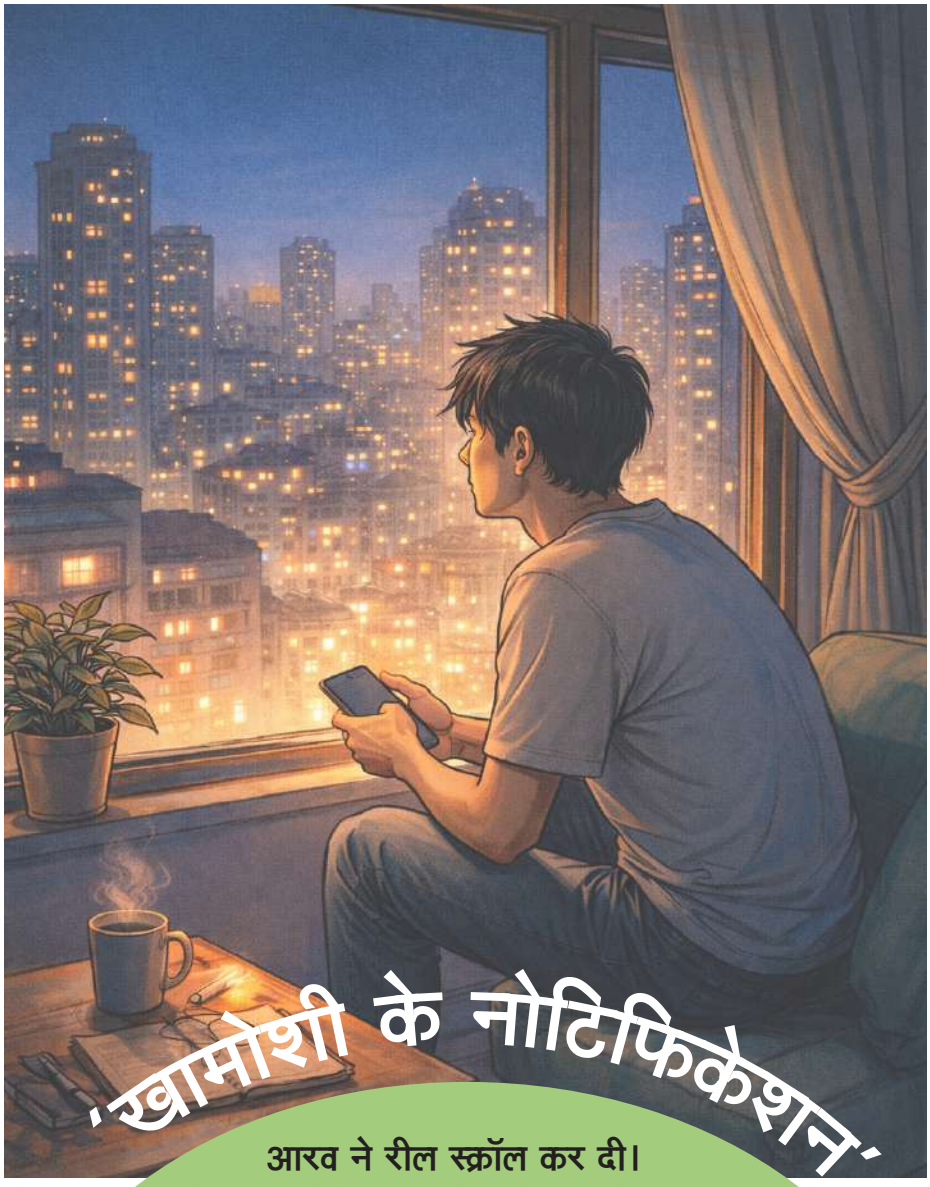

आरव ने रील स्क्रॉल कर दी। उसे लगा जैसे किसी ने उसे एक ऐसी दुनिया दिखा दी हो, जिसमें वह कभी शामिल नहीं था। ऑफिस पहुँचा तो एसी की ठंडक ने चेहरे को सुन्न कर दिया। क्यूबिकल्स की कतारें थीं–मानो इंसानों के लिए बने छोटे-छोटे पिंजरे। उसकी टीम में आठ लोग थे। सब बात करते थे, मीम्स शेयर करते थे, लेकिन आरव हमेशा बातचीत का आखरी स्टेशन था–जहाँ बात पहुँचती तो रुक जाती। 'आरव, आज लंच बाहर?' 'नहीं यार, काम है।' वह झूठ नहीं बोल रहा था। काम उसके लिए बहाना नहीं था, शरणस्थली थी। लंच ब्रेक में वह छत पर चला गया। वहाँ एक लड़की बैठी थी–नीला दुपट्टा, कानों में हेडफोन।

सुबह का अलार्म सात बजे बजता है, लेकिन आरव पाँच मिनट पहले ही जाग गया था। मोबाइल की स्क्रीन अब उसके लिए घड़ी से ज़्यादा एक आदत बन चुकी थी–आँख खुलते ही उँगली अपने आप स्क्रीन पर फिसल जाती।

न कोई शुभ प्रभात का मैसेज, न किसी का कॉल। सिर्फ़ ऐप्स की पंक्तियाँ थीं, जैसे सैनिक परेड में खड़े हों–व्हाट्सऐप, इंस्टाग्राम, मेल, न्यूज़।

आरव ने मोबाइल बंद किया और छत की ओर देखने लगा।

कमरे की दीवारें हल्के नीले रंग की थीं, पर उसे हमेशा ग्रे लगती थीं। शायद इसलिए कि उसने इस कमरे में कभी ज़ोर से हँसना नहीं सीखा।

मुंबई की यह चॉलनुमा इमारत बाहर से ज़िंदा दिखती थी–बालकनी में टंगे कपड़े, नीचे चाय की दुकान, सामने सब्ज़ीवाले की आवाज़–पर आरव के कमरे में एक स्थायी सन्नाटा था।

सन्नाटा ऐसा कि उसमें भी शोर सुनाई देता था–अपने ही दिल की धड़कन का।

वह बाथरूम में गया। शीशे में अपनी शक्ल देखी–पच्चीस साल का चेहरा, पर आँखों में थकान किसी अधेड़ आदमी की थी।

कंपनी में लोग उसे 'स्मार्ट बॉय' कहते थे। वह डेटा एनालिस्ट था। नंबरों की भाषा समझता था, पर इंसानों की नहीं।

नहाने के बाद उसने कॉफी बनाई। माँ का फ़ोन आया।

'उठ गया?'

'हाँ माँ।'

'नाश्ता किया?'

'कर लूँगा।'

'अकेले रहना ठीक नहीं है बेटा, कोई ढूँढ ले साथ रहने को।'

आरव हँस दिया–हँसी ऐसी जैसे किसी पुरानी फ़िल्म की रिकॉर्डिंग चल रही हो।

'ऑफिस देर हो रही है माँ।'

माँ चुप हो गई।

उस चुप्पी में गाँव की दूरी थी, और शहर की बेरुखी।

ऑफिस मेट्रो से पचास मिनट दूर था।

भीड़ में खड़ा आरव अपने आप से बाहर निकल जाता था। चारों तरफ़ लोग थे–कोई फोन पर हँस रहा था, कोई वीडियो देख रहा था, कोई

किसी को डाँट रहा था।

पर उस भीड़ में कोई भी आरव को नहीं देख रहा था।

उसने मोबाइल खोला। इंस्टाग्राम पर एक रील चल रही थी–दो लोग पहाड़ों पर हँसते हुए चाय पी रहे थे। नीचे कैप्शन थाः

'Best moments with best people.'

आरव ने रील स्क्रॉल कर दी।

उसे लगा जैसे किसी ने उसे एक ऐसी दुनिया दिखा दी हो, जिसमें वह कभी शामिल नहीं था।

ऑफिस पहुँचा तो एसी की ठंडक ने चेहरे को सुन्न कर दिया।

क्यूबिकल्स की कतारें थीं–मानो इंसानों के लिए बने छोटे-छोटे पिंजरे।

उसकी टीम में आठ लोग थे। सब बात करते थे, मीम्स शेयर करते थे, लेकिन आरव हमेशा बातचीत का आखरी स्टेशन था–जहाँ बात पहुँचती तो रुक जाती।

'आरव, आज लंच बाहर?'

'नहीं यार, काम है।'

वह झूठ नहीं बोल रहा था।

काम उसके लिए बहाना नहीं था, शरणस्थली थी।

लंच ब्रेक में वह छत पर चला गया।

वहाँ एक लड़की बैठी थी–नीला दुपट्टा, कानों में हेडफोन। वह कुछ लिख रही थी।

आरव ने दूर से उसे देखा।

किसी को देखते हुए उसके भीतर एक अजीब डर पैदा हुआ–जैसे बात करने की कोशिश में खुद को उजागर करना पड़ेगा।

वह छत के दूसरे कोने में खड़ा हो गया।

मुंबई नीचे दौड़ रही थी–बसें, लोग, धूप, धुआँ।

सब कुछ चल रहा था, सिर्फ़ उसका मन रुका हुआ था।

उसे कॉलेज के दिन याद आए।

कॉलेज में वह बहुत अलग नहीं था।

उसके पास दोस्त थे–या यूँ कहें, दोस्त होने का अभिनय था।

हॉस्टल के कमरे में सब रात भर बातें करते, लेकिन आरव चुप रहता।

एक दिन उसके रूममेट ने कहा था–

'तू इतना कम क्यों बोलता है? डर लगता है क्या?'

आरव ने जवाब नहीं दिया।

असल में वह डरता था–गलत बोल देने से, बेवजह ज़रूरी बन जाने से, किसी के लिए ज़्यादा बन जाने से।

उसने कभी किसी लड़की से खुलकर बात नहीं की थी।

मोबाइल पर चैट होती थी, पर असली आवाज़ में नहीं।

टाइप करते समय वह सोच सकता था।

बोलते समय उसे खुद से डर लगता था।

छत पर बैठी लड़की उठकर चली गई।

आरव ने राहत की साँस ली, जैसे किसी परीक्षा से बच गया हो।

दोपहर ढल गई।

काम खत्म हुआ।

शाम को वह उसी मेट्रो में लौट रहा था।

एक बच्चा अपनी माँ से पूछ रहा था–

'मम्मी, सब लोग फोन क्यों देख रहे हैं?'

माँ ने कहा–

'क्योंकि फोन में दुनिया है।'

आरव ने सोचा–

अगर फोन में दुनिया है, तो दिल में क्या है?

रात को कमरे में लौटकर उसने टीवी चलाया।

न्यूज़, फिर एक सीरियल, फिर बंद।

उसने डायरी निकाली।

बहुत दिनों बाद।

पहला वाक्य लिखा–

'आज मैंने किसी से बात नहीं की।'

फिर काट दिया।

दूसरा वाक्य लिखा–

'आज भी लोग थे, पर कोई अपना नहीं।'

यह वाक्य रहने दिया।

उसने खिड़की से बाहर देखा।

नीचे चाय की दुकान पर चार लोग हँस रहे थे। हँसी की आवाज़ ऊपर तक आ रही थी।

उसने मोबाइल उठाया।

नोटिफिकेशन आया–

Your screen time today: 6 hours 12 minutes.

आरव हँस पड़ा।

'छह घंटे किसी से बात की, फिर भी अकेला हूँ।'

उसने लाइट बंद की।

अँधेरे में आँखें खुली रहीं।

उसके मन में एक ही सवाल घूम रहा था–

क्या अकेलापन लोगों के न होने से आता है, या खुद से भागने से?

खिड़की के बाहर मुंबई सो नहीं रही थी।

पर आरव के भीतर एक लंबी रात शुरू हो चुकी थी।

अगले दिन आरव जानबूझकर लंच के समय छत पर चला गया।

वह खुद से नाराज़ था कि कल उसने उस लड़की से बात नहीं की।

नाराज़ इस बात से भी कि वह हर बार ऐसा ही करता है–कोई पास आता है, वह भीतर लौट जाता है।

छत खाली थी।

हवा में हल्की धूप थी और सीमेंट गरम हो चुका था।

आरव रेलिंग पर हाथ रखकर खड़ा हो गया।

कुछ देर बाद वह लड़की आई।

नीला दुपट्टा, वही हेडफोन।

आज उसके हाथ में डायरी नहीं, एक किताब थी।

आरव ने किताब का नाम पढ़ने की कोशिश की, पर दूर से साफ़ नहीं दिखा।

उसने हिम्मत जुटाई।

'आप रोज़ यहाँ आती हैं?'

आवाज़ हल्की काँप गई।

लड़की ने हेडफोन निकाला।

'हां... शोर से बचने।'

उसकी आवाज़ सीधी थी, बिना बनावट।

'मैं आरव।'

'नंदिनी।'

एक सेकंड का सन्नाटा।

वही सन्नाटा जो दो अजनबियों के बीच पुल बन सकता था या दीवार।

'आप क्या पढ़ रही हैं?'

आरव ने पूछा।

'डायरी नहीं, दूसरों की कहानियाँ।'

नंदिनी ने किताब दिखायी।

'लोगों को समझने के लिए।'

आरव मुस्कराया।

'मैं नंबरों को समझता हूँ, लोगों को नहीं।'

नंदिनी ने उसे देखा।

'तो यहाँ क्यों आते हो?'

आरव ने जवाब नहीं दिया।

वह पहली बार किसी सवाल से भाग नहीं पाया।

'शायद... खुद से मिलने।'

उसने कहा।

नंदिनी हँसी नहीं।

उसने सिर हिलाया, जैसे बात समझ गई हो।

वे रोज़ छत पर मिलने लगे।

बातें छोटी होतीं–कॉफी, ऑफिस, ट्रैफिक।

पर हर बात के नीचे एक अनकहा वाक्य होता–

हम दोनों अकेले हैं।

एक दिन नंदिनी ने पूछा–

'तुम घर फोन क्यों नहीं करते?'

'करता हूँ।'

'पर सच में बात क्यों नहीं करते?'

आरव चुप रहा।

'क्योंकि अगर सच बोल दूँ तो माँ को चिंता होगी।'

'और अगर झूठ बोलो तो?'

'तो मैं अकेला रहूँगा।'

नंदिनी ने किताब बंद की।

'तुम पहले से अकेले हो।'

यह वाक्य सीधा दिल में लगा।

उसी रात आरव को सपना आया।

वह स्कूल में खड़ा है।

सब बच्चे खेल रहे हैं।

वह किनारे बैठा है।

उसका पिता सामने खड़ा है।

कह रहा है–

'कम बोलो। लोग हँसेंगे।'

पिता की आवाज़ हमेशा आदेश जैसी थी।

घर में शांति का मतलब था–कोई सवाल नहीं, कोई भावना नहीं।

जब आरव बारह साल का था, उसने एक बार रोते हुए कहा था–

'मुझे दोस्त नहीं हैं।'

पिता ने कहा था–

'पढ़ाई करो, दोस्त अपने आप बनेंगे।'

दोस्त नहीं बने।

पढ़ाई बढ़ती गई।

चुप्पी आदत बन गई।

ऑफिस में एक मीटिंग हुई।

प्रोजेक्ट की गलती आरव की नहीं थी, पर बॉस ने सबके सामने कहा–

'आरव, तुम कुछ बोलते क्यों नहीं? तुम्हें लगता है सब ठीक है?'

सारी आँखें उसकी ओर थीं।

गला सूख गया।

'सॉरी सर।'

बस यही निकला।

नंदिनी ने बाद में पूछा–

'तुमने सच क्यों नहीं कहा?'

'क्योंकि लड़ाई नहीं करना चाहता।'

'या डरते हो?'

आरव चुप रहा।

'डर और शांति में फर्क है,' नंदिनी बोली।

'शांति तब होती है जब तुम खुद को बचाते हो, डर तब जब खुद को खो देते हो।'

एक दिन नंदिनी नहीं आई।

दूसरा दिन भी नहीं।

तीसरे दिन आरव बेचैन हो गया।

छत सूनी लगने लगी।

उसने नीचे रिसेप्शन पर पूछा–

'नंदिनी आई?'

'उसने रिज़ाइन कर दिया।'

'क्यों?'

'घर में कुछ समस्या है।'

आरव को लगा जैसे किसी ने उसका एकमात्र दरवाज़ा बंद कर दिया हो।

उस रात उसने माँ को फोन किया।

पहली बार देर तक बात की।

'माँ, मुझे यहाँ अच्छा नहीं लगता।'

दूसरी तरफ़ चुप्पी थी।

'तो वापस आ जा।'

माँ बोली।

आरव ने कहा–

'पर मैं खुद से भाग रहा हूँ।'

माँ कुछ देर चुप रही।

फिर बोली–

'भागना बुरा नहीं बेटा, अगर लौटना आता हो।'

अगले हफ्ते उसे नंदिनी का मैसेज आया।

'मैं जा रही हूँ। तुमसे कहना था – बोलना सीखो। वरना लोग तुम्हारे अंदर के आदमी को कभी नहीं देख पाएँगे।'

आरव देर तक स्क्रीन देखता रहा।

उसने जवाब लिखा–

'तुमने मुझे देखा।'

फिर डिलीट कर दिया।

लिखा–

'धन्यवाद।'

भेज दिया।

यह उसका सबसे लंबा सच था।

उस रात उसने डायरी खोली।

'आज पहली बार किसी के जाने से फर्क पड़ा।'

फिर लिखा–

'शायद अकेलापन आदत नहीं, एक चेतावनी है।'

खिड़की के बाहर वही चाय की दुकान, वही हँसी। पर आज वह आवाज़ दूर नहीं लगी।

आरव जान गया था–

टूटन बाहर नहीं थी, अंदर थी।

और टकराव अब शुरू हुआ था।

नंदिनी के जाने के बाद छत सूनी हो गई थी।

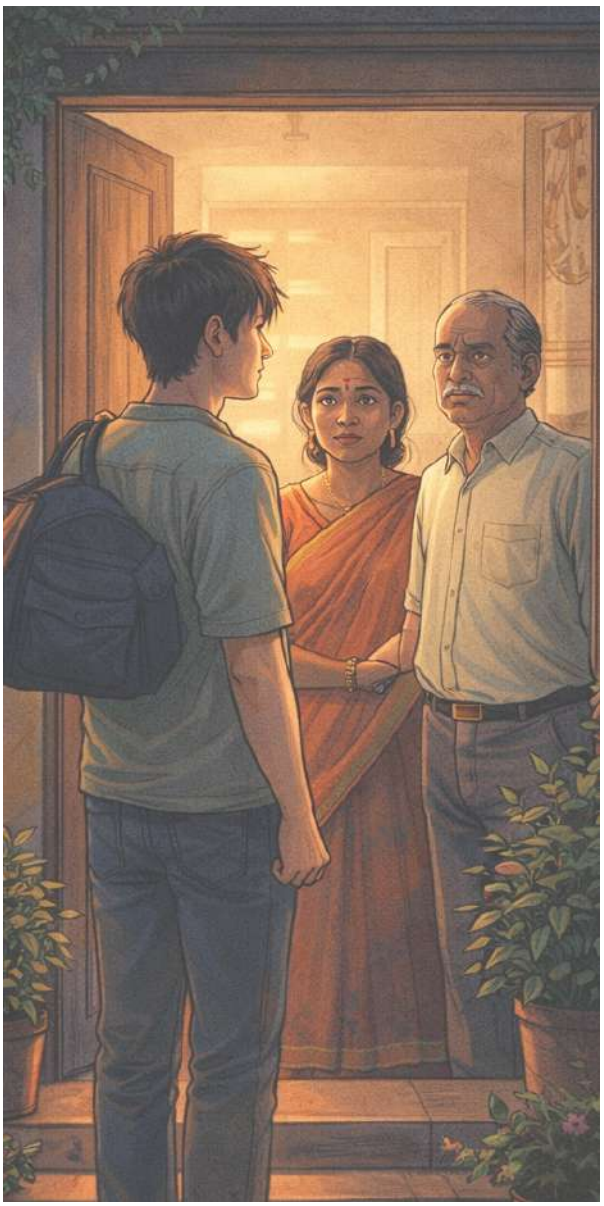

वह जगह अब किसी स्मृति की तरह लगती– जहाँ पहले शब्द आते थे, अब हवा आती थी।

आरव कई दिनों तक वहाँ नहीं गया।

लंच ब्रेक में वह अपनी कुर्सी पर ही बैठा रहता। स्क्रीन पर कोड चलता रहता और भीतर खालीपन।

उसने मोबाइल कम इस्तेमाल करना शुरू किया।

नोटिफिकेशन पहले जैसे ही आते थे, पर अब वह उन्हें खोलने से पहले रुकता।

एक दिन उसने स्क्रीन टाइम देखा–

चार घंटे।

पहले से कम।

उसे लगा, जैसे उसने खुद से एक छोटा समझौता किया हो।

ऑफिस में मीटिंग हुई।

इस बार भी गलती किसी और की थी।

बॉस बोला–

'आरव, तुम कुछ कहना चाहोगे?'

कमरा शांत था।

पुराना आरव चुप रहता।

लेकिन इस बार उसने साँस ली। 'सर, ये डेटा मेरी रिपोर्ट से अलग है। गलती यहाँ नहीं, यहाँ है।'

शब्द धीमे थे, पर साफ़ थे।

बॉस ने स्क्रीन देखी।

'ओह... ठीक है।'

मीटिंग आगे बढ़ गई।

कोई तालियाँ नहीं बजीं।

कोई नायक नहीं बना।

पर आरव को लगा जैसे उसने खुद को पहली बार सुना दिया हो।

उस शाम वह जल्दी घर लौटा।

रास्ते में उसने किताबों की एक दुकान देखी।

अचानक अंदर चला गया।

वहाँ एक छोटी सी शेल्फ़ पर लिखा था–

'कहानी और अकेलापन'

उसने एक किताब उठाई।

पन्ना खोला।

'मनुष्य भीड़ में नहीं, संवाद में जीता है।'

वाक्य उसे चुभ गया।

उसने किताब खरीद ली।

घर पहुँचकर उसने माँ को फोन किया।

'माँ, मैं अगले महीने आ रहा हूँ।'

'छुट्टी लेकर?'

'नहीं... रहने।'

माँ कुछ देर चुप रही।

'तुम हार गए?'

आरव बोला–

'नहीं माँ... मैं खुद को देखने आ रहा हूँ।'

फोन के उस पार किसी ने धीरे से रोने की आवाज़ छुपाई।

अगले दिन वह फिर छत पर गया।

वही जगह, वही हवा।

इस बार कोई नंदिनी नहीं थी।

एक नया लड़का वहाँ बैठा था।

फोन पर किसी से बहस कर रहा था।

आरव ने उसे देखा।

कुछ पल रुका।

'अगर चाहो तो नीचे चाय अच्छी मिलती है।' उसने कहा।

लड़का चौंका।

'हाँ... ठीक है।'

दोनों नीचे आए।

चाय की दुकान पर चार लोग हँस रहे थे।

आज उनमें पाँचवाँ आरव था।

बात लंबी नहीं चली।

नाम भी नहीं पूछा।

पर वह पल असली था।

रात को उसने डायरी खोली।

'आज मैंने एक अजनबी से बात की।'

फिर लिखा–

'मैं अब भी अकेला हूँ।

पर अब अकेलापन मुझे डराता नहीं।

वह मुझे बताता है कि मुझे बोलना है।'

उसने आखरी पंक्ति लिखी–

'शायद दुनिया में सबसे बड़ा नोटिफिकेशन यह है कि कोई हमें सुने – और उससे भी बड़ा कि हम खुद को सुनें।'

लाइट बंद की।

खिड़की के बाहर वही मुंबई थी–शोर, रोशनी, लोग। पर आरव के भीतर अब एक धीमी आवाज़ चल रही थी– भागने की नहीं, रहने की। ■

- नेहा सिंह

आवाज़

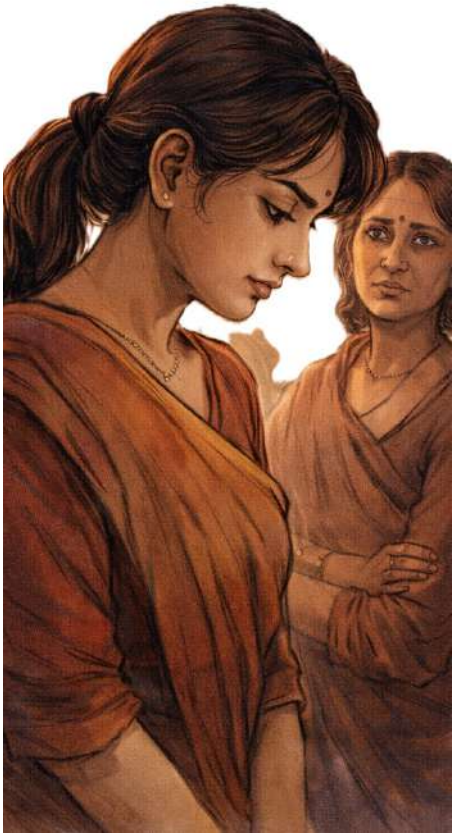

कुछ औरतें चीखकर नहीं बोलतीं, वे धीरे-धीरे चुप्पी तोड़ती हैं। रेखा भी उन्हीं में से एक थी। उसकी दुनिया रसोई की भाप, बच्चों की कॉपियों और रिश्तों की ज़िम्मेदारियों में सिमटी हुई थी। वह बोलती थी, पर उसकी आवाज़ सुनी नहीं जाती थी। वह हँसती थी, पर अपने लिए नहीं। उसे कभी लगा ही नहीं था कि एक दिन उसकी चुप्पी सवाल बनेगी और उसका डर ताक़त में बदल जाएगा। यह कहानी किसी विद्रोह की नहीं, बल्कि उस औरत की है जिसने पहली बार अपने होने को महसूस किया। यह कहानी है – एक साधारण गृहिणी के असाधारण जागरण की। यह कहानी है – आवाज़ की।

सुबह पाँच बजे का अलार्म बजते ही रेखा की आँख खुल गई। अलार्म से पहले ही नींद टूट जाती थी, पर वह फिर भी मोबाइल रखती थी – जैसे किसी मशीन को यह जताना हो कि वह भी किसी नियम में बँधी है।

रसोई में जाकर उसने गैस जलाई।

चाय की केतली चढ़ाई।

घर अभी सो रहा था।

रेखा को यह समय अच्छा लगता था –

जब वह अकेली होती थी।

कोई माँ नहीं, कोई बहू नहीं, कोई पत्नी नहीं। सिर्फ़ एक इंसान।

उसने खिड़की से बाहर देखा।

सामने की इमारत में भी एक औरत झाड़ू लगा रही थी।

दोनों की आँखें मिलीं।

कोई मुस्कान नहीं, बस पहचान।

रेखा की शादी को बारह साल हो चुके थे।

पति – अनिल।

दो बच्चे – आर्यन और पायल।

सास – कमला देवी।

काग़ज़ पर यह एक पूरा परिवार था।

हकीकत में – यह एक लगातार चलता हुआ काम था।

'रेखा, नमक कम है।'

'रेखा, दूध उबल गया।'

'रेखा, आर्यन की यूनिफॉर्म प्रेस की?'

हर आवाज़ आदेश जैसी थी।

कभी किसी ने नहीं पूछा –

'रेखा, तुम ठीक हो?'

रेखा ने बी.ए. किया था।

कॉलेज में वह बहस प्रतियोगिता जीतती थी।

शिक्षक कहते थे –

'तुम बहुत आगे जाओगी।'

पर शादी के बाद आगे जाने का रास्ता रसोई से होकर निकलता था।

एक दिन उसने अनिल से कहा था –

'मैं फिर से नौकरी करना चाहती हूँ।'

अनिल ने टीवी से नज़र हटाए बिना कहा –

'घर कौन संभालेगा?'

यही सवाल था, जिसमें उसका सपना डूब गया।

सास का नियम साफ़ था:

'बहू घर की इज़्ज़त होती है, बाहर की नहीं।'

रेखा ने कभी जवाब नहीं दिया।

उसने चुप्पी को संस्कार समझ लिया था।

हर महीने महिला दिवस आता।

टीवी पर कार्यक्रम होते –

'महिलाएँ आगे बढ़ रही हैं।'

रेखा बर्तन माँजते हुए देखती और सोचती –

'मैं कहाँ जा रही हूँ?'

एक दिन स्कूल में मीटिंग थी।

पायल की टीचर ने कहा –

'आपकी बेटी बहुत अच्छा बोलती है, उसे मंच देना चाहिए।'

रेखा की आँखें चमक गईं।

उसने कहा –

'मेरी बेटी मुझसे बेहतर बनेगी।'

घर आकर उसने अनिल से कहा –

'पायल को डांस क्लास में डालना है।'

अनिल बोला –

'पैसे पेड़ पर नहीं उगते।'

रेखा चुप हो गई।

उसी रात उसने अपनी पुरानी डायरी निकाली।

पीले पड़े पन्ने।

एक पन्ने पर लिखा था:

'मैं ऐसी ज़िंदगी नहीं जीऊँगी जिसमें मेरी आवाज़ न हो।'

रेखा देर तक उस वाक्य को देखती रही।

'मैं कब बदल गई?'

उसने खुद से पूछा।

अगले दिन सास ने कहा –

'आज रिश्तेदार आ रहे हैं,

अच्छे कपड़े पहनना।'

रेखा ने साड़ी निकाली।

काजल फुट वेयर

हमारे यहां सभी प्रकार के फुटवेयर उपलब्ध है

कर्जत स्टेशन के पास (वेस्ट)

स्पेशल ऑफर के साथ

आईने में खुद को देखा।
उसे लगा जैसे वह खुद को नहीं पहचानती।
उसी दिन पड़ोस में रहने वाली मीना आई।
वह सिलाई का काम करती थी।
'रेखा दीदी, आप भी सीख लो।
घर बैठे पैसे मिलेंगे।'
रेखा ने पहली बार बिना डर कहा –
'मुझे भी कुछ करना है।'
सास ने सुना। 'और घर?'
रेखा ने जवाब नहीं दिया।
पर अंदर कुछ हिला।
रात को जब सब सो गए, रेखा छत पर गई।
आसमान में आधा चाँद था।
उसने सोचा – 'अगर मैं नहीं बदली,
तो मेरी बेटी भी यही सीखेगी – चुप रहना।'
पहली बार उसे चुप्पी डराने लगी।
सुबह अखबार में मोटे अक्षरों में लिखा थाः
'८ मार्च – अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस'
रेखा ने अखबार मोड़ा नहीं।
उसे देर तक देखा।
उसके भीतर एक सवाल उठ रहा था –
क्या यह दिन सिर्फ़ अखबार के लिए है,
या मेरे लिए भी?
रसोई में जाते हुए उसने महसूस किया –
आज वह पहले जैसी नहीं थी।
संघर्ष अब बाहर नहीं,
भीतर शुरू हो चुका था।
महिला दिवस वाले दिन घर में कोई
बदलाव नहीं था।
सुबह वही चाय,
वही रोटी,
वही आदेश।
रेखा ने अखबार मोड़कर रसोई की अलमारी में रख दिया। पर उसके भीतर का वाक्य नहीं मुड़ा– 'क्या यह दिन सिर्फ़ पोस्टर के लिए है?'
उसने मीना से सिलाई सीखना शुरू कर दिया। दोपहर को, जब बच्चे स्कूल में होते
और सास सोती, वह मशीन चलाती।
पहले दिन उँगली में सुई चुभी।
खून निकला।
मीना घबरा गई–
'दीदी, छोड़ दो।'
रेखा ने उँगली मुँह में रखी और बोली–
'पहली बार दर्द मेरा अपना है।'
मीना कुछ नहीं समझी।
रेखा समझ गई।
एक दिन सास ने मशीन की आवाज़ सुन ली।
'ये क्या चल रहा है?'
'सिलाई सीख रही हूँ।'
'किसके लिए?'
'अपने लिए।'
कमला देवी ने गुस्से से कहा–
'घर का काम कम है क्या?'
रेखा ने पहली बार आँख उठाकर कहा–
'घर चलता रहेगा।
मैं भी चलना चाहती हूँ।'
कमरे में सन्नाटा छा गया।
शाम को अनिल को पता चला।
'तुमने पूछे बिना ये सब शुरू कर दिया?'
'मैंने बताया था।'
'मैंने मना किया था।'
'आपने सुना नहीं।'
अनिल ने कुर्सी खिसकाई।

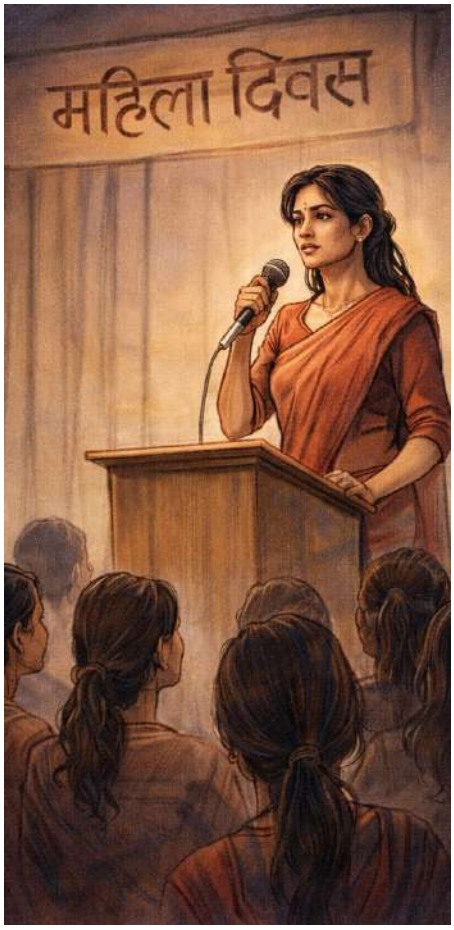

'ये नाटक बंद करो।
लोग क्या कहेंगे?'
रेखा ने धीमी आवाज़ में कहा–
'लोग हमेशा कहते हैं।'
पहली बार उसका स्वर काँपा नहीं।
अगले हफ्ते उसने पहली कमाई की –
तीन सौ रुपये। उसने वो पैसे साड़ी में नहीं,
अपनी डायरी में रखे।
पायल ने पूछा– 'माँ, ये क्या?'
'मेरी मेहनत।'
बेटी ने मुस्कराकर कहा–
'मैं भी बड़ी होकर काम करूँगी।'
रेखा को लगा जैसे किसी ने उसकी पीठ थपथपाई हो।
एक दिन सास बीमार पड़ गई।
सारा घर उल्टा-पुल्टा।
अनिल बोला–
'अब ये सिलाई-विलाई छोड़ो।'
रेखा ने जवाब नहीं दिया।
पर उसने मशीन बंद भी नहीं की।
वह अस्पताल गई, खाना बनाया,
बच्चों को पढ़ाया – और रात को कपड़े सिले।
थकान से पैर काँप रहे थे।
पर भीतर कुछ सीधा खड़ा था।
पड़ोस की औरतें बातें करने लगीं।
'रेखा बदल गई है।'
'अब जवाब देती है।' 'कामवाली बन गई है।'
रेखा सुनती थी। पहले चुप रहती थी।
अब अनसुना करती थी।
एक दिन स्कूल में महिला दिवस का
कार्यक्रम था। टीचर ने कहा–
'किसी माँ को मंच पर बोलना है।'
रेखा का नाम आया।
उसके हाथ काँपने लगे।
घर आकर उसने कहा–
'मैं स्कूल में बोलने जा रही हूँ।'
अनिल ने कहा–
'ज़रूरत नहीं।'
रेखा बोली– 'मेरे लिए है।'
पहली बार वाक्य पूरा था।
कार्यक्रम वाले दिन उसने
साधारण साड़ी पहनी।
मेकअप नहीं किया।
सिर्फ़ बाल बाँधे।
माइक हाथ में लिया तो उसे कॉलेज के
दिन याद आए। 'मैं रेखा हूँ।
एक माँ, एक पत्नी,
और एक औरत।'
हॉल शांत था।
'मैंने बारह साल तक सिर्फ़ सुना।

Ram Creations
Jewelry & Gifts
28974 Orchard Lake Rd, Farmington Hills | ramcreations.com | (248) 851-1400

WORLD PLAYER
WORLD PLAYER MENSWEAR
MEGABUY
₹149-499
SAVE ₹ 100
MENS 100% CORDUROY 16 WALE WASHED SHIRTS
MRP ₹ 599
MEGABUY
₹ 499
SAVE ₹ 100
MENS 100% COTTON SEMI FORMAL SHIRTS
MRP ₹ 599
MEGABUY
₹ 499
SAVE ₹ 100
MENS FORMAL TROUSERS
MRP ₹ 699
MEGABUY
₹ 599

आज पहली बार बोल रही हूँ।'
कुछ औरतों की आँखें भर आईं।
'अगर मेरी बेटी मुझसे ज़्यादा आज़ाद होगी,
तो यही मेरा महिला दिवस है।'
तालियाँ बजीं।
रेखा ने पहली बार खुद को सुना।
घर लौटी तो सास ने कहा–
'बहुत नाम कमा आई?'
रेखा बोली– 'थोड़ा आत्मसम्मान।'
अनिल कुछ नहीं बोला।
उस रात रेखा सो नहीं पाई।
डर भी था। सुकून भी।
वह जानती थी– अब पीछे लौटना आसान नहीं होगा। संघर्ष शुरू हो चुका था।
महिला दिवस के कार्यक्रम से लौटते
समय रेखा के कदम भारी थे।
तालियाँ अब भी उसके कानों में गूँज रही थीं,
पर घर की चौखट पास आती जा रही थी –

वही चौखट जहाँ उसकी आवाज़ बरसों से धीमी थी।
घर में घुसते ही सास ने कहा–
'बहुत बड़ा भाषण देकर आई होगी।'
रेखा ने चुपचाप चप्पल उतारी।
पहले की रेखा सिर झुका लेती।
आज उसने आँख उठाकर कहा–
'हाँ, आज मैंने अपनी बात कही।'
कमरे में सन्नाटा छा गया।
अनिल अखबार पढ़ रहा था।
उसने काग़ज़ नीचे रखा।
'ये सब ज़रूरी था?'
'मेरे लिए था।' रेखा की आवाज़ धीमी थी,
पर डगमगाई नहीं।
'तुम्हें घर की इज़्ज़त का ध्यान नहीं?'
'इज़्ज़त चुप रहने से नहीं,
खुद को मान देने से बनती है।'
यह वाक्य पहली बार घर की
दीवारों से टकराया।
रात को पायल उसके पास आकर लेट गई।
'माँ, तुम स्टेज पर बहुत अच्छी लग रही थीं।'
रेखा ने बेटी को सीने से लगा लिया।
उस पल उसने समझ लिया –
अगर वह पीछे हटी, तो पायल भी पीछे
रह जाएगी।
अगले दिन रेखा ने सिलाई का काम बढ़ा दिया। अब वह सिर्फ पड़ोस के नहीं,
स्कूल के कपड़े भी सिलने लगी।
पहली बार उसके हाथ में महीने के अंत
में चार हज़ार रुपये आए।
उसने पैसे अनिल के हाथ में नहीं दिए।
डायरी में रख दिए।
सास ने कहा– 'अब कमाने लगी तो
घर भूल जाएगी?'
रेखा बोली– 'नहीं माँजी,
अब घर समझने लगी हूँ।'
एक शाम अनिल बोला–
'तुम बदल गई हो।'
रेखा ने कहा–
'हाँ, क्योंकि मैं खो गई थी।'
अनिल चुप हो गया।
वह पहली बार सोच रहा था कि
रेखा सिर्फ पत्नी नहीं, इंसान भी है।
स्कूल से फोन आया।
'हम एक महिला समन्वयक रख रहे हैं,
आप आवेदन कर सकती हैं।'
रेखा ने फोन रखते समय हाथ
काँपते हुए कहा–
'मैं कोशिश करूँगी।'
उस रात उसने अनिल से कहा–
'मुझे नौकरी का मौका मिला है।'
अनिल ने लंबी साँस ली।
'और पायल?'
'मैं सुबह स्कूल छोड़ूँगी,
शाम को लाऊँगी।
घर नहीं टूटेगा... बदलेगा।'
सास ने ताना मारा–
'बहू नौकरी करेगी तो घर कौन देखेगा?'
रेखा बोली–
'घर हम सब मिलकर देखेंगे।'
कमरे में फिर सन्नाटा हुआ।
पर यह सन्नाटा डर का नहीं था।
नौकरी का पहला दिन।
रेखा ने वही साधारण साड़ी पहनी।
पायल ने कहा– 'माँ, आज तुम टीचर जैसी लग रही हो।' रेखा मुस्करा दी।
ऑफिस जाते समय उसके कदम
काँप रहे थे, पर दिल सीधा था।
छह महीने बाद।
रेखा सुबह बच्चों का टिफिन बनाती,
फिर स्कूल जाती,
फिर शाम को घर लौटती।
सास अब भी नाराज़ रहती,
पर आवाज़ धीमी पड़ गई थी।
अनिल कभी-कभी चाय बना देता।
पायल गर्व से सहेलियों से कहती–
'मेरी माँ ऑफिस जाती है।'
महिला दिवस फिर आया।
इस बार रेखा दर्शकों में बैठी थी।
मंच पर एक नई लड़की बोल रही थी–
'मेरी माँ ने मुझे सिखाया कि
चुप रहना संस्कार नहीं, डर है।'
रेखा की आँखें भर आईं।
उसने डायरी खोली और लिखा–
'मैंने घर नहीं छोड़ा।
मैंने खुद को पाया।
और यही मेरी सबसे बड़ी नौकरी है।'
खिड़की के बाहर वही गली थी, वही लोग।
पर रेखा अब वही औरत नहीं थी।
उसकी चुप्पी टूट चुकी थी।
अब उसकी आवाज़ घर में भी थी –
और दुनिया में भी। ■

- गीता सैनी

Good Vibes Onion Hairfall Control Oil I Strengthening I Hair Growth I No Parabens, No Sulphates, No Mineral Oil, No Animal Testing (100 ml)

Good Vibes Argan Oil Hairfall Control Vitalizing Serum I Frizz Control, Shine, Stregthening I No Parabens, No Sulphates, No Animal Testing (50 ml)

स्वर्णिम मुंबई

प्रतियोगिता नंबर-106

सभी के लिए सुनहरा अवसर!

दीजिए आसान से सवालों का जवाब और

जीतिये 2,000/- का नकद इनाम!

१. किसका गुणसूत्र संतान में लिंग निर्धारण के लिए उत्तरदायी है?
२. किस अनुच्छेद के तहत विधि के समक्ष समानता वर्णित है?
३. शिवाजी के मंत्रिमंडल को क्या कहा जाता है?
४. शिवाजी ने किस भाषा को राजभाषा बनाया?
५. 'तरणेतर मेला' किस राज्य का प्रसिद्ध मेला है?
६. चंद्रमा पर गुरुत्वाकर्षण का मान पृथ्वी पर के गुरुत्वाकर्षण के मात्रा का कितना है?
७. कौन भारत का अंतिम वायसराय था?
८. भारत की कौन-सी पंचवर्षीय योजना में खादी एवं ग्रामीण उद्योग आयोग की स्थापना की गयी थी?
९. 'आर्य समाज' की स्थापना किस वर्ष की गई?
१०. 'क्षमावाणी' किस धर्म से संबंद्ध त्योहार है?
११. शून्य में स्वतंत्र रूप से गिरने वाली वस्तुओं का त्वरण क्या होता है?
१२. किस अनुच्छेद में लोक नियोजन के विषय में अवसर की समता प्रदान की गई है?
१३. किस विधि द्वारा मिश्रण में उपस्थित घटकों का पृथक्करण किया जाता है?
१४. किसने 'आर्य समाज' की स्थापना की?
१५. 'नवरोज' किन लोगों का नव वर्ष दिवस है?
१६. सौरमंडल का सबसे छोटा उपग्रह कौन-सा है?
१७. रोहिणी श्रेणी के प्रथम उपग्रह का प्रक्षेपण किस वर्ष किया गया?
१८. तृतीय पंचवर्षीय योजना का काल क्या था?
१९. किसने कहा विदेशी राज चाहे कितना अच्छा क्यों न हो, स्वदेशी राज की तुलना में कभी अच्छा नहीं हो सकता?
२०. 'उगादी उत्सव' किस राज्य में मनाया जाता है?

आपके द्वारा सही जवाब की पहेली इस माह की २५ तारीख तक डाक द्वारा हमारे कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए। भरी गयी पहेली का रिजल्ट लॉटरी सिस्टम द्वारा निकाला जाएगा। विजेता के नाम और सही हल अगले माह के अंक में प्रकाशित किये जाएंगे। परिजन विजेता बच्चे का फोटो व उसका पहचान पत्र लेकर हमारे कार्यालय में आएं और मुंबई के बाहर रहने वाले विजेता अपने पहचान पत्र की सत्यापित प्रति डाक या मेल से निम्न पते पर भेजें।

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station
Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
Website: swarnimumbai.com

नामः .....

पूरा पताः .....

.....

.....

फोन नं.: .....

ई-मेलः .....

'आई गुड़ी पड़वा'

आई गुड़ी पड़वा आज,
खुशियों का लाया राज।

आँगन में गुड़ी लहराई,
साथ में धूप मुस्काई।

नीम-गुड़ खाएँ हम सब,
मीठा लगे हर एक पल अब।

पतंग उड़े नीले गगन,
हँसता गाता सारा मन।

नया साल आया प्यारा-प्यारा,
खुश रहेंगे हम सब दुबारा।

-सोहम पाल

'नववर्ष की गुड़ी'

ऊँची-ऊँची गुड़ी खड़ी,
हवा संग बातें करती।

कहती बच्चों से हर दिन,
मेहनत से बनाओ अपना दिन।

सच बोलो और हँसते रहो,
मिलकर सबको अपना कहो।

नीम की कड़वाहट भूलो,
गुड़ की मिठास तुम घोलो।

गुड़ी पड़वा का प्यारा त्यौहार,
लाए जीवन में खुशियों की बहार।

- पामी खेर

'नन्हा दीप और अँधेरा जंगल'

एक गाँव के पास घना जंगल था। उस जंगल से लोग डरते थे, क्योंकि रात होते ही वहाँ सब कुछ अँधेरा हो जाता था। उसी गाँव में एक छोटा-सा दीप रहता था। उसका नाम था नन्हा दीप। उसे बहुत दुख होता था कि लोग अँधेरे से डरते हैं।

एक दिन नन्हा दीप बोला, 'मैं जंगल को रोशनी दूँगा, ताकि कोई डरे नहीं।'

माँ दीपक बोली,

'बेटा, जंगल बहुत बड़ा है, तुम अकेले क्या कर पाओगे?'

नन्हा दीप मुस्कराया,

'माँ, छोटी रोशनी भी अँधेरे से लड़ सकती है।'

रात होते ही वह जंगल की ओर चल पड़ा। रास्ते में उसे जुगनू मिले।

जुगनू बोले,

'तुम कहाँ जा रहे हो?'

नन्हा दीप बोला,

'मैं जंगल में रोशनी फैलाने जा रहा हूँ।'

जुगनू खुश हो गए।

उन्होंने कहा, 'हम भी साथ चलेंगे।'

थोड़ी दूर आगे चाँद मामा मिले।

उन्होंने भी अपनी चाँदनी फैला दी।

अब जंगल में अँधेरा कम होने लगा।

पेड़, फूल और रास्ता सब दिखाई देने लगा।

एक हिरण बोला,

'अब हमें डर नहीं लगता।'

एक चिड़िया बोली,

'अब हम रात में भी गा सकते हैं।'

पूरा जंगल रोशनी से भर गया।

लोग भी जंगल से गुजरने लगे।

नन्हा दीप बहुत खुश हुआ।

उसने कहा,

'अगर हम सब मिल जाएँ, तो कोई भी अँधेरा बड़ा नहीं होता।'

उस दिन से जंगल को लोग रोशनी वाला जंगल कहने लगे। ■

गुड़ी पड़वा

नई धूप ने फिर सपनों को जगाया है आज,
गुड़ी ने हर घर में उत्सव सजाया है आज।

बीते कल की धूल को झाड़ दिया हमने,
नए वर्ष ने विश्वास दिलाया है आज।

कड़वे नीम में भी मिठास खोज ली हमने,
जीवन का सही अर्थ बताया है आज।

टूटे हौसलों को सहारा मिला फिर से,
समय ने खुद को दोहराया है आज।

चलो प्रण करें सच के साथ चलने का,
गुड़ी पड़वा ने यही सिखाया है आज।

- राधिका

अरसा बिता

बहुत अरसे से मिल रहे हो
शायद तुम थे कही हम थे कही
यु भुलना तो नही चाहते थे
पर उम्मीद थी नई, थी नई किरण
उसने कहा खत्म करदो ये रण
फिरसे मिलेगी उम्मीद नई
खिलखिलाकर हँसकर बोला मै
ना अब है किसी उम्मीद के वास्ते कि जरूरत
क्युकी बरसो बीते तेरी राह मे
जब ऑख खुली तब जाना
कोई और भी कर रहा है मेरा इंतजार
कुछ इसी तरह ना कर सकता उसको ना उम्मीद
कही बिखर ना जाऐ मोती माला के
डरता हु मै कही गुम ना हो जाऐ मोती माला के
अरसा बिता जालिम तेरे इंतजार को

-दिनेश शेळके

ग़ज़ल

हर घर में जब गुड़ी सजी,
किस्मत भी मुस्कुराने लगी।

पुरानी थकान उतर गई,
नई सुबह गीत गाने लगी।

नीम-गुड़ ने समझा दिया,
जीवन मीठा-कड़वा दोनों सही।

जो टूटे थे कल हालात से,
आज फिर उम्मीद जगाने लगी।

'प्रकृति की भाषा'

पेड़ बोलते नहीं, फिर भी
हमें जीना सिखाते हैं।
धूप में खड़े रहकर भी
छाया देना बताते हैं।

नदियाँ थकती नहीं कभी,
चलते रहना सिखाती हैं।
पत्थरों से टकराकर भी
राह बनाना बताती हैं।
फूल बिना बोले कह जाते,
सुंदर होना सरल होता है।
खुशबू बाँटना ही असली
जीवन का सबसे बड़ा गुण होता है।

पंछी रोज़ नया गीत रचें,
कल की चिंता नहीं करते।
आज में जीना सीखें हम,
तो दुख अपने आप डरते।

प्रकृति की यह शांत किताब,
हर पल हमें समझाती है –
जो झुकना जानता है समय पर,
वही सबसे ऊँचा जाता है।

'धरती का संदेश'

मैं धरती हूँ, सबकी माँ,
तुम मेरे अपने बच्चे हो।
मैंने तुम्हें पहाड़ दिए,
नदियाँ, जंगल, सच्चे हो।

तुमने मेरे आँचल से ही
घर और सपने बुने हैं।
मेरे ही सीने से लेकर
लोहे और सोने चुने हैं।

पर जब तुम मुझे भूल गए,
बस अपने मतलब में खो गए,
हवा बीमार, पानी रोया,
पेड़ कटे और गीत सो गए।

अब भी समय है, लौट आओ,
मुझसे फिर दोस्ती कर लो।
लोभ नहीं, बस प्रेम से
मेरी गोद फिर हरी कर लो।

मैं फिर फूल खिलाऊँगी,
नदियाँ गीत सुनाएँगी,
जब मानव और प्रकृति साथ चलें,
दुनिया स्वर्ग बन जाएगी।

आधुनिक सोच

नया साल सिर्फ कैलेंडर नहीं,
नया सोचने का वादा है।

गुड़ी सिर्फ लकड़ी का डंडा नहीं,
आत्मसम्मान का झंडा है।

जो डर गए थे कल की हार से,
आज उठें विश्वास के भार से।

गुड़ी पड़वा सिखाती है हमको,
खुद पर भरोसा सबसे बड़ा हथियार है।

-सुभाष गांधी

Festive Collection
WELCOME THE FESTIVITIES WITH A BURST OF GLAMOUROUS COLOUR
SHOP NOW
www.festivacollection.com

‘फागुन आयो रे...’

त्योहार एक, लेकिन संस्कृति अनेक रंगों वाली

भारत में होली केवल रंगों का त्योहार नहीं, बल्कि कहीं प्रेम का उत्सव, कहीं शक्ति का प्रदर्शन, कहीं लोकगीतों का पर्व, कहीं शांति और पूजा का दिन। हर राज्य अपनी संस्कृति के अनुसार होली को रंग देता है। यही भारत की खूबसूरती है – एक त्योहार, अनेक रूप।

- जब फाग गूंजती है और ढोलक बोल उठती है
- रंग सिर्फ चेहरे पर नहीं, रिश्तों पर भी
- ठंडाई, गुजिया और स्वाद की बरसात
- जब कैमरा भी रंगों में भीग जाता है
- नाचो, गाओ, हँसो – यही है होली का संदेश

होली आते ही हवा में कुछ बदल जाता है।

सुबह की धूप थोड़ी नरम हो जाती है, गलियों में बच्चों की हँसी गूंजने लगती है और हर चेहरे पर शरारत की हल्की मुस्कान उतर आती है। होली केवल रंगों का त्योहार नहीं, यह दिलों को रंग देने का मौका है। इस दिन दुश्मनी भी दोस्ती में बदल जाती है और शिकायतें गुलाल बनकर उड़ जाती हैं।

गांवों में आज भी फाग गीतों की धुन सुनाई देती है। ‘फागुन आयो रे...’ की तान पर महिलाएँ तालियाँ बजाती हैं और बच्चे पिचकारी लेकर दौड़ते हैं। शहरों में डीजे की धुन है, रंगीन गुब्बारे हैं और छतों से उड़ते गुलाल के बादल हैं।

हर जगह बस एक ही संदेश –

आज बुरा मानो नहीं, होली है!

होली का सबसे सुंदर रंग वह है जो रिश्तों पर चढ़ता है।

पड़ोसी जो साल भर बात नहीं करते, आज एक-दूसरे के दरवाज़े पर गुलाल लेकर पहुँचते हैं।

पुरानी नाराज़गी एक मिठाई की प्लेट में घुल जाती है।

होली हमें सिखाती है कि ज़िंदगी को कभी-कभी हल्के रंगों में देखना भी ज़रूरी है।

होली की खुशबू रसोई से आती है।

गुजिया की मिठास,

मालपुए की नरमी,

ठंडाई की ठंडक –

ये स्वाद नहीं, यादें हैं।

हर घर में कोई न कोई खास रेसिपी होती है, जो साल में सिर्फ होली पर बनती है।

यही तो त्योहार का मज़ा है – रोज़मर्रा से अलग। आज की होली में कैमरा भी साथी बन गया है।

सेल्फी, रील और फोटो में रंगीन चेहरे कैद हो जाते हैं।

पर असली तस्वीर वह होती है जो दिल में बनती है –

माँ की हँसी,

दोस्त की शरारत,

बच्चों की किलकारी।

इन तस्वीरों को कोई फिल्टर नहीं चाहिए।

होली का सबसे बड़ा उपहार है –

खुलकर हँसने की इजाज़त।

न उम्र की चिंता,

न पद की मर्यादा,

न रोज़मर्रा की भागदौड़।
बस रंग, संगीत और अपनापन।

नई पीढ़ी की नई होली
आज की होली नए रंगों के साथ आई है – कलर रन, थीम पार्टी, फैमिली होली,

सोसाइटी उत्सव।
पर भाव वही है –
मिलना, हँसना और खुश रहना।
होली हर पीढ़ी को अपनी तरह से जीने की छूट देती है।

होली क्यों ज़रूरी है?
क्योंकि साल में एक दिन ऐसा चाहिए जबः
चेहरे मासूम हो जाएँ
दिल हल्के हो जाएँ
मन बच्चों जैसा बन जाए
होली हमें याद दिलाती है कि जीवन केवल जिम्मेदारी नहीं, उत्सव भी है।
होली का असली अर्थ है –
रंगों के बहाने रिश्तों को सजाना।
अगर हम हँस पाए,
मिल पाए,
और थोड़ी देर के लिए सब कुछ भूल पाए –
तो यही सबसे सुंदर होली है।
इस होली एक-दूसरे को रंग नहीं,
खुशी लगाइए।

सच कहे तो यही बात होली को मज़ेदार बनाती है कि हर राज्य में होली खेलने का तरीका अलग है। कहीं लाठी चलती है, कहीं फूल उड़ते हैं, कहीं संगीत गूंजता है तो कहीं शांति से रंग लगाया जाता है। यानी एक त्योहार, लेकिन सौ रंगों वाली संस्कृति।

भारत के प्रमुख राज्यों की अनोखी होली ...

☐ उत्तर प्रदेश - लट्ठमार और फूलों की होली
१. बरसाना और नंदगांव में लट्ठमार होली खेली जाती है।
२. महिलाएँ पुरुषों को प्रतीकात्मक लाठियों से मारती हैं और पुरुष ढाल से बचते हैं।
३. वृंदावन और मथुरा में फूलों से होली खेली जाती है।
४. पूरा माहौल राधा-कृष्ण की लीलाओं से जुड़ा होता है।

☐ राजस्थान - राजसी होली
१. जयपुर और उदयपुर में शाही अंदाज़ में होली मनाई जाती है।
२. हाथी, घोड़े, लोक नृत्य और संगीत के साथ उत्सव होता है।
३. यहाँ होली रंगों से ज़्यादा सांस्कृतिक प्रदर्शन बन जाती है।

☐ पंजाब - होला मोहल्ला
१. सिख समुदाय में होली के समय होला मोहल्ला मनाया जाता है।
२. इसमें कुश्ती, घुड़सवारी और युद्ध-कौशल के खेल होते हैं।
३. रंग कम, शौर्य और शक्ति ज़्यादा दिखाई देती है।

☐ बिहार - फगुआ और लोकगीत
होली को फगुआ कहा जाता है।
ढोलक, मंजीरा और अश्लील नहीं बल्कि लोक-गीतों के साथ रंग खेला जाता है।
गांवों में कई दिन तक फाग गीत चलते हैं।

☐ पश्चिम बंगाल - डोल यात्रा
यहाँ होली को डोल पूर्णिमा कहा जाता है।
रवींद्र संगीत और शांत वातावरण में रंग लगाया जाता है।
अधिकतर लोग सफेद कपड़े पहनते हैं।

☐ महाराष्ट्र - रंगपंचमी
यहाँ होली के पाँचवें दिन रंगपंचमी मनाई जाती है।
बच्चे और युवा पिचकारी से रंग खेलते हैं।
पारंपरिक पूरणपोली और ठंडाई बनाई जाती है।

☐ गुजरात - गरबा के साथ होली
यहाँ होली के साथ गरबा और डांडिया होता है। मंदिरों में विशेष पूजा और सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं।

☐ केरल - मंजल कुली

सच कहे तो यही बात होली को मज़ेदार बनाती है कि हर राज्य में होली खेलने का तरीका अलग है। कहीं लाठी चलती है, कहीं फूल उड़ते हैं, कहीं संगीत गूंजता है तो कहीं शांति से रंग लगाया जाता है। यानी एक त्योहार, लेकिन सौ रंगों वाली संस्कृति।

भारत के प्रमुख राज्यों की अनोखी होली ...

☐ उत्तर प्रदेश - लट्ठमार और फूलों की होली

१. बरसाना और नंदगांव में लट्ठमार होली खेली जाती है।
२. महिलाएँ पुरुषों को प्रतीकात्मक लाठियों से मारती हैं और पुरुष ढाल से बचते

होली की जड़ें पुराण, लोककथाओं और कृषि परंपराओं में हैं। यह त्योहार पहले 'आस्था और ऋतु परिवर्तन' का उत्सव था, बाद में 'आनंद और रंग' का।

होलिका दहन की कथा

होली की शुरुआत की सबसे प्रसिद्ध कथा जुड़ी है। राक्षस राजा हिरण्यकश्यप, उसका भक्त पुत्र प्रह्लाद और उसकी बहन होलिका। हिरण्यकश्यप चाहता था कि लोग उसे भगवान मानें, लेकिन प्रह्लाद विष्णु भक्त था। होलिका को आग में न जलने का वरदान था, इसलिए वह प्रह्लाद को गोद में लेकर आग में बैठी। नतीजन होलिका जल गई और प्रह्लाद बच गया। इसी घटना की याद में आज

भी होलिका दहन होता है –मतलब बुराई का अंत, अच्छाई की जीत।

राधा-कृष्ण और रंगों की होली

दूसरी लोकप्रिय परंपरा जुड़ी है कृष्ण और राधा से। कथा कहती है कृष्ण सांवले रंग के थे, राधा गोरी थीं। कृष्ण ने शरारत में राधा पर रंग लगा दिया। यहीं से

☐ रंग खेलने की परंपरा शुरू हुई

☐ प्रेम और हास्य होली का हिस्सा बने, इसीलिए मथुरा-वृंदावन की होली सबसे प्रसिद्ध है।

कृषि और ऋतु परिवर्तन का पर्व

इतिहासकार मानते हैं कि होली रबी फसल पकने की खुशी और सर्दी के अंत और वसंत के आगमन का उत्सव है। पुराने समय में लोग लकड़ी जलाकर रोगाणु नष्ट करते थे। राख को शुभ मानते थे, नए मौसम का स्वागत करते थे। यानी होली धार्मिक के साथ-साथ प्राकृतिक और सामाजिक पर्व भी थी।

संस्कृत ग्रंथों में उल्लेख

होली का उल्लेख मिलता है:
नारद पुराण
भविष्य पुराण
जैमिनी मीमांसा
पहले इसे कहा जाता था:
'होलीका'
'वसंतोत्सव'
'काम महोत्सव'

मतलब यह पर्व कम से कम २००० साल पुराना है।

समाज में बदलाव का दिन

पुराने भारत में होली एक ऐसा दिन था जब
राजा और गरीब बराबर
जाति-भेद कम
गाली-गीत और हास्य स्वीकार्य
मन की भड़ास निकलती थी
इसीलिए होली सिर्फ पूजा नहीं, सामाजिक

तनाव तोड़ने का उत्सव भी थी। होली की शुरुआत किसी एक दिन या व्यक्ति से नहीं हुई। यह बना है, धार्मिक कथा (प्रह्लाद-होलिका), प्रेम कथा (राधा-कृष्ण), प्रकृति उत्सव (वसंत और फसल)। यानी होली, आस्था, प्रेम, आनंद और मौसम होली असली अर्थ में रंग , DJ, फोटो, ठंडाई और मस्ती तक सिमट गई है। लेकिन इसकी आत्मा है डर जलाना (होलिका दहन), रिश्ते जोड़ना (रंग खेलना), जीवन का उत्सव मनाना। ■

- रेखा सिंह

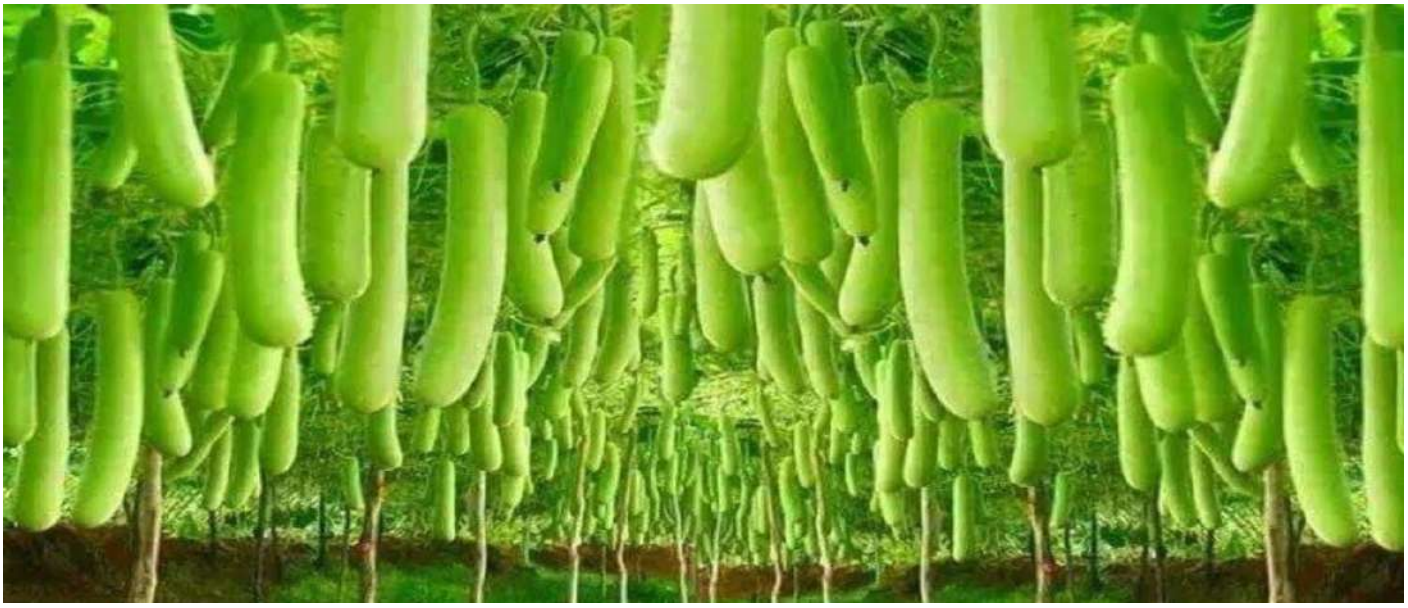

लौकी की खेती

भारतीय कृषि परंपरा में लौकी केवल एक साधारण सब्ज़ी नहीं, बल्कि पोषण, स्वास्थ्य और आय का भरोसेमंद स्रोत रही है। बदलते समय में जब किसान ऐसी फसलों की तलाश में हैं जो कम लागत में अधिक उत्पादन दें और बाज़ार में लगातार माँग बनी रहे, तब लौकी की खेती एक सफल विकल्प के रूप में सामने आती है। लौकी की विशेषता यह है कि यह कम समय में तैयार होने वाली फसल है, जिसे लगभग हर प्रकार की जलवायु और मिट्टी में उगाया जा सकता है। इसकी खेती में जोखिम कम होता है और सही तकनीक अपनाने पर किसान साल में दो से तीन बार अच्छी पैदावार ले सकता है। बढ़ती स्वास्थ्य जागरूकता के कारण लौकी की माँग शहरी और ग्रामीण दोनों बाज़ारों में लगातार बढ़ रही है।

आज लौकी सिर्फ सब्ज़ी मंडी तक सीमित नहीं रही, बल्कि आयुर्वेद, डायट फूड और औषधीय उपयोगों के कारण इसका महत्व और भी बढ़ गया है। यही कारण है कि लौकी की खेती अब परंपरागत कृषि से निकलकर व्यावसायिक कृषि का रूप ले रही है। यदि किसान वैज्ञानिक विधि से बीज चयन, खाद प्रबंधन, सिंचाई और रोग नियंत्रण पर ध्यान दें, तो लौकी की खेती कम समय में अच्छा मुनाफ़ा देने वाली फसल बन सकती है। यह फसल न केवल किसान की आमदनी बढ़ाती है, बल्कि समाज को स्वस्थ भोजन भी प्रदान करती है

मौसम की समझः सही समय, सही फैसला

लौकी गर्म जलवायु की फसल है। मार्च-अप्रैल में बोई गई लौकी मई-जून में फल देना शुरू कर देती है। यही वजह है कि इसे ज़ायद सीजन की सबसे भरोसेमंद सब्ज़ियों में गिना जाता है। इस मौसम में न तो अत्यधिक ठंड होती है और न ही भारी बारिश, जिससे पौधों की बढ़वार बेहतर होती है। किसान अगर समय पर बोआई करे, तो ४५-५० दिनों में पहली तुड़ाई शुरू हो जाती है और यह सिलसिला कई हफ्तों तक चलता रहता है।

मिट्टी और खेत की तैयारीः खेती की नींव

लौकी के लिए दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त मानी जाती है। ऐसी मिट्टी जिसमें पानी रुकता न हो और हवा का संचार बना रहे। खेत की २-३ बार जुताई कर मिट्टी को भुरभुरा बनाना जरूरी है। इसके बाद गोबर की सड़ी हुई खाद मिलाने से मिट्टी में जीवांश बढ़ता है और पौधे मजबूत बनते हैं। किसान अगर शुरू में ही खेत की तैयारी सही कर ले, तो बाद में रोग और कीट का खतरा काफी कम हो जाता है।

गाँवों में लौकी को अक्सर 'सस्ती सब्ज़ी' कहकर नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है। लेकिन बदलते समय में यही लौकी किसानों के लिए तेज़ कमाई वाली नकदी फसल बन चुकी है। कम लागत, कम समय और लगातार तुड़ाई – यही तीन कारण हैं जो लौकी की खेती को छोटे और मध्यम किसानों के लिए लाभकारी बनाते हैं। आज जब मौसम अनिश्चित है और पारंपरिक फसलें जोखिम भरी हो चुकी हैं, लौकी एक ऐसी खेती है जो गर्मी में भी टिकती है और बाज़ार में हमेशा मांग

बीज से बेल तकः मेहनत का सफ़र

लौकी की बोआई गड्ढों में की जाती है। हर गड्ढे में दो या तीन बीज डालकर बाद में एक स्वस्थ पौधा रखा जाता है। कुछ ही दिनों में मिट्टी से नन्ही बेल बाहर निकल आती है और फिर धीरे-धीरे वह मचान या सहारे की ओर बढ़ने लगती है। मचान पर चढ़ी लौकी न केवल ज़मीन से सुरक्षित रहती है, बल्कि फल सीधे और साफ़ निकलते हैं। यही वजह है कि अनुभवी किसान बेल को ऊपर चढ़ाने की तकनीक अपनाते हैं।

पानी और खादः संतुलन ही सफलता की कुंजी

लौकी को नियमित पानी चाहिए, लेकिन ज्यादा पानी उसकी जड़ों को नुकसान पहुँचा सकता है। गर्मी के दिनों में ५-७ दिन के अंतर से सिंचाई पर्याप्त होती है। फूल और फल आने के समय नमी का विशेष ध्यान रखना पड़ता है, क्योंकि इसी समय पौधा सबसे संवेदनशील होता है।

खाद के रूप में गोबर की खाद के साथ नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटाश का संतुलित उपयोग पौधों को ताकत देता है। यह केवल उत्पादन नहीं बढ़ाता, बल्कि फलों की गुणवत्ता भी सुधारता है।

कीट और रोगः सबसे बड़ी चुनौती

लौकी की खेती में सबसे बड़ी परेशानी फल मक्खी और पत्तियों पर लगने वाले रोग हैं। अगर समय रहते रोकथाम न की जाए तो पूरी फसल बर्बाद हो सकती है। इसलिए नीम आधारित दवाओं का छिड़काव और खेत की नियमित निगरानी जरूरी है।

यह खेती केवल बोआई तक सीमित नहीं

है, बल्कि रोज़ निरीक्षण मांगती है। किसान को पौधों से उतना ही जुड़ा रहना पड़ता है, जितना अपने बच्चों से।

तुड़ाईः मुनाफ़े की शुरुआत

लौकी की सबसे खास बात यह है कि इसकी तुड़ाई बार-बार होती है। एक बार फल आना शुरू हो जाए तो हर दो या तीन दिन में ताजा लौकी बाज़ार भेजी जा सकती है। ज्यादा बड़ा फल छोड़ देने से उसकी गुणवत्ता गिर जाती है और दाम भी कम मिलते हैं। यही वह चरण है जहाँ किसान को समझदारी दिखानी होती है – समय पर तुड़ाई ही असली कमाई की कुंजी है।

बाज़ार और आमदनी

लौकी की मांग हर मौसम में बनी रहती है। शहरों और कस्बों की सब्ज़ी मंडियों में यह रोज़ बिकने वाली सब्ज़ी है। एक एकड़ में सही देखभाल से ८० से १२० क्विंटल तक उत्पादन संभव है। कीमतें मौसम और क्षेत्र के अनुसार बदलती हैं, लेकिन कुल मिलाकर यह खेती किसान को अच्छी आमदनी दे सकती है।

कम समय में तैयार होने के कारण किसान साल में दो से तीन बार लौकी उगा सकता है, जिससे उसकी आय स्थिर बनी रहती है।

लौकी और बदलती खेती

आज की खेती केवल परंपरा पर नहीं, बल्कि योजना और तकनीक पर निर्भर है। ड्रिप सिंचाई, मल्चिंग और उन्नत बीजों ने लौकी की खेती को और अधिक लाभकारी बना दिया है। यह फसल छोटे किसानों के लिए जोखिम कम और फायदा ज्यादा देने वाली साबित हो रही है।

लौकी की खेती यह सिखाती है कि खेती का मतलब केवल अनाज उगाना नहीं, बल्कि बाज़ार की ज़रूरत को समझना है। जो किसान समय, पानी और तकनीक का सही संतुलन बनाता है, उसके लिए लौकी साधारण सब्ज़ी नहीं, बल्कि भरोसेमंद आमदनी का साधन बन जाती है। आज लौकी खेत में नहीं, किसान के भविष्य में उग रही है। ■

लेखकों से निवेदन

मौलिक तथा अप्रकाशित-अप्रसारित रचनाएँ ही भेजें। रचना फुलस्केप कागज पर साफ लिखी हुई अथवा शुद्ध टंकित की हुई मूल प्रति भेजें। ज्यादा लंबी रचना न भेजें। सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, साहित्यक, स्वास्थ्य, बैंक व व्यवसायिक से संबंधित रचनाएँ आप भेज सकते हैं। प्रत्येक रचना पर शीर्षक, लेखक का नाम, पता एवं दूरभाष संख्या अवश्य लिखें, साथ ही लेखक परिचय एवं फोटो भी भेजें।

आप अपनी रचना ई-मेल द्वारा भेज सकते हैं। रचना यदि डाक द्वारा भेज रहे हैं तो डाक टिकट लगा लिफाफा साथ होने पर ही अस्वीकृत रचनाएँ वापस भेजी जा सकती हैं। अतः रचना की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें। स्वीकृत व प्रकाशित रचना का ही उचित भुगतान किया जायेगा।

किसी विशेष अवसर पर आधारित आलेख को कृपया उस अवसर से कम-से-कम एक या दो माह पूर्व भेजें, ताकि समय रहते उसे प्रकाशन-योजना में शामिल किया जा सके। रचना भेजने के बाद कृपया दूरभाष द्वारा जानकारी न लें। रचनाओं का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय होगा।

Add: A-102, A-1 Wing, Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane, PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
Website:WWW.swarnimumbai.com

www.swarnimumbai.com

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

ADVERTISEMENT TARRIF

No.	Page	Colour	Rate
1.	Last Cover full page	Colour	30,000/-
2.	Back inside full page	Colour	25,000/-
3.	Inside full page	Colour	20,000/-
4.	Inside Half page	Colour	15,000/-
5.	Inside Quater page	Colour	07,000/-
6.	Complimenty Adv.	Colour	03,000/-
7.	Bottam Patti	Colour	2500/-

6 Months Adv. 20% Discount
1 Year Adv. 50% Discount

Mechanical Data: **Size of page:** **290mm x 230mm**

PLEASE SEND YOUR RELEASE ORDER ALONG WITH ART WORK IN PDF & CDR FORMAT

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane, PIN: 421103, Maharashtra. Phone: 9082391833, 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
Website:WWW.swarnimumbai.com

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

HAPPY

Gudi Padwa